एक पादरी के कर्तव्य

कलीसिया के अगुवों और उनकी पत्नियों के लिए परमेश्वर द्वारा निर्धारित कार्यभार का विवरण

"और अपनी सेवकाई के सभी कर्तव्य को पूरा कर"
2 तीमुथियुस 4:5

रेव. डॉ. जेरी श्मोयेर

© 2020

लेखक की जीवनी

रेव डॉ. जेरी श्मोयर डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी से स्नातक हैं, जहां उन्होंने 1975 में मास्टर डिग्री और 2006 में डॉक्टर्स की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1981 से डोयलेस्टाउन, पीए में मेन स्ट्रीट बैपटिस्ट चर्च में पादरी के रूप में काम कीया है। वह 6 बच्चों के पिता और 12 पोते-पोतियों के दादा/नाना है । उनकी शादी नैन्सी से हुई है, जो 34 साल से एक नर्स हैं। एक चर्च की पासबानी करने के अलावा वह विवाह, परिवार और युवा सम्मेलनों का नेतृत्व करता है, परामर्श में बहुत सक्रिय है और युवा पादरियों के लिए परामर्शदाता है। वे 2006 से भारत में पादरियों की सेवकाई में शामिल हैं। उसके साथ jerry@schmoyer.net पर संपर्क कीया जा सकता है।

<u>एक पादरी के कर्तव्य</u>

I. स्वयं के प्रति कर्तव्य

क. शारीरिक कर्तव्य

ख. आध्यात्मिक कर्तव्य

ग. बौद्धिक कर्तव्य

घ. भावनात्मक कर्तव्य

II. अपने परमेश्वर के प्रति कर्तव्य

क. नम्रतापूर्वक परमेश्वर की सेवा करना

ख. नियमित रूप से परमेश्वर के साथ जुड़ना

ग . परमेश्वर को गहराई से जानना

घ. परमेश्वर के लिए विश्वासपूर्वक जीना

III.अपने परिवार के प्रति कर्तव्य

क. अपनी पत्नी के प्रति कर्तव्य

ख. अपने बच्चों के लिए कर्तव्य

IV.अपनी कलीसिया के प्रति कर्तव्य

क. भेड़ों को चराने का कर्तव्य

ख. भेड़ों की रक्षा करने का कर्तव्य

ग. भेड़ों को खिलाने/सिखाने का कर्तव्य

घ. भेड़ों की सेवा करने का कर्तव्य

ङ. भेड़ों की अगुवाई करने का कर्तव्य

1. कलीसिया के अगुवे

2. कलीसिया का विवरण

3. कलीसिया का उद्देश्य

4. कलीसिया का संगठन

5. कलीसिया के अध्यादेश

6. कलीसिया की सेवाएं

7. कलीसिया की सेवकाईए

V. कलीसिया से बाहर लोगों के प्रति कर्तव्य

क. अपनी कलीसिया को विकसित करने का कर्तव्य

ख. नई कलिसियाएं शुरू करने का कर्तव्य

VI. अन्य पादरियों के प्रति कर्तव्य

VII. पादरियों की पत्नियों के कर्तव्य

क. परमेश्वर से उसका संबंध

ख. स्वयं से उसका संबंध

ग . उसका अपने पति से संबंध

घ . उसका अपने बच्चों और घर से संबंध

ङ. चर्च के लोगों से उसका रिश्ता

च. चर्च के बाहर के लोगों से उसका संबंध

मेरी पत्नी की तरफ से कुछ शब्द

VIII. पादरियों के प्रति भेड़ के कर्तव्य

परिशिष्ट 1: लक्ष्य निर्धारित करना

परिशिष्ट 2: आध्यात्मिक वरदान

प्रस्तावना

जब किसी को नई नौकरी पर रखा जाता है, तो कर्मचारी द्वारा पूरा कीये जाने की उम्मीद कीये गए कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझाने के लिए नौकरी का विवरण दिया जाता है। यह तय करना एक नए कर्मचारी का काम नहीं है कि वह क्या करना चाहता है और फिर उसके बाद उसे करना है। उस से उम्मीद की जाती है कि वह नौकरी विवरण की आवश्यकताओं को पूरा करे ।

यही पादरियों और कलिसीयाओं के अगुवाओं की भी सचाई है। हम अपनी नौकरी का विवरण खुद नहीं लिखते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने इसे हमारे लिए पहले से ही लिख रखा है। किसी और के लिए काम करने वाले किसी व्यक्ति की तरह, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम जानते हैं कि हमसे क्या हासिल करने की उम्मीद की जाती है और फिर इसे करें - ना तो इससे अधिक और ना ही इससे कम। क्या आप जानते हैं कि कलीसिया के एक अगुवा या पासबान के रूप में परमेश्वर आपसे क्या उम्मीद करता है? क्या आप वो सब कुछ कर रहे हैं जिसकी उसे आवश्यकता है, ना तो उससे अधिक और ना ही उससे कम?

जब कोई कर्मचारीअच्छा काम करता है जिसकी उससे उम्मीद की जाती है, तो आमतौर पर उसके काम के लिए उसकी प्रशंसा की जाती है। कलीसिया के अगुवे परमेश्वर को यह कहते हुए सुनना चाहते हैं, "धन्य, अच्छे और विश्वासयोग्य दास" (मत्ती 25:21-23)। पौलुस की तरह, हम अपनी सेवकाई के अंत तक पहुचना चाहते हैं और यह कहने में सक्षम होना चाहते हैं, "मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूं, मैं दौड़ पूरी कर चुका हूं, मैंने विश्वास की रक्षा की है" (2 तीमुथियुस 4:7-8)।

इस पुस्तक का उद्देश्य उन लोगों के लिए परमेश्वर के कर्तव्यों को समझने में आपकी सहायता करना है जो पादरी हैं और अगुवे हैं। मेरी पुस्तक, "परमेश्वर पासबानो /सेवकों से क्या उम्मीद करता है" में, मैं इस बात पर ध्यान केंद्रित करता हूं कि परमेश्वर पादरियों से क्या करने और बनने की उम्मीद करता है। इस पुस्तक "पादरियों के कर्तव्य" का उद्देश्य, मुख्य रूप से इस बात पर है कि हम उन कार्यों को कैसे पूरा करते हैं। हमें पादरियों और अगुवों के रूप में अपने कार्य विवरण को और परमेश्वर द्वारा हमारे लिए ठहराए गए कर्तव्यों को समझना चाहिए। परमेश्वर आपको आशीश दे और आपको सिखाए जैसा आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं, और जो यह पुस्तक सिखाती है उसे लागू करते हैं।

पादरियों के रूप में अपने कर्तव्यों को जानना और पूरा करना महत्वपूर्ण है। हालाँकि ये कर्तव्य केवल समाप्ति के साधन हैं, नाकि अपने आप में एक समाप्ति। हमारे और उनके लिए जिनकी हम अगुवाई करते हैं अंतिम लक्ष्य है यीशु के चेले बनना (इफिसियों 4:11-12) और हम जो कुछ भी सोचते और करते हैं उसमें मसीह के समान बनना (1 कुरिन्थियों 11:1; फिलिप्पियों 2:5-11)

<u>परिचय</u>

एक पासबन/पादरी या मसीही अगुवा होना एक सम्मान और विशेषाधिकार की बात है। पौलुस कहता है कि यह एक नेक कार्य है (1 तीमुथियुस 3:1)। यह एक अच्छा , सम्मानजनक रुतबा है। हालाँकि, इसे बहुत सही और अच्छी तरह से निभाया जाना चाहिए। इस पुस्तक का उद्देश्य, एक पासबन या अगुवा के रूप में आपकी भूमिका और जिम्मेदारियों को समझने में,आपकी सहायता करना है।

एक पासबान एक परिवार के पिता की तरह होता है। कलीसिया विश्वासियों का एक बड़ा परिवार है। हम सब मसीह में भाई और बहन हैं (रोमियों 12:5; मत्ती 12:50)। परमेश्वर हमारा पिता है, लेकिन चूंकि वह हमारे साथ पृथ्वी पर नहीं है, इसलिए वह किसी को आपना प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त करता है। यह व्यक्ति एक पासबान होता है। एक पासबान की भूमिका होती है, उसका अपनी कलीसिया के लोगों के लिए परमेश्वर (या यीशु) का उदाहरण बनना, उनकी अगुवाई करना और उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा यीशु हमारे साथ करता है। इसलिए, उसकी सबसे पहली चिंता का विषय उसका आपना ही परिवार होता है; उसे अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति मसीह-समान सुभाव के उदाहरण द्वारा नेतृत्व करना है (1 तीमुथियुस 3:4-5) और फिर इस मसीह-केंद्रित रवैये को अपनी कलीसिया तक ले जाना है। पासबानो को परमेश्वर के परिवार की देखभाल करनी होती है और उन कर्तव्यों को पूरा करना होता है जो यीशु स्वयं करता यदि वह पृथ्वी पर होता। वह हमारे माध्यम से काम करता है।

एक पासबान भेड़ों के चरवाहे के समान होता है। पतरस आज्ञा देता है: "परमेश्वर के उस झुंड की जो तेरी देखरेख में है, रखवाला बन और अध्यक्ष के रूप में सेवा कर ;, इसलिये नहीं कि तुम्हें अवश्य करना चाहिए ,पर इसलिये कि जैसा परमेश्वर चाहता है, वैसा ही तुम इसके चाहवान हो; पैसे का लालची नहीं, बल्कि सेवा करने के लिए उत्सुक; जो तुझे सौंपे गए हैं उन पर अधिकार रखने के लिए नहीं , पर झुंड के लिये आदर्श ठहरने को " (1 पतरस 5:2-3)। हमारा कर्तव्य, एक चरवाहे की तरह, झुंड की अगुवाई करना, खिलाना, पहरा देना और हर तरह से आवश्यक देखभाल करना है। यीशु मुख्य चरवाहा है (1 पतरस 5:4); हम उसके <u>अधीन-चरवाहे</u> हैं, उसकी भेड़ों की देखभाल करते हैं जैसे वह निर्देश देता है। इसलिए, हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि उसकी भेड़ों के चरवाहों के रूप में हमारे कर्तव्य क्या हैं।

एक पादरी दूसरों के लिए यीशु के समान होता है। हमें उसके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए और दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह हमारे साथ व्यवहार करता है। हमें उनकी सेवा उसी प्रकार करनी है जैसे वह हमारी सेवा करता है (1 कुरिन्थियों 11:1)।

आप के लिए आपने कर्तव्यों को अधिक आसानी से समझने के लिए, यह पुस्तक उनको कुछ इस रूप में विभाजित करती है, **जैसे स्वयं के प्रति कर्तव्य**,- **परमेश्वर के प्रति कर्तव्य**,- **परिवार के प्रति कर्तव्य** -,**कलीसिया के प्रति कर्तव्य और कलीसिया से बाहर लोगों के प्रति कर्तव्य**। हम पहले स्वयं के प्रति कर्तव्यों के साथ शुरू करेंगे, क्योंकि यदि हम आध्यात्मिक, भावनात्मक, बौद्धिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं हैं, तो हमें परमेश्वर की चाहत अनुसार बनने और कार्य करने में बाधा डालने वाली कई कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं ।

पहली बात यह है, कल्पना कीजिए कि एक बैंक है जो हर सुबह आपके खाते में 1,440 रूपये जमा दिखाता है। यह दिन-प्रतिदिन का कोई उपलब्ध बकाया नहीं दिखाता है। हर शाम बैंक उस शेष राशि का जो भी हिस्सा आप दिन के दौरा खर्च नहीं करते है, उसे शुन्य कर देता है। तुम क्या करोगे? निश्चित

रूप से सारा पैसा निकाल लेंगें !!!! हम में से प्रत्येक के पास ऐसा बैंक है। इसका बैंक का नाम टाइम बैंक है। हर सुबह, यह आपको 1,440 मिनट का उपलब्ध समय की राशी देता है। हर रात को यह इसे हटा देता है, इसमें से जो कुछ भी आप ने अच्छे उद्देश्य के लिए निवेश नहीं कीया होता है, उसे **"खो गया"** के रूप में लिखता है। यह अगले दिन के लिए कोई उपलध्ध बकाया नहीं रखता/दिखाता है। आपको अपने उपलब्ध मात्रा से अधिक खर्च करने की भी कोई अनुमति नहीं देता है। हर दिन आपके लिए एक नया खाता खोला जाता है। हर रात यह दिन का हिस्सा जो उपयोग नहीं कीया गया है उसको हटा देता है। यदि आप दिन की उपलब्ध जमा राशि का उपयोग करने में विफल रहते हैं, तो नुकसान आपका है। इसके लिए कोई वापसी करने /लौटने की परिक्रिया नहीं है। आने वाले "कल" की निर्धारित मात्रा का कुछ हिस्सा पहले खर्चने या उसमे से निकलने का भी कोई प्रावधान नहीं है। आपको आज की जमा राशि को आज ही खर्चना होगा। इसे ऐसे निवेश करें ताकि स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और उद्देश्य को पूरा करने के लिए इसका अधिकतम लाभ उठाया जा सके! घड़ी चल रही है। आज का अधिकतम लाभ उठाएं। आज का दिन एक तोहफा है। इसी वजह से यह वर्तमान कहलाता है!!

समय हमारा सबसे मूल्यवान संसाधन है, यहाँ तक कि धन से भी कहीं अधिक बढ़ कर है । अगर हम समय को समझदारी से नहीं संभाल सकते, तो हम अपने जीवन में किसी और चीज को ठीक से नहीं संभाल पाएंगे। आज हमारे समय पर इतनी मांगें हैं कि हम जो सोचते हैं वह करना मुश्किल हो जाता है। हमारे सभी 'मेहनत-कम करने वाले ' उपकरणों के बावजूद, हम पहले से कहीं ज्यादा व्यस्त हो चुके हैं।

कितने लोग चाहते हैं कि उनके पास अधिक समय होता ? क्या आप चाहते हैं कि आपके पास भक्ति के लिए अधिक समय होता, काम के लिए समय होता,परिवार के लिए अधिक समय होता, स्वयं के लिए अधिक समय होता ? हमें हमेशा अधिक समय चाहिए। फिर भी, हम जानते हैं कि परमेश्वर हमें 25 घंटे का काम 24 घंटे में करने के लिए नहीं कहता है। जितना समय हमारे पास है वह हमे उससे अधिक काम नहीं देता है। हमारे पास एक दिन में उतना ही समय है जितना यीशु के पास काम करने के लिए था और उसने वो काम किया था और उसको कभी भी कुछ भी जल्दबाजी में करते नहीं देखा गया था । बस तरीका है की हम केवल उन चीजों को ढूंढे और करें जो परमेश्वर हमसे कराना चाहता है और इससे अधिक कुछ भी नहीं। तब हमें किसी काम को जल्दबाजी में करने की आवश्यकता महसूस नहीं होगी ।

फिर भी, ऐसा लगता है कि सभी को हमारे समय की आवश्यकता है: साथीयों को,बच्चों को, विस्तारित परिवार को और मित्रों को,और निश्चित रूप से हमारी सेवकाई को। अपनी प्राथमिकताओं की सही से पहचान करना सीखना बहुत महत्वपूर्ण है। जब कोई नई नौकरी लेता है, तो उसे ना केवल कर्तव्यों की एक सूची दी जाती है, बल्कि यह भी निर्देश दिया जाता है कि क्या सबसे महत्वपूर्ण हैं: उसे प्राथमिकताएं भी दी जाती हैं। और इसी तरह हमें भी। यहाँ उचित प्राथमिकताओं के लिए एक निर्देश है:

1. स्वयं- अपना बुनियादी रखरखाव। अगर हम अपना ख्याल नहीं रखेंगे तो हमारे पास दूसरों को देने के लिए कुछ भी नहीं होगा। इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपना अधिकांश समय खुद पर व्यतीत करें। इसका मतलब है कि हम सुनिश्चित करें कि हमने आपने खुद के बुनियादी रखरखाव को जिमेदारी में शामिल कर लिया है। यह आपकी कार की देखभाल करने जैसा है। आप सबसे पहले इसमें तेल डालेंगे नहीं तो आप कहीं भी नहीं जा पाएंगे। हालांकि, आप पूरा दिन तेल डालने में नहीं लगाते हैं - आप ऐसा करते हैं और फिर अन्य चीजों पर लग जाते हैं। इसी तरह, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम प्रत्येक दिन की शुरुआत में आत्मिक रूप से भरे हुए हों। (गलातियों 2:20; 5:22-26)। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम भावनात्मक रूप से, शारीरक रूप में स्वस्थ हैं और साथ ही अध्यात्मिक रूप में भी बढ़ते

हैं (मरकुस 12:33)। यदि हम भय, क्रोध, वासना, अभिमान या किसी अन्य नकारात्मक भावना द्वारा नियंत्रित होते हैं तो हम अपने आसपास के लोगों की सेवा वैसे नहीं कर पाएंगे जैसे हमें करनी चाहिए।

हमें शारीरिक रूप से अपना ध्यान रखने की भी आवश्यकता है (1 राजा 19)। स्वस्थ शरीर उचित व्यायाम, भोजन, नींद और विश्राम से आता है। हमारा स्वास्थ्य जो हम है उसको और जो हम करते है सभी को प्रभावित करता है। इस प्रकार हमारी पहली प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि हम स्वस्थ हैं और आध्यात्मिक, भावनात्मक और शारीरिक रूप से बढ़ रहे हैं। यीशु की भी यही प्राथमिकताएँ थीं। यही कारण है कि वह प्रार्थना और ध्यान/मनन के लिए अकेले समय बिताने के लिए भीड़ से, और यहां तक कि अपने स्वयं के शिष्यों से भी दूर चला जाता था। वह जानता था कि उसे अपनी जरूरतों का ख्याल खुद रखना होगा नहीं तो वह दूसरों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं होगा। इसका मतलब यह नहीं है कि वह खुद में ही को लिप्ता रहा या सिर्फ अपने लिए ही जिया, क्योकि वह जानता था कि बुनियादी रखरखाव पहले किया जाना चाहिए । यह (आपने आप) में वह जगह है जहां से हम अक्सर अन्य चीजों के लिए समय की चोरी करतें हैं, लेकिन इसका नतीजा हमें जल्द ही भुगतना पड़ता है।

2. परमेश्वर - जब हमारे बुनियादी रखरखाव का ध्यान रखा जाता है, फिर जो हमारी पहली प्राथमिकता हो सकती है, वह है परमेश्वर। उसको छोड़ अन्य जिसे भी पहल दी जाए वह एक मूर्ति ही होगा। हमारे पास भक्ति, आराधना, बाइबल सीखने, आध्यात्मिक विकास करने और जिस तरह से वह चाहता है उसी तरह से उसकी सेवा करने के लिए समय होना चाहिए। मरियम और मार्था को याद करें ? यीशु ने मरियम की सराहना की कि उसने आध्यात्मिक बातों को दुसरे कार्यों और दैनिक सरगर्मीयों से पहल दी है।

3. साथी - हमारी तीसरी प्राथमिकता हमारा/हमारी साथी है। वे बच्चों, नौकरी या किसी भी अन्य जन से पहल पर रखे जाने की अहमियत रखता/रखती है (1 तीमुथियुस 3:4-5)। इस विषय पर अधिकारियों का कहना है कि पति और पत्नी को वास्तविकता में जुड़ने में सप्ताह के 15 घंटे लगते हैं। ये घंटे एक-दूसरे पर और आपसी रिश्ते पर ध्यान केंद्रित करने में व्यतीत होते हैं, ना कि केवल एक घर या कमरे में एक साथ रहने या काम करने में समय व्यतीत करने में।

4. बच्चे - हमारे बच्चे, हमारी बाहरी सरगर्मियों , शौक या काम से पहले आते हैं । कोई भी कभी भी अपनी मृत्युशैया पर यह कहते हुए झूठ नहीं बोलता है कि काश वे अपने कार्यकाल पर अधिक समय व्यतीत कर सकते होते और अपने परिवार पर कम! परमेश्वर पादरियों और अगुवों से उम्मीद करता है कि वे अपने साथी और बच्चों को अपनी सेवकाई से भी पहले रखें (1 तीमुथियुस 3:4-5)।

5. सेवकाई , नौकरी- हमारी अगली प्राथमिकता हमारी सेवकाई का काम है। कार्य हमारे जीवन में एक निश्चित प्राथमिकता है, क्योंकि परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा था कि उन्हें इस पृथ्वी पर जीवन बसर करने के लिए काम करना होगा (उत्पत्ति 3:19)। नीतिवचन 31 में स्त्री उस आशीष और आनंद का उदाहरण है जो काम करने से मिलते है। यह स्वयं की देखभाल करने वाले सुख से पहले आता है, लेकिन बच्चों से, साथी से या परमेश्वर से पहले नहीं।

6. आत्म-सुख-भोग - केवल अपनी ख़ुशी और आनंद के लिए किए जाने वाले काम करने में कुछ भी भुराई नहीं है। आपने आसपास की दुनिया का आनंद लेना वैध है। परमेश्वर ने इसे हमारे आनंद के लिए ही बनाया है। जरूरी नहीं कि हम हमेशा काम करते रहें। उसने हमें सात में से एक दिन हमे आराम और तरो-तजा होने के लिए लेने खर्च करने लिए कहा है । उसने   त्योहारों के समय और विश्राम के समयों की भी स्थापना की है । उदाहरण के लिए, हर सात साल में एक साल मजदूर लोगों, जानवरों और जमीन के लिए विश्राम करना था। परमेश्वर जानता है कि यह महत्वपूर्ण है। एक धनुष सबसे अच्छा काम

तब करता है यदि वह हर समय तना हुआ नही होता, उसे जरूरत पड़ने तक आराम करने की आवश्यकता होती है। हमार भी यही सच है।

आपने समय का उपयोग करना आपने पैसे का उपयोग करने के समान है। हमारे पास दोनों केवल एक सीमित मात्रा में ही होते है, और इनका दुरूपयोग हमें पछतावे की ओर ले जाएगा। इनके अधिकांश को लाभकारी उद्देश्यों के लिए खर्च किया जाना जरूरी है। कुछ भविष्य के लाभ के लिए निवेश किया जाना जरूरी है। हम इसे तब करते हैं, जब हम काम करने से हट जाते हैं, आराम करते हैं, ऐसी चीजें करते हैं जो हमारे लिए सुख-संतोष और तरो-ताजगी के लिए होती हैं। यह भविष्य में एक निवेश है क्योंकि यह हमें गति देता है और हमें आश्वासन देता है कि भविष्य में संसाधन उपलब्ध होंगे।

अपनी प्राथमिकताओं को परमेश्वर की प्राथमिकताओं के अनुरूप बनाने का इरादा करें। समझने के लिए कि ये क्या हैं, और उस्की अगुवाई का पालन करने के लिए संकल्प लेने की शक्ति के लिए प्रार्थना करें। अपनी प्राथमिकताओं को ठीक ठहराना बहुत अच्छा लगता है, लेकिन यह तब खटकता है , जब इसमें कुछ चीजों को "नहीं" कहना पड़ता है जो मुश्किल होता है: जैसे कि अधिक काम, स्वयं, आलसीपन, दूसरों को लुभाने के लिए काम करना, लालच, आदि को । समय हमारी सबसे मूल्यवान संपत्ति है और इसकी सही कीमत इसे परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए आपने कार्यक्रम के लिए देने में नजर आती है । यह कीया जाना चाहिए क्योंकि समय का उपयोग केवल एक बार ही कीया जा सकता है - इसलिए कृपया इसका बुद्धिमानी से उपयोग करें ताकि आप उन कर्तव्यों का पालन कर सकें जो परमेश्वर ने आपके द्वारा कीये जाने के लिए रखे हैं।

इसे लागु करने में प्रशन : *एक सूची लिखें कि परमेश्वर क्या चाहता है कि आप अपने जीवन में बदलाव करें ताकि आप उसकी प्राथमिकताओं के साथ आपना तालमेल बेहतर बिठा सकें। परमेश्वर क्या चाहता है कि आप और अधिक करें? वह क्या चाहता है कि जो आप कम से कम करें ताकि आपके पास वह जो चाहता है उसे अधिक करने के लिए समय निकल सके ?*

I. स्वयं के प्रति कर्तव्य

जैसा कि पहले कहा गया है, हमें अपना ख्याल रखना चाहिए ताकि हम परमेश्वर और दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर सकें। यदि हमारा मानसिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक या शारीरिक स्वास्थ्य वह नहीं है जो होना चाहिए, तो हम जो कुछ भी परमेश्वर और दूसरों के लिए करते हैं वह सब कुछ नकारात्मिक रूप से प्रभावित होगा। हमें गर्व के साथ अपने ऊपर ध्यान केंद्रित नहीं करना है, बल्कि परमेश्वर जो हमें देता है उसके अच्छे भण्डारी होना चाहिए ताकि हम उसके लिए अपनी सेवा में अधिक प्रभावी हो सकें। एक चरवाहे को मजबूत और स्वस्थ होना चाहिए ताकि वह अपनी भेड़ों का मार्गदर्शन करने और उनकी रक्षा करने के लिए सतर्क रह सके। दूसरों के प्रति हमारा कर्तव्य स्वयं के प्रति हमारे कर्तव्य को पूरा करने के साथ शुरू होता है (1 पतरस 4:17)।

क. शारीरिक कर्तव्य

परमेश्वर ने हमें एक जीवन दिया है और यह जीवन जीने के लिए एक शरीर दिया है। जबकि, परमेश्वर की इच्छा से अधिक समय तक इस धरती पर रहने की हमारी कोई इच्छा नहीं है, और ना ही यह कि हमें खराब स्वास्थ्य के कारण समय से पहले चले जाना चाहिए इस की कोई इच्छा है । हम अपने शरीर और स्वास्थ्य के अच्छे भण्डारी बनकर यहां अपने समय की गुणवत्ता और मात्रा को प्रभावित कर सकते हैं। स्वस्थ भोजन खाना जरूरी है। पर्याप्त आराम और नींद लेना भी जरूरी है। व्यायाम महत्वपूर्ण है, वैकल्पिक नहीं।

बेशक व्यायाम में समय लगता है लेकिन परिणामस्वरूप इससे बेहतर स्वास्थ्य और ऊर्जा प्राप्त होती है: हम पूरा दिन अधिक कुशलता से कार्य करते हैं और रात में बेहतर नींद लेते हैं; तो कम बीमार पड़ते हैं, जिससे डॉक्टरों के पास ना जाने या अस्पताल में ना रहने से पैसे और समय की बचत होती है। हम दूसरों के लिए भी एक बेहतर उदाहरण बनते हैं, जैसे इस प्रकार हम जीवन का अधिक आनंद लेते हैं।

हमें हमेशा स्वस्थ आहार खाना चाहिए (1 राजा 19:3-6)। इसमें भी समय और अनुशासन की आवश्यकता है, लेकिन यह प्रयास करने योग्य भी है। हमारा वजन, हमारा दिल, हमारा समस्त स्वास्थ्य आहार से बहुत प्रभावित होता है। उचित भोजन के कारण हम हर चीज का अधिक आनंद लेते हैं, हम बेहतर महसूस करते हैं और अधिक पूर्ण रूप से कार्य करते हैं। आत्म-संयम का अभ्यास इसकी कुंजी है (1 कुरिन्थियों 9:27)।

इसके अतिरिक्त, हमें अपने विश्राम में बने रहना चाहिए (भजन संहिता 127:2)। हमें अपनी सर्वोत्तम क्षमता से कार्य करने के लिए औसतन लगभग एक रात में 8 घंटे की नींद लेनी चाहिए। आराम और विश्राम के साथ-साथ शौक और मौज-मस्ती के समय भी जीवन में काम और तनाव को संतुलित करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर आज्ञा देता है कि हम सात में से एक दिन विश्राम करें (निर्गमन 20:8-11; व्यवस्थाविवरण 5:12-15; लैव्यव्यवस्था 23:3)। हम सब्त के दिन को यहूदियों की तरह मानने के कानून के अधीन नहीं हैं, लेकिन सात में एक दिन आराम करने का परमेश्वर का सिद्धांत आज भी सच है। यह परमेश्वर के उदाहरण का अनुसरण करता है जिसने छह दिनों में दुनिया की रचना की और सातवें को विश्राम कीया (उत्पत्ति 2:3)। पादरियों और अगुओं को प्रत्येक सप्ताह काम से एक दिन की छुट्टी लेनी चाहिए ताकि वे आराम कर सकें, अपने परिवार के साथ आनंद उठा सकें और परमेश्वर को उनके शरीर और आत्मा को तरोताजा करने दे । कई पादरी इस आराम की अनुमति नहीं देते हैं, लेकिन यह परमेश्वर

के सिद्धांत की अवज्ञा है और यह भविष्य में उनके स्वास्थ्य और उनकी सेवकाई को नुकसान देगा। क्योंकि वह चाहता है कि हम सप्ताह में एक दिन आराम करें, परमेश्वर हमें केवल सप्ताह में छह दिन काम करने के लिए देता है। अगर हम महसूस करते हैं कि हमें पूरे 7 दिन काम करने की ज़रूरत है तो हम वह कर रहे हैं जिसकी वह उम्मीद नहीं कर रहा है। हमें ऐसे कार्यों को खोजने की जरूरत है कि वे क्या हैं और उन्हें करना बंद कर देंना है ।

हम इसके लिए अपने परिवार और सेवकाई के लिए, स्वयं के लिए, और विशेष रूप से परमेश्वर के लिए कर्जदार हैं, उस सब के लिए जो उसने हमें दिया है, जिसमें हमारा स्वास्थ्य और शरीर भी शामिल है। क्या परमेश्वर कहेगा कि आप उस अद्‌भुत शरीर के अच्छे भण्डारी हैं जो उसने आपको दिया है?

इसे लागु करने में प्रशन: *क्या आप अपने शरीर के उतने ही अच्छे भण्डारी हैं जितना आपको होना चाहिए? क्या आप स्वस्थ खाना खाते हैं और अपना वजन कम रखते हैं? क्या आपको पर्याप्त आराम मिलता है? क्या आपको पर्याप्त व्यायाम मिलता है?*

<u>ख . आध्यात्मिक कर्तव्य</u>

हमें अपने शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ आध्यात्मिक रूप से भी स्वस्थ रहना चाहिए। जब प्रारंभिक कलीसिया के अगुवों ने महसूस किया कि सेवकाई का कार्य को जारी रखने का काम उनकी क्षमता से अधिक बढ़ गया है, तो उन्होंने उस कार्य को संभालने के लिए डीकनों को चुना ताकि उनके पास बाइबल का अध्ययन करने और प्रार्थना करने के लिए अधिक समय हो, क्योंकि वे जानते थे कि यह काम सबसे पहला था (प्रेरितों 6:1-4)। यदि हमें प्रभावी ढंग से दूसरों की सेवा करनी है, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम आत्मिक रूप से बढ़ रहे हैं (2 पतरस 3:17-18; 1 कुरिन्थियों 13:11)। इसका अर्थ है नियमित समय बाइबल पढ़ना, प्रार्थना में परमेश्वर से बात करना और मनन करते समय परमेश्वर को सुनना (देखें परिशिष्ट 2, परमेश्वर को सुनना)।

कुछ लोग सोचते हैं कि जब वे दूसरों की सेवा करना शुरू करते हैं तो वे आध्यात्मिक रूप से परिपक्व हो जाते हैं और उन्हें आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु हमें अपने पूरे जीवन में वृद्धि करते रहना है, हमेशा यीशु के समान सोचने और कार्य करने का प्रयास करते रहना जरूरी है (2 पतरस 3:18; इफिसियों 4:15)। सच तो यह है कि परमेश्वर को हमरी सेवकाई करने की आवश्यकता नहीं है। वह हमारे बिना भी अच्छा कर सकता है। सेवा भावना में उसकी सेवा करना एक विशेषाधिकार और खुशी की बात है। मेरी कलीसिया में लोगों की संख्या बढ़ाने के लिए परमेश्वर को मेरी आवश्यकता नहीं थी। इसके बजाय, उसने मुझे अपने जैसा और अधिक बनने के लिए प्रेरित करने को दूसरों की सेवा के लिए मेरा उपयोग कीया।

फिलिप्पियों 3:7-14 में पौलुस अपने स्वयं के आत्मिक विकास के बारे में बात करता है। आयत नंबर 8 और 10 में वे कहता है, "मैं अपने प्रभु मसीह यीशु को जानने की उचि महानता की तुलना में हर चीज को एक बेफ़ायदा मानता हूं ... मैं मसीह और उसके पुनरुत्थान की शक्ति और उसके कष्टों में सहभागी होने की संगति को जानना चाहता हूं, उसके जैसा बनना चाहता हूं। उसकी मौत में भी ।" दो बार पौलुस कहता है कि वह मसीह को "जानना" चाहता है (फिलिप्पियों 4:8, 10)। वह यीशु के बारे में तथ्य और जानकारी प्राप्त करने की बात नहीं कर रहा है। वह जो चाहता है वह यीशु के साथ एक करीबी, व्यक्तिगत, अंदरूनी , दिल से दिल का रिश्ता है। मुझे पता है कि आप यीशु के बारे में जानते हैं, लेकिन आप उसे कितनी अच्छी तरह जानते हैं? उसके साथ आपका रिश्ता कितना गहरा है, आपकी आराधना कितनी संजीदा है, उसके साथ आपका समय कितना मायने रखता है?

यीशु को जानना एक निरंतर, आजीवन प्रक्रिया है जिसमें समय की गुणवत्ता और मात्रा दोनों की आवश्यकता होती है। यह तब तक पूरा नहीं होगा जब तक हम स्वर्ग नहीं पहुंच जाते (1 कुरिन्थियों 13:12)। यीशु के करीब से करीब होने में बढ़ना पौलूस का आजीवन लक्ष्य था, जो उसके द्वारा शुरू की गयी कलिसिआयों या उसके द्वारा लिखी गई चिट्ठियों से कहीं ज्यादा उसके लिए मायने रखता था। जीवन में यह हमारा भी पहला लक्ष्य होना चाहिए, किसी भी सेवकाई से अधिक महत्वपूर्ण होना चाहिए जिसमें उसने हमें सेवा करने के लिए रखा है। उसके उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करना सबसे पहले आता है, और फिर हमें उसके लिए पल-पल जीने के लिए स्वयं को समर्पित करने की आवश्यकता होती है (रोमियों 12:1-2)। पहले हम उसे उद्धारकर्ता के रूप में मिलते हैं, और फिर हम उसे प्रभु और स्वामी के रूप में मानते हैं। क्या आप उसे मिले हैं और उसे अपना उद्धारकर्ता बनाया है? क्या आप ने अपना दैनिक जीवन और विचार उसको अर्पण कर दिया है और उसे अपने प्रभु और स्वामी के रूप में स्वीकार कीया है? क्या आप उसे जानते हो? क्या आप उसे अपने जीवन के प्रत्येक दिन बेहतर और बेहतर तरीके से जान रहे हैं? हमारे जीवन में किसी भी सेवकाई कर्तव्य से पहले यही हमारी पहली प्राथमिकता है।

इसे लागु करने में प्रशन: *क्या आप प्रार्थना करते, आराधना करते और बाइबल पढ़ते समय परमेश्वर के साथ नियमित समय बिताते हैं? पिछले एक साल में आप किस तरह से आध्यात्मिक रूप में बढ़ रहे हैं? परमेश्वर आपको उसकी सेवा करने के बारे में क्या सिखा रहा है? वह अभी आपके जीवन में कहाँ काम कर रहा है?*

ग. बौद्धिक कर्तव्य

जबकि यीशु को हृदय से जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है, उसके बाद उसके और उसके वचन के बारे में अधिक जानना भी महत्वपूर्ण है (2 तीमुथियुस 2:15; इब्रानियों 4:12; यहोशू 1:8)। बाइबल हमें परमेश्वर की सच्चाई बताती है कि वह कौन है और उसने क्या कीया है (यिर्मयाह 9:23-24), यह हमें संसार और सृष्टि के बारे में (उत्पत्ति 1:1; भजन संहिता 19:1) और हमारे बारे में और हम कहाँ से आए हैं, इसके साथ ही यह कि हम यहाँ क्यों हैं (उत्पत्ति 1:26-27; 1 कुरिन्थियों 10:31)। यह इसको भी दर्शाता है कि हमारे चारों ओर का संसार पाप से भरा और दुराचारी है (रोमियों 3:23; 8:7)। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि यह दुनिया की समस्याओं का समाधान देता है -यानि कि यीशु (तीतुस 2:14)।

बाइबल अचूक है (भजन संहिता 19:7), किसी भी खामी/कमी से रहित है (नीतिवचन 30:5-6), पूर्ण है (प्रकाशितवाक्य 22:18-19), आधिकारिक है (भजन संहिता 119:160), हमारी सभी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त है (2 तीमुथियुस 3) :15), हम सभ को जो जरूरत है उसके लिए पर्यापत (यशायाह 55:11), और शाश्वत है। यह अनंत काल तक बना रहेगा (यशायाह 40:8)।

बाइबल उन लोगों में भक्ति भावना उत्पन्न करती है जो इसे सीखते और उसका अनुसरण करते हैं (याकूब 1:22-25; भजन संहिता 119:9-11; 2 तीमुथियुस 3:16-17; यूहन्ना 17:17)। यह एक प्रकाश या मार्ग-चित्र की तरह मार्गदर्शन करता है (भजन संहिता 119:105) (नीतिवचन 3:5-6; यूहन्ना 14:6)। इसे जानने से हमें आत्मिक रूप से बढ़ने में मदद मिलती है (1 पतरस 2:2; भजन संहिता 119:103-104; इब्रानियों 5:13-14)। जब हम इसका अध्ययन करते हैं, तो हम विश्वास (रोमियों 10:17), विश्वासयोग्यता (भजन 1:1-3), प्रार्थना (यूहन्ना 15:7), आशीष (लूका 11:28), सामर्थ (इब्रानियों 4:12; इफिसियों 6:17), शांति (भजन संहिता 119:165), और आनंद (यिर्मयाह 15:16) में विकास करतें है । यह हमें शैतान और दुष्टात्माओं (2 कुरिन्थियों 10:4-5; इफिसियों 6:11-17), और परीक्षा (मत्ती 4:1-11; इब्रानियों 2:18; 4:15) पर विजय प्राप्त करने में मदद करता है।

इसलिए, परमेश्वर आज्ञा देता है कि हम बाइबल का अध्ययन करें (कुलुस्सियों 3:16; व्यवस्थाविवरण 31:11; प्रकाशितवाक्य 1:3; यशायाह 34:16; लूका 4:16; इफिसियों 3:4; 1 थिस्सलुनीकियों 5:27; 2 तीमुथियुस 4: 13)। वह यह भी कहता है कि हमें इसका पालन करना है (भजन संहिता 119:9; 1 तीमुथियुस 4:16), इसे दूसरों को भी देना है (मत्ती 28:19-20), इसकी इच्छा करना है (1 पतरस 2:2), इसका प्रचार करना है (2 तीमुथियुस 4:16), 4:2), इसे समझना है (2 तीमुथियुस 2:15), इसके द्वारा जीना है (मत्ती 4:4), दुख उठाना है और, यदि आवश्यक हो, तो इसके लिए मरना भी है (प्रकाशितवाक्य 1:9; 6:9; 20:4)। हमें इसे अपने दैनिक जीवन के प्रत्येक पहलू पर लागू करना है (2 तीमुथियुस 3:16-17)। (बाइबल का अध्ययन करने के तरीके के बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "बाइबल का अध्ययन"पुस्तक को पड़े।)

हालाँकि, बौद्धिक स्वास्थ्य का अर्थ बाइबल अध्ययन से कहीं अधिक है। इसमें अन्य क्षेत्रों को पढ़ना और उनसे सीखना भी शामिल है। अपने स्थानीय क्षेत और दुनिया में वर्तमान घटनाओं के साथ बने रहें। अपने आस-पास की दुनिया के बारे में अपने दिमाग और समझ में सुधार लाने के लिए मसीही किताबें और अन्य अच्छे साहित्य पढ़ना भी महत्वपूर्ण है। अपनी परमेश्वर-प्रदत्त सेवकाई को कैसे करना है, इसके बारे में अधिक सीखना भी महत्वपूर्ण है। किताबें पढ़ने के साथ-साथ दूसरों से बात करने से इन सभी क्षेत्रों में मदद मिल सकती है।

इसे लागु करने में प्रशन : *आप बाइबल को कितनी अच्छी तरह जानते हैं? आपके कमजोर क्षेत्र क्या हैं? बाइबल को बेहतर तरीके से सीखने के लिए आप क्या कर रहे हैं? बाइबल में आपकी पसंदीदा किताब कौन सी है? क्यों? बाइबल में आपका पसंदीदा व्यक्ति कौन है (यीशु के अलावा)? क्यों?*

घ . भावनात्मक कर्तव्य

परमेश्वर और उसके लोगों की सेवा करने के लिए हमारे स्वयं का एक अन्य पहलू जिसकी देखभाल करने की आवश्यकता है, वो है हमारी भावनाएँ। यीशु की तरह बनने और दूसरों के सामने उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए हमें परिपक्व होना चाहिए और हमारा एक ईश्वरीय चरित्र होना चाहिए। 1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:6-9 में पौलूस इसका अर्थ बताता है।

एक अगुवे में अंदरूनी ईश्वरीय गुण होने चाहिए। पौलूस बताता है कि एक ईश्वरीय नेता में विनम्रता और बलिदान जैसे ईश्वरीय अंदरूनी गुण होने चाहिए। हमें भरोसेमंद और जिम्मेदार होने की जरूरत है, कठिन निर्णय लेने के लिए सूझवान होना चाहिए, कठिन समय में अच्छी सलाह देने में सक्षम होना चाहिए, कब किसी चीज को ना कहना है, अपना आपा नहीं खोना है या पाप भरा क्रोध नहीं करना है और परिपक्व और अनुभवी होना है ताकि हम आसानी से धोखा ना खा सकें।

इनमें से बहुत नम्रता की माँग करते हैं; एक अगुवे में गर्व का होना एक बहुत ही खतरनाक आगुण है। कुछ पादरी और कलीसिया के अगुवा दूसरों का अकर्ष्ण खीचने और अपनी पहचान बनाने की इच्छा रखते हुए खुद को पहले स्थान पर रखना पसंद करते हैं। परन्तु याकूब कहता है कि हमें निचली सीटों पर बैठना है, और यदि हमारा पदोउनित किया जाना है, तो दूसरों को करने दें (याकूब 2:1-7)। शैतान के पतन के पीछे अहंकार था (यहेजकेल 28:17; यशायाह 14:12-14) और यह आज के अगुवओं के लिए भी एक प्रलोभन है (1 तीमुथियुस 3:6)। घमण्ड से विनाश आता है (नीतिवचन 16:18)। परमेश्वर घमण्ड से घृणा करता है (नीतिवचन 6:16-17)। एक ईश्वरीय अगुवा अपने काम के प्रति लोगों का अकर्ष्ण नहीं चाहता है, लेकिन दूसरों को उनकी सेवा करने के लिए अपने आप से पहले रखता है जैसे यीशु दूसरों की सेवा करता है। इस तरह वह यीशु की सेवा करता है।

विनम्र होने का मतलब यह नहीं है कि हम अपने बारे में कम सोचें । हमें अपनी स्वयं की शक्तियों को पहचानना चाहिए और उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए, लेकिन साथ ही अपनी कमजोरियों से भी अवगत होना चाहिए और यीशु की शक्ति से उन पर विजय प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। एक विनम्र व्यक्ति यह नहीं सोचता कि वह दूसरों से बेहतर है या दूसरों से भी बदतर है; हमें अपनी तुलना केवल यीशु से करनी है, दूसरे लोगों से नहीं।

अभिमान बहुत धोखा देने वाला, चतुर और अत्यंत खतरनाक हो सकता है! जब हम सोचते हैं कि हमने इसे जीवन के एक क्षेत्र में हरा दिया है, तो यह दूसरे क्षेत्र में आ जाता है। हमारे लिए इसे अपने जीवन में पहचानना बहुत कठिन है! अक्सर हम दूसरों पर गर्व को आसानी से पहचान सकते हैं, लेकिन इसके बारे अपने जीवन में लगभग पूरी तरह से अंधे हो जाते हैं।

मुझे लगता है कि मैं दूसरों से बेहतर हूं या दूसरों की तरह अच्छा नहीं हूं, ध्यान फिर भी खुद पर ही है। आत्म-ध्यान गर्व की महक है। घमण्ड से लज्जा आती है, परन्तु नम्रता से ही बुद्धि मिलती है (नीतिवचन 11:1)।

प्रतिदिन हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह इसे हमारे जीवन में इंगित करे और हमें इससे दूर रखे। मैंने इससे होने वाले नुकसान और इसको को प्रकट करने वाले धोखेबाज तरीकों के लिए एक स्वस्थ सम्मान करना सीखा है। बात यह नहीं है कि 'अगर' गर्व मुझे चोट मरता है, लेकिन बात यह है कि 'कब' चोट मरता है, क्योंकि यह निश्चित रूप से चोट मरेगा ही । मेरी पत्नी, जो इसे मुझसे कहीं अधिक आसानी से देख लेती है, इससे पहले कि मैं इसे पहचान सकूं, वह मेरी सबसे बड़ी मददगर रही है। मुझे उस पर भरोसा है कि मैं उसकी बात सुनु और सीख सकूं।

घमण्ड सभी पापों की जड़ में है (नीतिवचन 16:18)। आत्म-केंद्रितता जो है वो ईश्वर-केन्द्रता और अन्य-केन्द्रता के विपरीत है। यह हमारे 'शरीर ' का इतना बड़ा हिस्सा है कि जब तक हम इस शरीर में रहेंगे तब तक हमें इससे निपटते रहना होगा। हमारे लिए परमेश्वर के धैर्य और दया के लिए उसका धन्यवाद हो !

इसे लागु करने में प्रशन : *गर्व के साथ आपकी सबसे बड़ी समस्या कहां या कब है? आप इसके बारे में क्या कर सकते हैं? आप आलोचना का जवाब कैसे देते हैं? आप दूसरों के प्रति कितने आलोचनात्मक हैं जो आपको चुनौती देते हैं? अपने साथी या सबसे अच्छे दोस्त से ईमानदारी से आपको यह बताने के लिए कहें कि वे आपके जीवन में गर्व को कहाँ देखते हैं। हर बार जब वे आपको गर्व से प्रतिक्रिया करते हुए देखें तो उन्हें कहें कि वह आप को बताए। एक विस्तृत सूची लिखें कि आपके जीवन में अभिमान कहाँ प्रकट होता है। अगले सप्ताह तक प्रतिदिन इसके बारे में प्रार्थना करें।*

एक अगुवा का दूसरों के साथ ईश्वरीय संबंध होना चाहिए। जब हमारे पास ऊपर वर्णित अंदरूनी गुण होंगे, तो यह दूसरों के साथ हमारे व्यवहार करने के नजरिये में दिखाई देगा। हमें हिंसक, तेज-तर्रार, झगड़ालू और हमेशा अपने तरीके को चाहने वाला नहीं होना चाहिए, बल्कि कोमल और धैर्यवान होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:6-9)। दूसरों को हमसे बात करने में आसानी , धैर्य, समझदारी, क्षमा करने में तेज और सबसे पहले माफी मांगने वाले की छवि महसूस होनी चाहिए।

हमें जितना हो सके सबके साथ रहने की जरूरत है (रोमियों 12:18), भले ही हम उनसे सहमत ना हों। क्रोधित होने या तर्क-वितर्क या झगड़े में पड़ने के लिए हमारी प्रतिष्ठा नहीं बन सकती है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दूसरे हमारे द्वारा अस्वीकृत, नीच या आलोचना कीया हुआ महसूस ना करें। हम प्रेम

में सच बोल सकते हैं (इफिसियों 4:15), लेकिन इसे कोमल तरीके से किया जाना चाहिए जो चंगाई लाता और मदद करता है।

हमारे कार्य करने के तौर -तरीके ऐसे होने चाहिए कि उसके कारण दूसरे लोग हमारा सम्मान करें, भले ही वे हमसे असहमत हों। हमारे आस-पास हर किसी को सहज महसूस करने की जरूरत है: युवा, बूढ़े, पुरुष, महिला, शिक्षित, अशिक्षित, अमीर या गरीब, सब को । हमारे विचारों में भी गुप्त पाप नहीं हो सकते। हमें अपना समय और संसाधन जरूरतमंदों के साथ साझा करने की जरूरत है। दूसरों को पता होना चाहिए कि हमारे पास सत्यनिष्ठा है, हम निष्पक्ष और ईमानदार हैं, और यह कि हम अपनी बात रखने वाले हैं।

इसको लागु करने में प्रशन : *क्या आप अपने समय और शरीर के अच्छे भण्डारी हैं? अगर आपको अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए परमेश्वर को जवाब देना पड़ता है, तो क्या आप उसके सामने खड़े हो सकते हैं यह जानते हुए कि आप अपनी देखभाल करने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं? क्या आप अभी भी आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं? कहाँ पर आप अपने आध्यात्मिक जीवन और विकास में सबसे कमजोर हैं जो परमेश्वर आप को बताएगा ? वह क्या चाहता है कि आप इसके बारे में करें? क्या आप नियमित रूप से बाइबल का अध्ययन कर रहे हैं? क्या आप कुछ महीने पहले की तुलना में बाइबल और उसकी सेवकाई के बारे में जितना जानते थे उससे कहीं अधिक अब जानते हैं? क्या आप अपनी खराई और ईमानदारी के लिए जाने जाते हैं? क्या सभी लोग आपका आदर और आप पर विश्वास करते हैं? क्या यीशु कहेगा कि आप उसका प्रतिनिधित्व करने का अच्छा काम कर रहे हैं? वह कहां के लिए कहेगा कि आपको सबसे ज्यादा काम करने की जरूरत है?*

हमने उन कर्तव्यों पर ध्यान दिया है जिन्हें मसीही अगुवओं को खुद को तैयार करना होता है ताकि वे ऐसे लोग हो सकें जिनकी परमेश्वर को अपनी सेवा कराने के लिए आवश्यकता है। आइए अब हम परमेश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को देखें।

II. अपने परमेश्वर के प्रति कर्तव्य

हमने देखा है कि हमारा पहला कर्तव्य है कि हम अपने स्वास्थ्य की देखभाल करें और आध्यात्मिक रूप से विकास करें ताकि हम अपनी क्षमता के अनुसार परमेश्वर की सेवा कर सकें। इससे पहले कि वह हमारे माध्यम से कार्य करे, परमेश्वर को हम अंदर कार्य करना चाहिए। परमेश्वर के प्रति हमारा कर्तव्य हमारी कलीसिया के प्रति हमारी जिम्मेदारियों से पहले स्थान पर आता है (फिलिप्पियों 3:10-11)। हम कलीसिया के नेतृत्व में हैं क्योंकि यह, हमें बढ़ाने और परिपक्व करने के लिए, परमेश्वर का चुना हुआ तरीका है।

क्या वह आपका उपयोग दूसरों को यीशु की तरह बनने में मदद करने के लिए कर रहा है? मुझे आशा है कि यह है - ऐसा होता है तो यह बहुत अच्छा है। लेकिन यहाँ असली सवाल है: क्या वह आपको यीशु की तरह बनाने के लिए दूसरों का उपयोग कर रहा है? यह निश्चित रूप से हमारे लिए परमेश्वर की प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर है। वह हमें अपने बेटे की तरह बनाने के लिए अच्छे (प्रोत्साहन और समर्थन) के साथ-साथ बुरे (दूसरों द्वारा आलोचना और हमले) का भी उपयोग करता है। दूसरों को बदलने की कोशिश में इतना व्यस्त मत हो जाओ कि आप इस बात को भूल ही जाएँ कि परमेश्वर आपको परिवर्तन करने के लिए क्या कर रहा है !

क. नम्रतापूर्वक परमेशवर की सेवा करना

जब मैंने सेवकाई शुरू की, तो मैं परमेश्वर के लिए अपने उपहारों और प्रतिभाओं का उपयोग करने के अवसर पर बहुत उत्सुक होता था। मैं बहुत कुछ हासिल करना चाहता था। मैं "परमेश्वर के लिये बड़े बड़े काम करते रहने और परमेश्वर से बड़े बड़े कामों की आशा रखता था" ।" मुझे पता था कि इन इच्छाओं को पूरा करने के लिए मुझे उसकी सहायता की आवश्यकता है, लेकिन मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि परमेश्वर की सहायता से वे जरूर पूरी होंगी।

मैं जितना उमरदराज होता जाता हूँ, उतना ही स्पष्ट रूप से मैं देखता हूँ कि मेरे पास उसे एक भेंट के रूप में देने को कुछ भी नहीं है। यह कोई मंडली कार्यप्रणाली से नहीं है; यह सब उसकी कृपा और दया है। मुझे ऐसा लगता है कि जैसे एक छोटा लड़का सोच रहा हो कि वह बेसबॉल से एक मील तक की हिट मार सकता है, जबकि वास्तव में उसका पिता उसके पीछे खड़ा होता हैं, अपने बेटे के चारों ओर अपनी बाहों को लपेटे हुए और गेंद के साथ संपर्क बना रहे बल्ले को पकडे होता है। मेरे स्वर्गीय पिता की बाहों को मेरे चारों ओर लपेटे बिना, मैं इसे हर बार एक मील तक की हिट मारने से चूक जाता हूँ। समय-समय पर, जब मैं चीजों को अपने तरीके से करने पर जोर देता हूं, तो परमेश्वर मुझे यह दिखाता है कि मैं अपनी ताकत से कुछ भी उत्पन करने में कितना असमर्थ हूं।

यह मेरी ताकत में नहीं है; यह सब उसी की ताकत से होता है (गलातियों 2:20)! उसे मेरी जरूरत नहीं है, बल्कि मुझे उसकी पूरी तरह से जरूरत है! जैसे-जैसे मैं आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होता जाता हूं, मैं देखता हूं कि परमेश्वर बड़ता जाता है। मैं, पहले की तुलना छोटा होता जा रहा हूं। यह इसी तरह होना चाहिए है! कुछ ऐसा है, जिससे मैं मुक्त होता हूँ, कुछ को आपने अंदर से "जाने देने से और परमेश्वर को आपने अंदर आने देने पर "। जब मुझे लगता है कि मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं है, तो वह मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।

मुझे एक वास्तविक शांति तब मिलती है जब मैं परमेश्वर को परमेश्वर बनने देता हूं और मानता हूं कि उसे यहां अपना राज्य चलाने के लिए मेरी आवश्यकता नहीं है। इस निष्कर्ष पर पहुँचना स्वतंत्रता पाने जैसा है, कि मैं उसके बिना कुछ नहीं कर सकता (रोमियों 12:1-2)। जब यह भावना,मेरे जीवन की सचाई को लेते हुए, शब्दों से अधिक हो जाती है तो मैं उसे (परमेश्वर को) और अधिक ध्यान से सुनना शुरू कर देता हूं। मैं जो कुछ कर रहा हूं उसमें मेरी मदद करने के लिए उसको कहने में कम समय बिताता हूं और उसको यह अधिक पूछता हूं कि वह मुझसे क्या चाहता है। मैं अपनी कुछ सबसे बड़ी योजनाओं को नज़रन्दाज स्थिति में पड़ा हुआ देखता हूं, लेकिन मुझे लगता है कि उसने मुझे कई बार जीवनो को छूने के लिए इस तरह इस्तेमाल किया है और जिस तरह से मैंने कभी उम्मीद भी नहीं की थी। मैंने सीखा है कि कार्यक्रमों से पहले हैं । मैं यहां अपने लोगों की सेवा करने के लिए हूं; वे यहाँ मेरी सेवा करने के लिए नहीं हैं। मेरे पास अधिक शांति और धैर्य है क्योंकि मैं जानता हूं कि अगर मैं उसकी इच्छा में हूं, तो वह जो परिणाम चाहता है, वह जब भी चाहता है वह लाएगा। परमेश्वर सफलता को संख्याओं (लोगों, पैसों , संपत्ति, आदि) से नहीं, बल्कि विश्वास से मापता है। इसलिए मैं अधिक से अधिक समय यह सुनिश्चित करने में लगाता हूं कि मैं वही कर रहा हूं जो वह चाहता है और कम से कम उसे अपनी योजनाओं के लिए सहमत करने की कोशिश करता हूं।

इसे लागु करने में प्रशन : *यदि परमेश्वर ने आपके जीवन से अपनी कृपा और सहायता को रोक दिया हो , तो क्या भिन्न होगा? आप उसकी मदद के बिना अपने दम पर उसके लिए क्या हासिल कर सकते हैं? आप इसे कितनी बार करने की कोशिश करते हैं?*

ख. नियमित रूप से परमेश्वर के साथ जुड़ना

कभी-कभी जब मैं व्यस्त हो जाता हूं, तो मैं अच्छा, स्वस्थ भोजन खाना बंद कर देता हूं। मैं एक या दो बार का भोजन भी छोड़ देता हूँ ताकि मेरे पास वह सब करने के लिए अधिक समय हो जो मुझे करने की जरूरत है। हालांकि, बहुत पहले, मुझे अपनी योजनाओं और गतिविधियों को बनाए रखने के लिए ताकत और ऊर्जा की कमी महसूस होती है। आध्यात्मिक रूप से भी यही सच है। बहुत आसान है कि हम इतना व्यस्त हो जाते हैं कि हम प्रभु के साथ अकेले में नियमित समय की भी लापरवाही करने लगते हैं। हम पूरा दिन आध्यात्मिक बातों से निपटते हैं: बाइबल अध्ययन की योजना बनाते हैं, लोगों के साथ प्रार्थना करते हैं, और बाइबल आधारित सलाह/मशवरा देते हैं। परमेश्वर के वचन के दैनिक सेवन और परमेश्वर के साथ घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध के बिना, हम जल्द ही आध्यात्मिक रूप से खाली हो जाएंगे (1 कुरिन्थियों 9:24-27)। हम जो करते हैं उस पर इतना अधिक ध्यान केंद्रित करने के कारण, हम लापरवाही करने लगते हैं कि हम कौन हैं। फिर निराशा होती है। उचित ईंधन के बिना काम करने की कोशिश से हम आपने आप को थका हुआ, अधीर और निराश महसूस करते हैं।

परमेश्वर को आपको अपनी उपस्थिति से भरने दें। इसमें समय लगता है, गुणवत्तापूर्ण समय - ना केवल बात करना, बल्कि सुनना भी - जैसा कि हर किसी भी बहमूल्य रिश्ते में होता है। अपने आप को यीशु के दिनों में धार्मिक शासकों की तरह ना बनने दें - ईश्वरीय कार्यों में इतना व्यस्त होने से वे परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध से चूक गए। याद रखें, यह सब रिश्ते के बारे में है, और इसका मतलब है कि यीशु के साथ आपका खुद का रिश्ता जो सबसे पहले आता है, ताकि आप यह जानकर जीवन जी सकें कि आप ने किसी और चीज से पहले उसकी सेवा की है (2 तीमुथियुस 4:7-8)।

इसे लागु करने में प्रशन : *क्या आप खुद को परमेश्वर के साथ नियमित गुणवत्तापूर्ण भक्ति समय बिताने के लिए बहुत व्यस्त देखतें हैं? परमेश्वर के साथ नियमित समय बिताने में आपको सबसे अधिक कठिनाई किस बात से आती है? क्या यह व्यवसाय है, आलस है, कोई पाप जिसे अंगीकार नहीं कीया गया है, घटिया प्राथमिकताएँ हैं.... ? आप परमेश्वर के साथ नियमित समय कब निर्धारित करते हैं?*

ग . परमेश्वर को गहराई से जानना

अपनी सेवकाई के आरंभ में, मैंने परमेश्वर के साथ घनिष्ठता को अपना पहला लक्ष्य बनाया। फिलिप्पियों (3:7-14) के लिए पौलुस के शब्दों ने यीशु को "जानना" का चाहवान बनने ने में मेरे दिल में जड़ें जमा ली हैं। मैं उसे जानना चाहता हूँ, नाकि सिर्फ उसके बारे में!

डलास विलार्ड ने एक बार कहा , "परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का सबसे बड़ा दुश्मन परमेश्वर की सेवा है।" अधिक से अधिक उत्पादन में बंधे रहना बहुत आसान है। हम दूसरों को और यहां तक कि परमेश्वर को भी इस रूप में देखना शुरू करते हैं कि वे, हमें जीवन में और अधिक हासिल करने में, हमारी कैसे मदद कर सकते हैं।

परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का कोई विकल्प नहीं है (व्यवस्थाविवरण 6:4-5)। प्रार्थना और आराधना में बिताया गया समय, जब उसका आत्मा मेरी सेवा करता है, तो यह एक मधुर संगति का समय बन सकता है जिसकी मैं किसी भी चीज़ से अधिक चाहत करता हूँ। जब संचार एक सामान्य लक्ष्य की दिशा में एक साथ अधिक कुशलता से कार्य करने के तरीके तक सीमित हो तो संबंध विकसित नहीं हो सकते। रिश्ते तब बढ़ते हैं जब हम अपने साथियों की सुनते हैं, अपने दिल से बोलते हैं, अपना प्यार और उनके प्रति सराहना को साझा करते हैं, और बदले में उन्हें हमसे प्यार करने देते हैं। यीशु के साथ हमारे रिश्ते में भी यही बात सच है।

समय, भेद्यता और विनम्रता वह कीमत है जिसे आपको परमेश्वर के साथ निकटता प्राप्त करने के लिए चुकाने के लिए इशुक होना चाहिए । आपको इसकी इच्छा सबसे अधिक करनी चाहिए, नहीं तो ऐसा नहीं होगा। लेकिन उसे जानने की मिठास निश्चित रूप से आपने आप में मायने रखती है। यह वही है जो स्वर्ग के बारे में होगा! हाँ, हम स्वर्ग में परमेश्वर की सेवा करेंगे, और यह उसके साथ सच्ची घनिष्ठता पर आधारित होगा। लेकिन, तब तक प्रतीक्षा क्यों करें जब हम अभी पृथ्वी पर स्वर्ग के उस स्वाद का अनुभव करना शुरू कर सकते हैं?

इसे लागु करने में प्रशन : *1 से 10 के पैमाने पर, आप परमेश्वर के साथ अपनी घनिष्ठता में आपने आप को कहाँ बतायेंगे कि आप हैं? क्या आपका उसके साथ घनिष्ठ, व्यक्तिगत संबंध है? क्या आप इससे संतुष्ट हैं या आप उसके और करीब रहना चाहेंगे? ईमानदारी से अपने आप से पूछें कि परमेश्वर के साथ आपके व्यक्तिगत संबंध को बढ़ने से क्या चीज रोकती है। रास्ते में कौन-सी रुकावटें हैं? आप उनके बारे में क्या कर सकते हैं?*

आध्यात्मिक विकास बाइबल का अध्ययन करने से होता है। जब हम बहुत छोटे होते हैं तो हमें सादा भोजन दिया जाता है क्योंकि हमारे अपरिपक्व शरीर जो पचा सकते हैं वो सब यही होता है । जैसे-जैसे हमारा शरीर परिपक्व होता है, हम ठोस भोजन करने में सक्षम होते जाते हैं। अगर कोई वयस्क केवल वो खाना खता है जो बच्चों के लिए बना है तो इसका मतलब कोई तो समस्या है।

आत्मिक रूप से हमारे साथ भी ऐसा ही है (1 कुरिन्थियों 3:1-3)। जितना अधिक हम विश्वास में परिपक्व होते हैं, उतना ही अधिक हमें आध्यात्मिक भोजन की इच्छा करनी चाहिए। बाइबल के सत्य सरल और आसान /ठीक हैं, लेकिन हमें अपनी विकसित होती आत्माओं को खिलाने के लिए कुछ गहरा और मजबूत भी खिलाना चाहिए। परमेश्वर हमें उसके वचन का अध्ययन करने और सीखने की आज्ञा देता है (2 तीमुथियुस 2:15)। दुर्भाग्य से, कई मसीही लोग साधारण बातों से ही चिपके रहते हैं। वे भक्ति पाठ पढ़ते हैं और उन पाठ योजनाओं का उपयोग करते हैं जो बाइबल के बारे में हैं, लेकिन स्वयं पुस्तक को नहीं पढ़ते हैं। वे अपना भोजन स्वयं चबाने के बजाय दूसरों को उनके लिए चबाने को देते हैं।

परमेश्वर के वचन की सच्चाइयों को ग्रहण करने का कोई सस्ता तरीका नहीं है। पवित्रशास्त्र के एक अंश को पढ़ने और देखने में समय लगता है, उन चीजों की तलाश में जो आपने पहले नहीं देखी हैं। बाइबल के उन रत्नों का पता लगाने का कोई जल्दबाजी वाला तरीका नहीं है, यह केवल उनको ही मिलते हैं जो सावधानीपूर्वक और गहन अध्ययन करते हैं। केवल सटीक और व्यावहारिक अनुप्रयोग ही हमारे द्वारा सीखे गए सत्य को हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बना सकते हैं।

जो हम एक दिन में करते हैं उसमें का बहुत कम हमारे साथ स्वर्ग में ले जाया जाएगा - लेकिन जो हम बाइबल में सीखते हैं और आपने जीवन में उसका प्रयोग करते है वह हमेशा के लिए हमारा होगा। दैनिक गतिविधियों से कुछ समय निकालें, कुछ अनंत काल में निवेश करें। आज ही बाइबल में कुछ अच्छा समय बिताएँ। (इसे कैसे करें, इस बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "बाइबल का अध्ययन"पुस्तक पढ़े)

इसे लागु करने में प्रशन : *पिछली बार कब बाइबल के किसी अंश का अध्ययन किया था केवल अपने स्वयं के संपादन के लिए नाकि किसी सबक या संदेश के लिए ? क्या आपने कभी अपने बाइबल अध्ययन को आम करने की कोशिश की है, उन पाठों और व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को लिख लिया है जिनके साथ आप आए हैं इसे आज ही आज़माएँ। आप जो परिणाम प्राप्त करेंगे, वे समय का मूल्य से होंगे।*

मनन करने का महत्व। मनन करना कुछ ऐसा है जो हमारे आध्यात्मिक जीवन का हिस्सा होना चाहिए (भजन 119:97; 1:1-2), परमेश्वर और उसके वचन के बारे में सोचने के लिए समय निकालना। मनन करना बिना रुके प्रार्थना करने के समान है (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। जब आप मनन करते हैं, तो आप अपने दिल में जो कुछ भी है उसे व्यक्त करते हैं और पवित्र आत्मा के माध्यम से बाइबल में आपसे जो वह कहता है उस को प्रतिबिम्बत करते हैं, जैसे कि एक अच्छे दोस्त के साथ दोस्ताना नजरिये में बातचीत करना।

परमेश्वर से जोर से बात करने की कोशिश करें। विचारों को शब्दों में पिरोना अच्छा है। हम बेहतर ध्यान केंद्रित करते हैं और अधिक सटीक रूप से संवाद करते हैं। इसके अलावा, एक पवित्रशास्त्र हिस्से को भी प्रार्थना रुपी उपयोग करने का प्रयास करें। इसे ज़ोर से पढ़ें, इसके बारे में सोचें, इसे दोबारा पढ़ें, इसके बारे में परमेश्वर से बात करें और सुनें कि उसकी आत्मा आपको क्या बताती है। एक कापी में अपने विचार लिखने से इस अनुभव को बढ़ाने में आप को मदद मिल सकती है। हां, इसमें समय और मेहनत लगती है - लेकिन किसी भी अच्छे रिश्ते को बढ़ने में समय और मेहनत लगती है और यह निश्चित रूप से इसके लायक भी है!

इसे लागु करने में प्रशन : *पिछली बार कब आपने परमेश्वर के साथ एक अछे, लंबे समय तक संगति की थी, जहां आपने बस आराम किया और उसकी उपस्थिति का आनंद लिया था ? परमेश्वर के साथ इस प्रकार के ताज़गी देने वाले, अनादित संगत करने वाले समयों को प्राप्त करने में आपके सामने मुख्य बाधाए क्या है? अभी इसी वक्त कुछ क्षण मनन करने के लिए निकालें।*

परमेश्वर को जानना जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है।

कई साल पहले मैंने भारत में अपनी सेवकाई के समय में मदद करने के लिए हिंदी सीखना शुरू किया था। मैंने सोचा कि अगर मैं वर्णमाला, सरल वाक्य संरचना और थोड़ी सी शब्दावली सीख सकता हूं, तो मैं ठीक हो जाऊंगा। ऐसा नहीं! मैंने उस राशि से कहीं अधिक सीखा है, लेकिन मुझे लगता है कि जहां मैं होना चाहता था वहां से काफी आगे हूँ । जितना अधिक मैं सीखता हूं, उतना ही अधिक मुझे वह सब पता चलता है जो मैं नहीं जानता!

जैसे-जैसे मैं वर्ष दर वर्ष आध्यात्मिक रूप से विकसित हुआ हूं, वास्तव में परमेश्वर कौन है और क्या हैं, इसके बारे में मेरी जागरूकता परिपक्व हो गई है। यह महसूस करने के बजाय कि मैं मसीह की समानता के लक्ष्य के करीब हूँ, मुझे ऐसा लगता है कि मैं और भी दूर हूँ (रोमियों 7:14-19)। मैं अपने जीवन में अधिक से अधिक क्षेत्रों को देखता हूं जो उसकी पूर्णता माप स्तर तक नहीं पहुचे हैं। जब मुझे कमजोरी के एक क्षेत्र में जीत मिलनी शुरू हो जाती है, तो मुझे पांच और ऐसी जगह मिलती हैं जहां काम कीये जाने की जरूरत दिखाई देती है! जितना अधिक मैं बढ़ता हूँ, उतना ही मुझे इस बात का एहसास होता है कि मुझे अभी और कितना बढ़ना है! मेरे मन और हृदय में परमेश्वर जितना बड़ा होता जाता है, मैं उतना ही उसके करीब होता जाता हूं।

यह जानना, कि पौलूस ने भी इसका अनुभव किया था , मेरे लिए एक प्रोत्साहन मिल जाता है। अपनी सेवकाई की शुरुआत में, उसने लिखा कि वह सभी प्रेरितों में सबसे छोटा था (1 कुरिन्थियों 15:9)। बाद में, उसने कहा कि वह सभी विश्वासियों में सबसे छोटा था (इफिसियों 3:8), और अंत में उसने पहचान लिया कि वह सभी पापियों में सबसे बुरा है (1 तीमुथियुस 1:15)। यह इस तरह काम करता है: जितना अधिक हम बढ़ते हैं उतना ही हम जानते हैं कि हमें बढ़ने की जरूरत है।

यह एक मूर्तिकार की तरह है जो एक मॉडल को तराशता है। सबसे पहले, वह संगमरमर के बड़े टुकड़ों को मेहनत से अलग करता है जो अंतिम उत्पाद का हिस्सा नहीं होता हैं, फिर रगड़ाई शुरू करता है, और अंत में पॉलिश करता है। इसके बाद वह दूसरे हिस्से में चला जाता है और फिर से हथौड़े और छेनी से तराशना शुरू करता है। क्या आप उसे अपने जीवन में इस तरह काम करते हुए देख सकते हैं? इसके बारे में सोचें और आप उसका काम देखेंगे। वह उत्कृष्ट मूर्तिकार है, जो आपको अपने पुत्र का स्वरूप में बनाने के लिए प्रतिबद्ध है (फिलिप्पियों 1:6)। उसका काम कभी-कभी दर्दनाक हो सकता है, लेकिन उत्पाद हमेशा काबिल ऐ तारीफ होता है!

इसे लागु करने में प्रशन : *पिछले एक साल में आप आध्यात्मिक रूप से सबसे ज्यादा कहां बढ़े हैं? क्यों? आपको खिंचाव और परिपक्व करने के लिए परमेश्वर इस समय आप पर कहाँ कार्य कर रहा है? वह आप में जो काम कर रहा है, उसमें मदद के लिए आप क्या कर सकते हैं?*

हमने सबसे पहले उन कर्तव्यों को देखा जो मसीही अगुवों को स्वयं के प्रति करने होते हैं ताकि वे, ऐसे लोग हो सकें जिनकी परमेश्वर को आवश्यकता है कि वे उसकी सेवा करें। फिर हमने परमेश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को देखा ताकि हम उसके करीब बढ़ते रहें और यीशु के समान बनें। इससे पहले कि हम दूसरों की सेवा कर सकें, इन्हें कीया जाना चाहिए। इन प्राथमिकताओं के बाद, जिन लोगों की सेवा करने के लिए जो हमरी पहली जिम्मेदार हैं, वे हैं हमारा परिवार (1 तीमुथियुस 3:5)।

घ. हमे परमेश्वर के लिए विश्वासपूर्वक जीना है

जब हम एक मसीही बनते हैं तो हम शैतान की सेना को छोड़कर परमेश्वर की सेना में शामिल हो जाते हैं। शैतान और उसकी सेना हमें हराने के लिए हर संभव कोशिश करती है। जब हम परमेश्वर की सेना में अगुवा बन जाते हैं तो शैतान हमें और हमारी गवाही को नष्ट करने के लिए हर संभव प्रयास करता है। पादरीयों और अन्य अगुओं के आपने पूरे जीवन में आध्यात्मिक हमले होते रहते हैं। वह हमें पाप करने , घमण्ड करने या निरुत्साहित करने की कोशिश करता है। इसलिए हमारे लिए यह अतिरिक्त महत्वपूर्ण है कि हम उसके (परमेश्वर) प्रति विश्वासयोग्य पवित्र जीवन व्यतीत करें।

यौन प्रलोभन एक ऐसा उपकरण है जिसका उपयोग शैतान पादरियों के विरुद्ध करता है, अक्सर बड़ी सफलता के साथ। हमें यौन रूप से शुद्ध होने की आज्ञा दी गई है (इफिसियों 5:3-5)। किसी भी तरह से इसमें अनुचित होने का संकेत भी नहीं होना चाहिए (इफिसियों 5:3)। मैंने बिली ग्राहम से, अपनी मां, पत्नी या बेटियों के अलावा किसी अन्य महिला के साथ कभी भी नहीं, कभी भी नहीं और कभी भी किसी भी जगह पे अकेले ना रहने, का महत्व सीखा है। इसमें कोई छुट नहीं हो सकती। मैंने अपनी पूरी सेवकाई में ईस नियम का पालन किया है। यह कुछ ऐसा है जिसका सेवकाई में सभी को पालन करना चाहिए।

सभी प्रकार से हमें उच्चतम स्तर की ईमानदारी और शुध्यता बनाए रखनी होगी । हमें सभी के साथ एक उत्कृष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त करनी है , मासीहीयों से और अविश्वासीयों से भी । आपने भाषण को जिस तरह से हम दूसरों के साथ संबंधित करते हैं और हम लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, वह मसीह के जैसा होना चाहिए। हम अपने कार्यों या भाषण में क्रोध नहीं दिखा सकते (पाप पर छोड़कर - इफिसियों 4:26)। 1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:6-9 में पादरियों और अगुवों के लिए अपनी योग्यताओं की सूची में पौलुस इन बातों को बहुतायत से स्पष्ट करता है।

इसमें यह भी शामिल होता है जो हम दूसरों के बारे में कहते हैं। हमें कभी भी, किसी भी तरह से चुगली या दूसरों के बारे में नकारात्मक तरीके से बात नहीं करनी चाहिए, भले ही हम जो कहते हैं वह सच हो और दूसरों को इसका पता हो। जब कोई हमें कुछ निजी या गोपनीय बताता है, तो हमें इसे हमेशा भरोसे में रखना चाहिए और इसे कभी दूसरे को नहीं बताना चाहिए। जब उचित हो और जब हमें मालूम हो कि वे किसी और को नहीं बताएंगी , हम अपनी पत्नियों के साथ कुछ चीजें साझा कर सकते हैं , लेकिन किसी और के साथ साझा नहीं कर सकते। हम अपनी पत्नियों के साथ तब ही साझा कर सकते हैं ,अगर हमें उनकी सलाह या राय की जरूरत है, या फिर अगर किसी स्थिति में मदद करने के लिए वह कुछ कर सकती है। लोगों को पता होना चाहिए कि वे हम पर भरोसा कर सकते हैं नहीं तो वे हमारा सम्मान नहीं करेंगे।

अभिमान पादरियों के लिए एक और मजबूत प्रलोभन है। इसी के करण शैतान गिर गया (यहेजकेल 28:17; यशायाह 14:12-14) और यह अभी भी उसकी विशेषता है (1 तीमुथियुस 3:6)। पादरियों और अन्य अगुओं को दूसरों द्वारा इज़्ज़त से देखा जाता है और उनका सम्मान कीया जाता है, और यह हमें गर्व करने के लिए प्रेरित कर सकता है। इसलिए पौलुस कहता है कि पास्टर ऐसे पुरुष होने चाहिए जो परिपक्व और स्थिर विश्वासी हों (1 तीमुथियुस 3:6)। हम अधर्मी अभिलाषाओं के लिए परीक्षा में पड़ सकते हैं: जैसे एक बड़े चर्च की चाहत, टीवी कार्यक्रम की चाहत हैं या लोगों में बेहतर प्रस्थि पाने की चाहत अदि (मरकुस 9:30-34)। चेलों की तरह, हम भी खुद को दूसरों से बेहतर समझ सकते हैं (मरकुस 10:32-35; मत्ती 20:20)। इस से अनजान होते हुए हम दूसरों के सामने अपने बारे में सोचते हुए असंवेदनशील और अभिमानी बन सकते हैं (लूका 22:14-24)। हम अपने आप में अत्यधिक आश्वस्त हो सकते हैं। जब उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे उसका इन्कार करेंगे तो चेलों ने यीशु का विश्वास नहीं किया (मरकुस 14:17-21)। अभिमान विशेष रूप से एक खतरनाक है क्योंकि यह एक ऐसा पाप है जिसे हम दूसरों में तो पहचानते हैं लेकिन स्वयं में नहीं। हमें परमेश्वर को और दूसरे लोगों को जिन पर हम भरोसा करते हैं, हमरे अभिमान को इंगित करने के लिए कहने की जरूरत है ताकि हम इसे दूर कर सकें। परमेश्वर घमंड से नफरत करता है (नीतिवचन 6:16-17) शायद यह सभी पापों से ऊपर, क्योंकि यह अन्य पापों की जड़ है। वह घमण्डियों का न्याय करता है (नीतिवचन 16:18)। हमें, यीशु की तरह, खुद को दीन बनाना और दूसरों के पैर धोना है (यूहन्ना 13:1-17)। विनम्रता यह कहने में दिखाई जाती है, "मुझे क्षमा करें," "मैं गलत था," "कृपया मुझे क्षमा करें" और "धन्यवाद" जब उपयुक्त हो।

एक और हथियार जो दुश्मन हमें हराने के लिए इस्तेमाल करता है वह है हतोत्साह। सेवकाई में लगे लोगों के लिए यह एक बड़ा प्रलोभन हो सकता है। जब हम यीशु से अपनी नज़रें हटाते हैं और अपनी परिस्थितियों पर लगते हैं, तो हम उसके आगे फीके पड़ जाते हैं। हमें विश्वासपूर्वक उस पर भरोसा करना सीखना चाहिए और परिणाम की परवाह किए बिना अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए। आराधना में समय व्यतीत करें और परमेश्वर के वचन को पढ़ें। परमेश्वर वादा करता है कि वह आपके भय और निराशा में आपकी सहायता करेगा (यशायाह 41:10; भजन 34:4; 112:7; 18:30; यूहन्ना 16:33; यहोशू 1:9; इफिसियों 2:19-22; व्यवस्थाविवरण 31: 6; 1 पतरस 5:10; 2 इतिहास 20:15)।

चूंकि हम जानते हैं कि हम पर इन तरीकों से हमला किया जाएगा, इसलिए हमें इसके सामने खड़े रहने को तैयार रहने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। शैतान, संसार और हमारे शरीर के विरुद्ध हमारी लड़ाई में परमेश्वर ने हमारी रक्षा के लिए कवच प्रदान किया है (इफिसियों 6:10-20)। प्रत्येक दिन की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और बाइबल पढ़ने से करें। अपनी पत्नी और आपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाए रखें। करीबी पास्टर मित्रों के साथ करीबी संबंध बनाए रखें जिन पर आप विश्वास करे सकते हैं

और यदि आप भटक गए तो जो आपको इसके लिए जिमेदार ठहरा सकते हैं । आप पर आक्रमण किया जाएगा (1 पतरस 5:8)। क्या आप तैयार होंगे?

इसे लागु करने में प्रशन : *क्या आप अभी भी आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं? क्या आपकी पत्नी और बच्चे कहेंगे कि आप विनम्र हैं, या कि आप कभी-कभी गर्व का व्यवहार करते हैं? क्या आपके समुदाय के लोग आपके बारे में बहुत अच्छा सोचते हैं, या आपके बारे में कुछ ऐसी बातें हैं जो यीशु पर अच्छी तरह से प्रतिबिंबित नहीं होती हैं? क्या लोग जानते हैं कि आप गपशप नहीं करते हैं और विश्वास में कही गई बातों को कभी साझा नहीं करेंगे? क्या आप कभी कबार अपने हरकतों या विचारों में किसी भी प्रकार के यौन प्रलोभन के आगे फीके पड़ जाते हैं? क्या परमेश्वर स्वयं कहेगा कि आप उसकी सहायता से एक पवित्र जीवन जी रहे हैं?*

III.अपने परिवार के प्रति कर्तव्य

हमारे कर्तव्यों की प्राथमिकता में, हमारे परिवार हमारी सेवकाई से पहले आते हैं (1 तीमुथियुस 3:4-5; तीतुस 1-6)। जब आदम अदन में चलता फिरता और परमेश्वर से बात करता था, तो वह महसूस करता था कि उसके जीवन में कुछ कमी है। परमेश्वर ने हव्वा को उसके लिए एक पत्नी बनाकर जरूरत को पूरा किया ताकि उसे प्रेम करे और उसके जीवन को साझा करे (उत्पत्ति 2:18-24)। उसने पालन-पोषण करने के लिए उसके लिए बच्चे नहीं बनाए, ना ही माता-पिता जिनका वह समर्थन करता और ना ही उसके लिए पासबानी करने को कोई चर्च बनाया। स्वयं परमेश्वर के प्रति हमारे कर्तव्य के बाद, हमारा अगला कर्तव्य, हमारी पत्नियों और बच्चों के प्रति बनता है, यहां तक कि हमारी सेवकाई से भी पहले।

क. अपनी पत्नी के प्रति कर्तव्य

परमेश्वर ने मुझे एक अद्भुत पत्नी से आशीश्त कीया है नहीं तो मैं आज जहां हूं वहां नहीं होता। हमारे विवाहत जीवन को जितना अधिक समय होता जाता है, उतना ही मैं अधिक उसकी एक अच्छे व्यक्ति होने के लिए सराहना करता हूं, और उतना ही अधिक मैं इस विशेष उपहार के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं। मेरे जीवन और सेवकाई में उसका अप्रत्क्ष कार्य और विश्वास अमूल्य है। उसकी विश्वासयोग्यता, गहरा प्रार्थना जीवन, मेरे उन्मत्त कार्य से बढ़कर , परमेश्वर के राज्य के लिए काम पूरा करता है। वह मेरी सबसे बड़ी प्रार्थना सहयोगी हैं।

उसके माध्यम से मैंने अपने लिए परमेश्वर के बेशर्त प्यार के बारे में सीखा है, क्योंकि मैंने उसके माध्यम से इसे प्रदर्शित होते देखा है। मैं और अधिक गहराई से समझता हूं कि परमेश्वर मुझे क्षमा कर सकता है और करेगा, क्योंकि उसने इसका समय - समय पर उदाहरण दिया है। मैं उसकी विश्वासयोग्यता पर बेहतर ढंग से भरोसा कर सकता हूं क्योंकि मैं देखता हूं कि यह उसके जीवन में पूरा होता है।

कभी-कभी हम सोचते हैं कि हम जीवन में और अधिक हासिल कर सकते हैं यदि हमारे साथियों और परिवारों की ज़रूरतों के लिए हमें यह नहीं होता। हम उनके द्वारा लिए गए समय के लिए अपनी नराजगी दिख सकते हैं। शायद मैं अपनी पत्नी और परिवार के बिना सेवकाई में अधिक समय बिता सकता था, लेकिन इससे उतना पूरा नहीं कर पाता, और गुणवत्ता भी बहुत कम होती। मुझे यकीन है कि मैं उसकी मदद के बिना बर्बाद हो जाता या असफल हो जाता।

परमेश्वर आज्ञा देता है कि मैं अपने या अपनी कलीसिया से पहले उसकी सेवा करूं (इफिसियों 5:25-33)। वास्तव में, वह कहता है कि यदि मैं पहले उसकी सेवा नहीं कर सकता, तो मुझे एक पादरी नहीं होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2-5; तीतुस 2:6)। एक अच्छा पादरी बनने से पहले एक अच्छा पति होना

अधिक महत्वपूर्ण है (1 पतरस 3:7)। (मसीही विवाह के बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "शादी और सेवकाई " पुस्तक पढ़े।)

परमेश्वर मुझसे उम्मीद करता है कि मैं उससे(अपनी पत्नी से) वैसा ही प्रेम करूं जैसा वह मुझसे प्रेम करता है (इफिसियों 5:25)। मैं उसकी सेवा करने के लिए हूँ, उस से सेवा कराने के लिए नहीं। मुझे उसको प्यार दिखाना चाहिए, उसकी हर तरह से मदद करनी चाहिए और हमेशा उसके प्रति दयालु और सुशील रहना चाहिए।

अपनी जरूरतों से पहले उसकी जरूरतों को पूरा करना सीखना मेरी सेवकाई से कुछ हट कर नहीं है, बल्कि यह मुझे परिपक्व करके इसे और उपजाऊ बनाता है। मैं जो कुछ भी उसमें निवेश करता हूं वह कई गुणा बढ़कर मुझे वापस मिलता है। किसी को अपने से पहल पर रखना सीखना आसान नहीं रहा है, लेकिन विवाह और सेवकाई में यह अनिवार्य है। यह मुझे यीशु की तरह बनने में मदद करता है जिसकी विशेषता है दूसरों को अपने से पहल पर रखना।

मैंने जीवन में जो मुख्य सबक सीखा है और जीवन में मैंने जो सबसे बड़ी आध्यात्मिक और भावनात्मक वृद्धि का अनुभव किया है, वह मेरी शादी के माध्यम से ही हुआ है। हालात हमारे लिए हमेशा आसान नहीं रहें हैं। परमेश्वर हमारी अपूर्णताओं और हमारे संघर्षों का उपयोग नम्रता, सेवा, क्षमा माँगने, क्षमा करने और क्षमा स्वीकार करने के बारे में सिखाने के लिए करता है। ये बातें किसी किताब से नहीं, सिर्फ जिंदगी से सीखी जा सकती हैं।

मैं जितना उमरदराज होता जाता हूँ, जीवन और सेवकाई में उतना ही आगे जाता हूँ, उतना ही अधिक मैं यह महसूस करता हूँ कि एक अच्छी पत्नी का मूल्य माणिको से कहीं अधिक होता है (सभोपदेशक 31:10-12, 30-31)। और इस पुस्तक को पढ़ने वाली पत्नियों के लिए एक अच्छे पति का होना भी इतना ही मूल्यवान है !

इसे लागु करने में प्रशन : *आप अपने साथी को कितना महत्व देते हैं? क्या आप उन मांगों से नाराज हैं जो उन्होंने आप पर रखी हैं? अपने साथी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए आप क्या त्याग करते हैं? आपको और क्या करना चाहिए? आखिरी बार आपने उन्हें कब बताया था कि वे आपके लिए कितने मायने रखते हैं? इसे आज ही करें।*

ख. आपने बच्चों के लिए कर्तव्य

जब मैं अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखता हूं, तो मेरे पास एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो आप में से बहुतों के पास नहीं होगा जो मुझ से उम्र में छोटे हो। मेरे बच्चे बड़े हो गए हैं, शादीशुदा हैं और अपने बच्चों की परवरिश कर रहे हैं। उनके जीवन पर मेरा प्रभाव काफी हद तक बना रहा है। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने मुझे सेवकाई की शुरुआत में मेरे परिवार को मेरी नंबर एक मंडली बनाने के महत्व के लिए प्रेरित कीया है। मेरे जीवन में अन्य आए और गए, लेकिन मेरा परिवार अभी भी मेरा परिवार है। मेरी पत्नी और बच्चों को छोड़ अन्य किसी पर भी मेरा अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है या ना कभी अधिक प्रभाव पड़ेगा।

पृथ्वी पर रहते समय यीशु की सर्वोच्च प्राथमिकता उसके शिष्यों का 'परिवार' था, ना कि भीड़, और ना ही नए कार्यक्रम और परियोजनाएँ। उसने उन्हें और उनकी ज़रूरतों को सबसे पहले रखा, अक्सर आपने आप को भीड़ से हटकर या फिर चेलों के साथ समय बिताने के लिए वह दूसरों को भेज देता (मत्ती 8:18; 14:13-15; 15:39)। हमें आज उसके नमूने का पालन करना है। ऐसा कोई नहीं है जिसे से आप अपने

बच्चों की तुलना में आपने आप का पूरी तरह से किसी और रूप में पुन: उत्पाद नहीं कर सकते। और आप आपने आप का उनके द्वारा अछ्ई या बुराइ के लिए पुनरुत्पादित करेंगे। आप इस तथ्य को नहीं बदल सकते कि आप उनके जीवन को पूरी तरह से प्रभावित करेंगे। प्रशन यह है कि प्रभाव क्या होगा, नाकि यह कि क्या आप का प्रभाव पड़ेगा या नहीं । बच्चे नर्म मिट्टी के समान होते हैं, जिनहे आप जिस छवि में बनाना चुनते है , उसमें डालते हैं (नीतिवचन 22:6)। यदि आप इतने व्यस्त हैं कि उन के साथ बिताने के लिए समय नहीं निकाल सकते हैं, तो यह उन्हें अस्वीकार और महत्वहीन महसूस कराता है। आप उनके जीवन में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके साथ आप के द्वारा कीया गया व्यवहार, उन्हें या तो यीशु के पास ले जाएगा या उस से दूर ले जायेगा । आप उन्हें बना रहे हैं और उन्हें अपनी सेवकाई में किसी और से अधिक बनाएंगे ।

यह शर्म की बात है कि सेवकाई में काम करने वालों के बच्चे अक्सर विद्रोह और अवज्ञा के लिए जाने जाते हैं। यह किसका दोष है? परमेश्वर स्वयं कहता है कि यदि हम अपने परिवारों का प्रबंधन नहीं कर सकते हैं तो हम उसकी कलीसिया का प्रबंधन नहीं कर सकते हैं (1 तीमुथियुस 3:4-5)। आपके बच्चों को आपकी जरूरत आपकी कलीसिया से ज्यादा है। कभी-कभी हम परमेश्वर की सेवा में और दूसरों की नज़रों में अपनी 'सफलता' में इस कदर मगन हो जाते हैं कि हम सबसे महत्वपूर्ण चीज़ को भूल जाते हैं। परमेश्वर ने हमें हमारे बच्चों को उसके लिए शिष्य बनाने के लिए दिया है। इनको छोड़ और कुछ भी ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है! वह हमें कभी भी अन्य बातों, यहाँ तक कि सेवकाई के लिए अपने बच्चों की लापरवाही करने के लिए प्रेरित नहीं करेगा। वे उसके लिए अनमोल हैं और वह उनको हमारे हाथ में सौंपता है। वह हमें करने के लिए कभी भी इतना अधिक काम नहीं देगा कि हमारे पास उनके लिए समय ही ना हो। यह केवल हमारी गलत प्राथमिकताओं के कारण होता है।

मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी में से एक यह है कि मेरे बच्चे प्रभु की सेवा करते हैं और उसका अनुसरण करते हैं। मेरे लिए यह सुनने से बड़ी खुशी किसी बात में नहीं है, कि मेरे बच्चे सच्चाई पर चल रहे हैं।" (3 यूहन्ना 4)। उनमें से प्रत्येक ने परमेश्वर के प्रति वफादार रहने और पूरे दिल से उसकी सेवा करने का चुनाव किया है। सुनिश्चित करें कि आप अपने बच्चों को अपनी सेवकाई में सर्वोच्च महत्व के रूप में देखते हैं। केवल आपकी पत्नी उन से अधिक महत्वपूर्ण है।

इसे लागु करे में प्रशन : *मुझे यकीन है कि आप कहेंगे कि आपका परिवार आपकी नंबर 1 प्राथमिकता है, लेकिन क्या वे सहमत होंगे? आप कौन सा सबूत पेश कर सकते हैं जो दिखाता है कि आप ने, अपनी पत्नी और बच्चों को अपने काम से, पहले रखा है? क्या आपकी पत्नी कहेगी कि वह आपकी सेवकाई या कार्य से अधिक महत्वपूर्ण है? क्या वह उदाहरण दे सकती है जब आप ने उसे अपनी जरूरतों से पहले उसे रखा हो ? क्या आपके बच्चे कहेंगे कि वे जानते हैं कि वे आपके लिए आपकी सेवकाई से अधिक महत्वपूर्ण हैं? प्रत्येक के लिए व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना करें, उनकी आवश्यकताओं, उनकी कमजोरियों और उनके भविष्य को प्रार्थना में प्रभु के सामने लाएं।*

हमने उन कर्तव्यों पर ध्यान दिया है जो मसीही अगुओं को स्वयं के प्रति, परमेश्वर के प्रति, और अपनी पत्नियों और बच्चों के प्रति पूरा करना हैं। अब हम अपनी कलीसिया में उन लोगों के प्रति अपने कर्तव्यों को देखेंगे।

IV. अपनी कलीसिया के प्रति कर्तव्य

क. भेड़ों के प्रति चरवाही का कर्तव्य

यीशु पादरी- 'पास्टर' शब्द का वास्तव में अर्थ है 'चरवाहा'। यीशु महान चरवाहा है (यूहन्ना 10:11; 1 पतरस 2:25; 5:4; इब्रानियों 13:20) और इसे महान पादरी भी कहा जा सकता है। वह हमारा पादरी है, जिसकी उदाहरण का अनुसरण हर पादरी करता है। जैसे वह हमारी परवाह करता है, वैसे ही हमें भी जो कलीसियाओं के पादरी हैं उन्ह भेड़ों की देखभाल करनी चाहिए जिन्हें वह हमें एक कर्ज़ के तौर पे देता है। वे उसकी भेड़ें हैं और हम उसके लिए उनकी देखभाल करते हैं, जैसे वह हमारी देखभाल करता है। वह वरिष्ठ पादरी हैं; हम उसके सहायक पादरी हैं। जो हम उसके लिए करते हैं,हमें वह सब करना चाहिए, जो कुछ भी हम योजना बनाते हैं हम उसके बारे में उससे बात करें, और सुनिश्चित करें कि जो कुछ भी होता है उसके लिए सारी महिमा उसी को मिले।

एक चरवाहा क्या है- "चरवाहा " एक ऐसा शब्द है जो एक पादरी की भूमिका और कर्तव्य को सबसे अच्छी तरह से सारांशित करता है ।" परमेश्वर आज्ञा देता है, "परमेश्वर की कलीसिया के चरवाहे बनो, जिसे उस ने अपने लहू से मोल लिया है" (प्रेरितों के काम 20:28)। नया नियम यूनानी में लिखा गया था, और "चरवाहे के लिए यूनानी शब्द (पोइमेन) "पादरी" के लिए प्रयोग किया जाता है। यह एक ऐसी शब्दावली है जिसमें एक पादरी के सभी कर्तव्यों को शामिल कीया गया है। परमेश्वर शाब्दिक तौर से कह रहा है, "पादरी, भेड़ों के चरवाहों की तरह कार्य करें। तेरी प्रजा के प्रति तेरे कर्तव्य वैसे ही हैं जैसे एक चरवाहे के अपनी भेड़ों के प्रति होते हैं ।"

अगर हमें यीशु की तरह चरवाहा बनना है, तो हमें लोगों की कदर उसी तरह करनी चाहिए जैसे वह करता था । वह उनके पास था और वे जानते थे कि वह उनकी परवाह करता है (मत्ती 9:9-12)। वह जानता था कि उसका उद्देश्य लोगों को उद्धार और आत्मिक विकास की ओर लाना है (लूका 19:9-10)। हमारा मकसद एक ही है। यह किसी बड़े चर्च का निर्यामाण करना या प्रसिद्ध प्रतिष्ठा को पाना नहीं है। यह लोगों को यीशु के पास लाने और उन्हें बढ़ने में मदद करने के लिए है। यीशु ने एक सेवक के रूप में ऐसा किया।

एक चरवाहे का काम सम्मोहक या रोमांचक नहीं है, बल्कि कठिन, गंदा काम है। यह अज्ञानी, रक्षाहीन और असहाय भेड़ या बकरियों की सेवा करने का काम है। फिर भी यह महत्वपूर्ण, ईमानदारी का काम है। दाऊद एक चरवाहा था, वैसे ही मूसा, राखल, याकूब और हाबिल भी थे। यह चरवाहे ही थे जिन्होंने सबसे पहले यीशु के जन्म के बारे में सुना - और स्वयं स्वर्गदूतों से! चरवाहे अपनी भेड़ों को अलग-अलग जानते थे, उन्हें नाम से बुलाते थे। भेड़ें अपने चरवाहे की आवाज को पहचानती और उसका जवाब देतीं लेकिन दूसरों की आवाज़ का नहीं। एक अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए समर्पित होता था, अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन भी बलिदान करने तक। यही कारण है कि परमेश्वर हमारी देखभाल किये जाने में आपने आप का वर्णन करने के लिए एक चरवाहे का उपयोग का करता है (भजन 23), जैसा कि यीशु करता है (यूहन्ना 10:11-13)।

जबकि शब्द "चरवाहा" एक पादरी को संदर्भित करता है, यह किसी ऐसे व्यक्ति का भी वर्णन करता है जो अन्य विश्वासियों का प्रभारी है। विश्वासियों के समूह की सेवकाई वाला कोई भी व्यक्ति उनका चरवाहा होता है। एक पिता अपने परिवार का चरवाहा होता है, और एक माँ अपने बच्चों की चरवाहा होती है।

बाइबल के ज़माने में चरवाहे भेड़ों के मालिक के लिए काम किया करते थे। भेड़ें उनके लिए एक कर्ज के तौर पे होती थीं। परमेश्वर वह स्वामी है जिसके सभी मसीही लोग हैं। वह आपना प्रतिनिधित्व कराने के लिए, आपने लिए पृथ्वी पर अपना कार्य कराने के लिए चरवाहों को नियुक्त करता है। भेड़ें हमारी नहीं हैं, वे उसकी हैं।

पुराने नियम में जब परमेश्वर को कुछ करने की आवश्यकता होती थी, तो वह अक्सर एक चरवाहे को पकड़ लेता था। जब उसने एक महान राष्ट्र की स्थापना करनी चाही , तो उसने आब्राहाम नाम के एक चरवाहे को ऊर से बुलाया। जब उसने इस्राएल के गोत्रों को जन्म देना चाहा, तो उसने याकूब नाम के एक चरवाहे की ओर रुख किया। जब उसने मिस्र में अपने लोगों की रक्षा करना चाहा, तो उसने यूसुफ नाम के एक चरवाहे को बुलाया। जब वह चाहता था कि कोई यहूदियों को मिस्र से बाहर ले जाए, तो उसने मूसा नाम के एक चरवाहे को चुना। और जब उसने एक पुरूष को राजा बनाना चाहा, तो उसे दाऊद नाम के बेतलेहेम की पहाड़ियों पर एक जवान चरवाहा मिला।

इसीलिए जब यीशु ने इस्राएल राष्ट्र के साथ अपने संबंध का वर्णन करने के लिए एक रूपक चाहा, तो उसने कहा, "अच्छा चरवाहा मैं हूँ" (यूहन्ना 10:11)। यह एक ऐसी छवि थी जिसे उनके सुनने वाले आसानी से समझ सकते थे। इब्रानियों 13:20 उसे "भेड़ों का वह महान चरवाहा" कहते हैं। और 1 पतरस 5:4 उसे "मुख्य चरवाहा" कहता है।

एक चरवाहा परमेश्वर द्वारा बुलाया जाता है - आप कैसे जानते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि आप एक पादरी या कलीसिया का अगुवा बनें? आप कैसे जान सकते हैं कि उसने आपको अपनी सेवकाई के लिए चुना है? उसकी बुलाहट पर संदेह करना खासकर तब होता है जब हम जीवन और सेवकाई में कठिनाइयों का सामना करते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हमें मालूम हो कि उसने हमें नेतृत्व करने के लिए चुना है ताकि हम विश्वासयोग्य बने रहें चाहे हम किसी भी परिस्थिति से हो कर क्यों ना गुजरें। परमेश्वर पहले हमें उद्धार के लिए बुलाता है (यूहन्ना 6:44), फिर वह हमें सेवा के लिए बुलाता है (मत्ती 9:9; प्रेरितों के काम 13:2; मरकुस 1:16; यिर्मयाह 1:5; रोमियों 1:1)।

हम महसूस करते हैं कि परमेश्वर की सेवा करने की आंतरिक इच्छा के रूप में, विश्वासियों को उनके विश्वास में बढ़ने में मदद करने को सेवकाई कहा जाता है। पासबानी का उपहार हमें दूसरों को आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होने में मदद करने में सक्षम बनाता है।

मुझे याद है कि जब मैं जवानी के आलम में था उस समय परमेश्वर ने मेरे दिल में यह इच्छा रखी थी। मुझे नाम कमाने या पैसा बनाने की इच्छा नहीं थी, मैं दूसरों की सेवा करने में परमेश्वर की सेवा करना चाहता था। जब मैं पासबानी नहीं कर रहा था, तो मुझे खालीपन, उद्देश्य की कमी महसूस होती थी। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 9:16 में इसका वर्णन किया, "यदि मैं प्रचार ना करूं तो मुझ पर हाय।" जहां तक मेरी बात है, मुझे पता था कि सेवा करना ही मेरा एकमात्र काम होगा। हालाँकि, सेवकाई में कई ऐसे हैं जिन्हें अपने बिलों का भुगतान करने के लिए पार्ट टाइम काम करना पड़ता है, लेकिन उनके भीतर यह इच्छा अभी भी है कि वे कब और कैसे सेवा कर सकते हैं।

जब परमेश्वर किसी व्यक्ति के भीतर सेवा करने के लिए उपहार और इच्छा रखता है, तो अन्य लोग जल्द ही इस देख लेंगें । सेवक बनने के अवसर प्राप्त होंगे। लोग सलाह, परामर्श, सूचना या मार्गदर्शन के लिए आएंगे। आपको किसी तरह सिखाने या नेतृत्व करने के लिए कहा जाएगा। भेड़ें एक देखभाल करनेवाले चरवाहे को पहचान लेंगी, और यह बात परमेश्वर की भेड़ों के बारे में भी सच है।

याद रखें, परमेश्वर उन लोगों की तलाश में है जो उसकी सेवा करने के लिए उपलब्ध हैं और आध्यात्मिक रूप से बढ़ने में दूसरों की अगुवाई करते हैं। एक व्यक्ति का कौशल या क्षमता जो भी हो, वह हमें अपनी चाहत के अनुसार काम करने के लिए आवश्यक उपहार और ज्ञान देता है। वह योग्य को नहीं चुनता, वह चुने हुए को योग्य बनाता है ।

यह भी याद रखें कि जब परमेश्वर आपको बुलाता है, तो वह आपको उन लोगों से प्यार करने के लिए बुलाता है जिन्हें वह प्यार करता है। हमें किसी चर्च की इमारत के लिए नहीं बुलाया जाता है, बल्कि उन लोगों के लिए बुलाया जाता है जो मिलकर एक चर्च बनते हैं। जब वह विश्वासियों के एक समूह के लिए आप में प्रेम डालता है, तो आप यह जान सकते हैं कि वह आप से विश्वासियों के किस हिस्से का नेतृत्व करना चाहता है । वह लोगों से प्रेम करता है, और वह उस प्रेम में से कुछ हिस्से को हम में भरता है ताकि वह हमारे द्वारा उनसे प्रेम कर सके। यदि आप उन लोगों के लिए प्रेम नहीं रखते जिनका आप नेतृत्व करते हैं, तो उनकी सेवा करना बहुत कठिन होगा। जब पति-पत्नी के बीच प्यार ना हो तो आप शादी को पूर्ण नहीं कर सकते। परमेश्वर को उन लोगों के लिए अपना प्यार देने के लिए कहें जिनकी आप सेवा करते हैं। एक अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों से प्यार करता है, और एक अच्छा पादरी अपने लोगों से प्यार करता है।

यदि परमेश्वर आपको सेवकाई के लिए बुला रहा है, तो सुनिश्चित करें कि आप उसका अनुसरण करतें है। मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूं जो जानते थे कि उन्हें पासबन होने के लिए बुलाया गया था, लेकिन उन्होंने कभी भी बुलाहट का पालन नहीं किया। वे जीवन भर पछताते रहे। उन्होंने परमेश्वर को "ना " तो नहीं कहा, उन्होंने बस आज छोड़ कल के दिन अनुसरण कर लेंगे कह कर काम बंद कर दिया - लेकिन वह कल का दिन कभी नहीं आया। अपनी भेड़ों की चरवाही करने की बुलाहट कोई सुझाव या विकल्प नहीं है, यह एक आज्ञा है (मीका 7:14; प्रेरितों के काम 20:28; 1 पतरस 5:2)।

इसे लागु करने में प्रशन : *क्या कोई निश्चित समय था जिसे आप याद कर सकते हैं जब आपको लगा कि आपको एक पादरी बनने के लिए बुलाया गया है ? आपको कैसे पता चला कि आपके लिए उसका उद्देश्य यही था? आपको एक पादरी होना चाहिए, क्या आपको कभी इसमें संदेह हुआ? क्यों? आप दूसरे पादरियों को क्या कहेंगे जिन्होंने अपनी बुलाहट पर संदेह किया? आपको एक पादरी के रूप में उसकी सेवा करने को चुनने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए कुछ मिनट निकालें। ईमानदारी से उसकी सेवा करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करें।*

एक चरवाहे का अभिषेक कीया जाता है - प्रारंभिक कलिसियों ने उन लोगों का अभिषेक कीया जिनकी स्थानीय कलिसियों में पादरीयों के रूप में स्थापना और पहचान की जाती थी । पौलुस और बरनबास के पास एक विशेष समारोह था जो उनके जीवनों के लिए परमेश्वर की बुलाहट को पहचान देता था और उन्हें इसके लिए अलग करता था (प्रेरितों के काम 13:3)। ऐसा ही तीमुथियुस के साथ हुआ (1 तीमुथियुस 4:14; 2 तीमुथियुस 1:6)। अगुवों द्वारा उन पर हाथ रखने और उन्हें प्रार्थना में भी परमेश्वर के कार्य के लिए समर्पित करने के द्वारा डीकनो की स्थापना की जाती थी (प्रेरितों के काम 6:6)। जो लोग अभिषेक करते हैं, वे उनके लिए प्रार्थना करने के लिए जिमेदार होते हैं जिनका वे अभिषेक करते हैं ,और यदि वे सच्चाई से भटक जाते है तो उन्हें इसके लिए दोषी ठहराने के लिए भी जिम्मेदार होते हैं। एक अभिषिक्त व्यक्ति सलाह मशवरे या किसी भी प्रकार की सहायता के लिए उनके पास हमेशा जा सकता है। पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी कि नए विश्वासियों को नियुक्त ना करें क्योंकि वे घमंड और पाप करने को परीक्षा में पड़ सकते हैं (1 तीमुथियुस 5:22)।

बाइबल ठीक-ठीक यह नहीं बताती कि अभिषेक कैसे कीया जाता था , क्योंकि इसका पालन करने के लिए कोई निर्धारित रूप नहीं है। अभिषिक्त किए जाने वाले व्यक्ति की पहचान और समर्थन अगुवों द्वारा उसके ऊपर हाथ रखकर दिखाया जाता है। प्रार्थना भी इसी का हिस्सा है।

आमतौर पर आज यह पादरियों के एक समूह के साथ-साथ शामिल कलीसिया के अगुवों द्वारा किया जाता है। उन्हें उस आदमी की इतनी अच्छी तरह से जानकारी होनी चाहिए कि वह उसकी बुलाहट, ईश्वरीय जीवन और बाइबल ज्ञान की पुष्टि करने में सक्षम हो। समारोह में ही इन लोगों को शामिल किया जाना चाहिए और इसे शामिल विश्वासियों की मंडली के सामने किया जाना चाहिए।

एक चरवाहा जीवनभर के लिए एक चरवाहा है - जब कोई व्यक्ति दूसरों का चरवाहा बन जाता है, चाहे वह एक कलीसिया का पुरुष हो या अन्य महिलाओं और बच्चों के लिए कोई महिला हो, यह उसकी जीवन भर की बुलाहट है। हो सकता है कि वे हमेशा एक चर्च में पासबान की भूमिका ना निभा सकें , लेकिन सेवानिवृत्ति में भी उनके पास दूसरों को पासबानी करने का उपहार और बुलाहट है जहाँ तक वे ऐसा करने में सक्षम हैं। एक पादरी बनना एक जीवनभर की बुलाहट है, ना कि केवल एक सौंपा हुआ कार्य ।

शायद एक समय ऐसा आएगा जब एक आदमी अपनी मंडली की अगुवाई करने और उसे खिलाने के लिए जो ज़रूरी हो सब कुछ नहीं कर पाएगा। खुद पीछे हटने से और एक जवान आदमी को बेहतर तरीके से कार्यभार की जिमेदारी लेने की अनुमति देने से कलीसिया की ज़रूरतें पूरी होती हैं। मैं 70 वर्ष की आयु तक पासबानी करता था। मैं 35 वर्षों तक अपने आखरी चर्च में था। वह समय आया जब मुझे पता चला कि मेरे पास वह करने के लिए ऊर्जा और सहनशक्ति नहीं है जिसकी जरूरत है। परमेश्वर ने मेरे साथ काम करने और अंततः कार्यभार संभालने के लिए एक युवा पादरी को भेजा। मैं अब भी जितना हो सके उतनी सेवकाई करता हूँ, लेकिन उतना नहीं जितना युवावस्था में करता था। मैं अपने अनुभव और उपहारों का उपयोग उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कर सकता हूं जहां मैं प्रभावी हो सकता हूं। मेरी सेवकाई अब मात्रा से बढ़कर गुणवत्ता वाली है।

एक आदमी के लिए अपनी क्षमता से बढ़ कर पासबानी करते रहने में वो सब करना जो आवश्यक हो लोगों के लिए सही नहीं होता है। प्रत्येक कलीसिया एक सर्वश्रेष्ठ पासबान की हकदार है जो उनका नेतृत्व करने और उन्हें खिलाने के लिए हो। इसके अलावा, सेवानिवृत्ति एक व्यक्ति को परिवार और दोस्तों का आनंद लेने के लिए और अधिक समय दे सकती है, जबकि वह अभी भी जिस तरह से वह सक्षम है, उसमें सेवकाई करे। हमें जीवन भर अपनी क्षमता के अनुसार परमेश्वर की सेवा करनी है, लेकिन जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, हमारी ताकत और ऊर्जा कम होती जाती है।

एक चरवाहा एक विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति है - भेड़ या बकरियों को चराना आज दुनिया में सबसे आसान काम नहीं है, लेकिन एक पादरी होना आसन है! ऐसा कहा गया है कि अगर परमेश्वर आपको पादरी बनने के लिए बुलाता है, तो आपको राजा बनने के लिए नीचे गिरना नहीं चाहिए। परमेश्वर के लोगों की रखवाली करना एक महान विशेषाधिकार और सम्मान है (1 तीमुथियुस 3:1)।

एक चरवाहा उपहारित कीया जाता है - एक अच्छा पादरी होने के लिए परमेश्वर द्वारा दी गई इच्छा से अधिक करने की आवश्यकता होती है, लेकिन कर्तव्यों को पूरा करने के लिए कौशल और क्षमता की भी आवश्यकता होती है। जब परमेश्वर किसी को कुछ करने के लिए बुलाता है, तो वह उसे करने के लिए सुसज्जित भी करता है। जब परमेश्वर हमें भेड़ों की अगुवाई करने के लिए बुलाता है, तो वह हमें नेतृत्व या रखवाली की योग्यताओं से इसके योग्य भी करता है।

उद्धार के क्षण में परमेश्वर हमें अनेक आशीषें और विशेषाधिकार देता है। इसमें आध्यात्मिक उपहारों का एक अनूठा सेट शामिल है जिसकी हमें उसकी सेवा करने में आवश्यकता होती है (1 कुरिन्थियों 12:1-31)। ये उपहार ऐसे उपकरण हैं जिनका उपयोग पवित्र आत्मा हमें उसके लोगों की देखभाल करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करने के लिए करता है। प्रत्येक विश्वासी के पास आत्मिक वरदानों का एक अनूठा समूह होता है (1 कुरिन्थियों 12:12-27)। परमेश्वर जो वर्तमान उपहार देता है उनमें सुसमाचार प्रचार, बाइबल शिक्षण, दूसरों की सेवा करना, आतिथ्य सत्कार, दूसरों की मदद करना, प्रशासन और दूसरों के मसीही जीवन में उनकी मदद करने के विभिन्न तरीके शामिल हैं (रोमियों 12:6–8; 1 कुरिन्थियों 12:4–11; 1 कुरिन्थियों 12 :28; इफिसियों 4:11)।

आध्यात्मिक उपहार प्रतिभाएं नहीं हैं। केवल विश्वासियों के पास आध्यात्मिक उपहार होते हैं। ये उपहार हमारे आनंद के लिए नहीं हैं, बल्कि दूसरों की सेवा करने के लिए हैं, ताकि मसीह की देह का निर्माण हो (इफिसियों 4:11-12)। प्रत्येक विश्वासी के पास विभिन्न उपहारों का एक संयोजन होता है जो दूसरों से भिन्न होता है (रोमियों 12:6-8)। दुर्भाग्य से, सभी मसीही अपने उपहारों का विकास और उपयोग नहीं करते हैं। जबकि ऐसा करना एक लापरवाही होती है, जिससे विश्वासियों के पूरे झुंड को नुकसान होता है।

जिनको पासबान होने के लिये बुलाया जाता है उन्हें पासबानी करने का वरदान दिया जाता है ताकि वे दूसरों की अगुवाई करें , आत्मिक भोजन खिलाएं और देखभाल कर सकें (प्रेरितों के काम 20:28; यिर्मयाह 3:15; 1 पतरस 5:1-4)। इस उपहार में परमेश्वर के लोगों को उनके विश्वास में परिपक्वता के लिए नेतृत्व और मार्गदर्शन करने की इच्छा और क्षमता शामिल है।

सभी पादरियों को एक जैसा उपहार नहीं दिया जाता है। परमेश्वर हमें पासबानी के अलावा कई उपहारों का मिश्रण देता है। कुछ पादरी सुसमाचार प्रचार में कुशल होते हैं जबकि अन्य नए विश्वासियों को सिखाने में बेहतर होते हैं। कुछ नए चर्च शुरू करने में अच्छा काम करते हैं, अन्य पहले से स्थापित चर्चों की पासबानी करने में बेहतर होते हैं।

फिर भी अन्य सक्षम सलाहकार होते हैं, कुछ साहसी प्रार्थना योद्धा होते हैं, और कुछ उत्साही उपासक होते हैं। प्रत्येक पासबान और अगुवा अलग होता है (रोमियों 12:6-8)। सभी पासबानी की इच्छा साझा करते हैं, लेकिन प्रत्येक को अलग-अलग तरीकों से ऐसा करने का उपहार दिया जाता है। इस वजह से, परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी पादरी अपनी तुलना अन्य पादरियों से करें; वह हमसे उन उपहारों का उपयोग करने की उम्मीद करता है जो उसने हमें दिए हैं। जिस तरह से उसने आपको उपहार दिया है, उसमें होकर ही परमेश्वर की सेवा करने से बड़ा कोई विशेषाधिकार नहीं है।

रखवाली या पासबानी के उपहार और पासबान के कार्यालय के बीच एक अंतर है। कलीसिया में बहुतों के पास रखवाली करने का वरदान होगा। जो बुजुर्गों या बच्चों की सेवा करते हैं, जो दूसरों को सलाह देते हैं या उनको शिष्य बनाते हैं, जो शिक्षा देते हैं या अन्य तरीकों से नेतृत्व करते हैं-सभी के पास पासबानी या रखवाली का उपहार हो सकता है। महिलाएं अन्य महिलाओं और बच्चों की सेवा कर सकती हैं। युवा लोग अपनी उम्र या कम उम्र के लोगों को विश्वास में बढ़ने में मदद कर सकते हैं। प्रत्येक कलीसिया को पासबानी के आध्यात्मिक उपहार के साथ बहुत से लोगों की आवश्यकता होती है। नहीं तो सारी जिम्मेदारी एक आदमी पर आ जाती है। कोई एक मनुष्य सब कुछ नहीं कर सकता, सेवकाई- भार को बटना चाहिए (इफिसियों 4:11-12)।

हालांकि, आमतौर पर केवल एक आदमी पादरी का पद भरता है। वह चर्च की देखरेख करता और निर्देशन करता है। कभी-कभी दो व्यक्ति ऐसा करने वाली एक टीम के रूप में एक साथ काम कर सकते हैं और विश्वासियों के एक समूह पर पादरी के कार्यालय को साझा कर सकते हैं। अन्य पुरुष मदद कर सकते हैं, सहायक पादरी बन सकते हैं, और सही मायने में उन्हें "पादरी" कहा जा सकता है। नेतृत्व की ज़िम्मेदारी बाँटी जा सकती है, ख़ासकर बड़ी कलीसियाओं में। लेकिन अंतिम जिम्मेदारी हमेशा कार्यालय प्रभारी व्यक्ति पर आती है।

इसे लागु करने में प्रशन : *परमेश्वर ने आपको कौन से आध्यात्मिक उपहार दिए हैं (विशिष्ट रहें)? आप सेवकाई में सबसे मजबूत कहाँ हैं? आप सबसे कमजोर कहाँ हैं? अपने उपहारों को और विकसित करने के लिए आप क्या कर रहे हैं?*

क्या महिलाएं रखवाला हो सकती हैं? कई महिलाओं को रखवाली करने का उपहार मिलता है और वे कलीसिया में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे अन्य महिलाओं और बच्चों की सेवा करती हैं (तीतुस 2:3-5)। वे मनुष्यों को सलाह तो दे सकती हैं, परन्तु उन पर नेतर्त्व नहीं कर सकती (1 तीमुथियुस 2:9-14)। कलिसियों में अंतिम आध्यात्मिक अधिकार पुरुषों के लिए आरक्षित है। स्त्रियाँ शिक्षा दे सकती हैं (तीतुस 2:3; प्रेरितों के काम 18:25-26) और कई तरह से सेवकाई कर सकती हैं, लेकिन पुरुषों की अगुवाई नहीं कर सकतीं।

एक चरवाहा को फैलाया जाता है -भेड़ों को चराना एक कठिन और अक्सर कठिन काम होता है। यह कभी-कभी मति-मंद और उबाऊ भी हो सकता है, और कभी-कभी रोमांचक या खतरनाक भी हो सकता है। कुछ हिस्से सुखद होते हैं, अन्य बहुत ही दूखदयक । परमेश्वर हमारे विश्वास को बढ़ाने और हमें पूरी तरह से उस पर निर्भर होने के लिए प्रेरित करने के लिए पासबानी का उपयोग करता है। परमेश्वर हमें फैलाने और हमारे विश्वास को बढ़ाने के लिए पासबानी का अपने तरीके के रूप में उपयोग करता है। हमें परिपक्व बनाने के लिए वह उन लोगों का उपयोग करता है जिनकी हम अगुवाई करते हैं ! वह हमें हमारे आराम क्षेत्र से बाहर निकालता है ताकि हम बढ़े और यीशु की तरह बनें। हमारे जीवनों में यही उसका उद्देश्य है (फिलिप्पियों 1:5-6)।

इसे लागु करने में प्रशन : *आप आलोचना से कैसे निपटते हैं? जब आलोचना की जाती है तो आपके लिए शालीनता से प्रतिक्रिया देना सबसे कठिन कब होता है? क्या कोई ऐसा है जिसे, आपको, उसके द्वारा कही या की गई किसी बात के लिए, क्षमा करने की आवश्यकता है?*

एक चरवाहे को मसीह के समान होना चाहिए - जब दाऊद एक चरवाहा था, उसने अपनी भेड़ों की रक्षा करने में एक शेर और एक भालू को मार डाला (1 शमूएल 17:34-36)। परमेश्वर उसे गोलियत से लड़ने के लिए तैयार करने के लिए इन हालातों का उपयोग कर रहा था (1 शमूएल 17:1-54)। उसने परमेश्वर की शक्ति में लड़ना और जीत के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहना सीखा था । उसके लोगों के चरवाहों के रूप में जिन हालातों का हमें सामना करना पड़ता है वह उनका उपयोग हमारे विश्वास को बढ़ाने के लिए भी करता है । परमेश्वर उन चीजों को हमारे जीवन में आने देता है जिन्हें हम संभाल नहीं सकते इसलिए कि हम मदद के लिए उसके पास जाएं। जब परिस्थितियाँ कठिन होती हैं और हमें संदेह होता है कि क्या हम परमेश्वर के लोगों का नेतृत्व कर सकते हैं, तो हमें परमेश्वर द्वारा चुने गए और बुलाए गए होने को याद रखने की आवश्यकता है, और साथ ही साथ हमें उस पर निर्भर रहने की आवश्यकता है। परमेश्वर हम पर और हमारे अंदर कार्य करता है, ताकि हम जैसे बढ़ते हैं वैसे ही वह दूसरों को बढ़ने में मदद करने के लिए हमारे माध्यम से कार्य करता है (फिलिप्पियों 1:6)। उसका उद्देश्य हमें यीशु के समान बनाना है।

एक चरवाहे को विश्वासयोग्य होना चाहिए -परमेश्वर के लिए जीना कठिन हो सकता है। यशायाह या यिर्मयाह या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से पूछिए। कभी-कभी ऐसा लगता है कि हमारी बातों और गवाहीओं का कोई असर नहीं हो रहा है। परिणाम हलके हो सकते हैं। अक्सर, बीज बोए जाते हैं और परिणाम हो सकता है कि वर्षों बाद तक भी नहीं दिख सकते हैं। वैसे भी वफादार रहो। निराशा, जो शैतान का अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला हथियार है, एक निरंतर बना रह सकता है। परमेश्वर अपनी दया में हमें उन जीवनों में परिवर्तन की झलक देखने की अनुमति देता है जिन्हें हम छूह लेते हैं, और यह बहुत अच्छी बात है। अक्सर ऐसा लगता है कि हमारे जीवन साथियों को छोड़कर कोई भी वास्तव में यह ना तो समझता है और ना उसकी सराहना करता है जो कुछ हम करते हैं, और निपटने के लिए अक्सर उनके अपने संघर्ष होते हैं। याद रखो ; परमेश्वर जानता है कि हम क्या करने का प्रयास करते हैं, हालांकि शायद हम हमेशा आपने आप को सफल होते महसूस ना करें ।

हम जानते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि हम जो करते हैं उसमें विश्वासयोग्य रहें और परिणाम उस पर छोड़ दें। दिलों और ज़िंदगी को बदलना उसका काम है, हमारा नहीं। हमें ईमानदारी से उसकी सेवा करनी है, उसकी सेवकाई में रहना है। वह यही देखता है - हमारी विश्वासयोग्यता। परमेश्वर हमारी तुलना एक दूसरे से नहीं करता (शुक्र हो !), वह सिर्फ हमारी तुलना हमरे खुद से करता है । अगर हम ईमानदारी से उसकी सेवा करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, तो वह हमसे उत्सुक है। परमेश्वर हमारा मूल्यांकन हमारे द्वारा किए गए कार्य के परिणामों से नहीं करता है, बल्कि हमारी सेवा की विश्वासयोग्यता से करता है। आखिरकार, 2 तोड़े वाले नौकर को स्वामी से 10 तोड़ों वाले नौकर के जैसे ही "शाभाश" मिली (मत्ती 25:19-23)! कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की सेवा तब कर सकता है जब चीजें बहुत अच्छी होती दिख रही हों, लेकिन जब हम परिणाम नहीं देखते हैं पर ईमानदारी से सेवा करते है तो परमेश्वर को अधिक खुशी मिलती है और हमें अधिक इनाम मिलता है। एक कागज के टुकड़े पर यह लिखें और उसे वहीं रखें जहाँ आप इसे हर दिन देख सकते हैं: **"परमेश्वर मेरा मूल्यांकन मेरी विश्वासयोग्यता से करता है, मेरी प्रभावशीलता से नहीं।"** फिर बस अपनी तरफ से सर्वश्रेष्ठ करें और परिणाम उस पर छोड़ दें!

एक चरवाहे को पुरस्कृत किया जाता है- परमेश्वर कहता है कि वह उन्हें आशीष देगा और उन्हें प्रतिफल देगा जो ईमानदारी से सेवा करते हैं (लूका 12:37)। हम सभी उसे यह कहते हुए सुनना चाहते हैं: "धन्य, अच्छे और विश्वासयोग्य दास" (मत्ती 5:21-23)। जब हम अपने जीवन के अंत में आते हैं तो हम यह कहने में सक्षम होना चाहते हैं जो 2 तीमुथियुस 4:7-8 में पौलूस कहता है "मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूं, मैंने दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास बनाये रखा है।" परमेश्वर उन लोगों के लिए एक विशेष मुकुट की प्रतिज्ञा करता है जो विश्वासपूर्वक उसके लोगों की रखवाली करते हैं (1 पतरस 5:2-4)। अपने लोगों की पासबानी करनी क्या ही बड़ा सौभाग्य है। वह हमें इस जीवन में आशीर्वाद देता है और फिर हमें अनंत काल में पुरस्कृत करता है।

इसे लागु करने में प्रशन : *क्या आप अपनी सेवकाई के फल से अपनी प्रभावशीलता का मूल्यांकन कर रहे हैं? क्या आप बाहरी परिणामों से जिनको आप देख सकते हैं उनके लिए निराश हैं ? परमेश्वर का धन्यवाद करें कि दृश्यमान परिणामों से नहीं बल्कि आपकी विश्वासयोग्यता के द्वारा आपकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है । अपने स्वयं के अतीत में उन लोगों को याद करें जिनकी वफादार सेवा ने आपको प्रभावित किया (शायद उनके लिए एक बार धन्यवाद देना -उनके द्वारा बहुत सराहनिए होगा)। किसी दृश्यमान परिणाम ना होने पर भी ईमानदारी से उसकी सेवा करने के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध करें।*

ख. भेड़ों की रक्षा करने का कर्तव्य

चरवाहा एक रक्षक के रूप में - एक चरवाहे के सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक है, अपनी भेड़ों की रक्षा करना। भेड़ें रक्षाहीन होती हैं और अपनी रक्षा नहीं कर सकती और ना लड़ाई कर सकतीं है, वे बचने के लिए भागना या छिपना नहीं जानती हैं। उन्हें अपनी रक्षा और सुरक्षा के लिए किसी की जरूरत होती है। दाऊद की भेड़ों को शेरों और भालुओं से बचाने के लिए उसकी आवश्यकता होती थी (1 शमूएल 17:34-36)।

मसीही लोगों के रूप में, हम सब भेड़ों के समान हैं (यशायाह 53:6)। हम सभी को एक चरवाहे/रखवाले की आवश्यकता है, और यीशु हमारा चरवाहा/रखवाला है (भजन 23: यूहन्ना 10:11-18)। परमेश्वर एक आदर्श उदाहरण है कि एक चरवाहे को क्या होना चाहिए और क्या करना चाहिए (भजन संहिता 23)। हमारा चरवाहा होने के रूप में वह हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है (वचन 1)। वह हमें विश्राम और जीवनदायी पोषण के स्थानों की ओर ले जाता है (वचन 2)। उसकी देखभाल के कारण उसकी भेड़ों को शांति मिलती है (वचन 3)। वह हमें पवित्र जीवन जीने में सक्षम बनाता है (वचन 3) और जब मृत्यु निकट आती है तो हमें आराम देता है (वचन 4)। वह अपनी भेड़ों का मार्गदर्शन करता है और शिष्य बनाता है (वचन 4)। हमारा चरवाहा होने के रूप में वह , अतिअधिक विरोधता होने पर भी विजय प्राप्त करने में, हमारी मदद करता है (वचन 5)। वह हमें आशीष देता है (वचन 5) और हमें इस जीवन के लिए और आने वाले जीवन की आशा से भर देता है (वचन 6)। भेड़ के रूप में हमें एक चरवाहे में यही सब चाहिए होता है । हमारी भेड़ों को भी यही चाहिए, और परमेश्वर हमारे मध्यम से चरवाहा बनने के लिए कार्य करता है जो इसे उनके लिए प्रदान करते हैं।

परमेश्वर अपनी भेड़ों को छोटे-छोटे झुंडों में विभाजित करता है जिन्हें कलिसियियाएं कहा जाता है। वह प्रत्येक समूह पर एक पासबान या चरवाहा रखता है। परमेश्वर अपनी भेड़ों की रक्षा के लिए अपने चरवाहे के माध्यम से कार्य करता है। भेड़ों को खतरे से, भेड़ियों और शेरों से, और उन से जो उन्हें उनके चरवाहे से चुरा कर ले जाना चाहते हैं, सुरक्षा की आवश्यकता है (1 पतरस 5:8)।

मसीहीयों को शैतान और उसके राक्षसों से सुरक्षा की आवश्यकता है। पादरियों को आध्यात्मिक युद्ध और शैतान और राक्षसों पर विजय पाने का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। उन्हें यह जानने की जरूरत है कि आध्यात्मिक युद्ध के सिद्धांतों को अपने जीवन के साथ-साथ अपनी कलीसिया में कैसे लागू किया जाए। उन्हें अपने लोगों को ये बातें सिखाने की ज़रूरत है ताकि वे भी जीत सकें। जब भी उन्हें अपनी सेवकाई में आवश्यकता होती हो, उन्हें इन उपकरणों का उपयोग कारन जरूरी है। (अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "आध्यात्मिक युद्ध" पुस्तक पढ़े।)

मसीहियों को झूठे शिक्षकों से भी सुरक्षा की ज़रूरत होती है। यीशु झूठे शिक्षकों को "भेड़ों के भेष में भेड़िये" कहता है (मत्ती 7:15; गलतियों 1:6-10)। वे दिखावा करते हैं कि वे मसीही हैं और सच्चाई की शिक्षा दे रहे हैं, लेकिन वास्तव में वे मसीहीयों को धोखा दे रहे होते हैं और उन्हें गलती और पाप में ले जा रहे होते हैं। परमेश्वर अपनी भेड़ों को उनसे बचाने के लिए चरवाहों/रखवालों का उपयोग करता है।

हमें भेड़ों को उनकी अपनी गलतियों और पापों से भी बचाना है। भेड़ें गूंगी जानवर हैं और इधर उधर भटकेंगी और खो जाएंगी। मसीही लोग भी उसी तरह हैं और जब तक कोई उन पर नजर रखने के लिए ना हो, तब तक वे परमेश्वर और उसकी सच्चाई से दूर भटकेंगे। यह चरवाहों के कामों में से एक है।

निगेबान एक रक्षक के रूप में - "चरवाहा," या "पादरी" के अलावा, बाइबल में परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करने वालों के लिए अन्य शब्दों का भी उपयोग किया जाता है। उन्हें समझने से हमें अपने

कर्तव्यों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है और इसको कि परमेश्वर पादरियों/पासबानों से क्या उम्मीद करता है।

1 तीमुथियुस 3:1 कहता है, "यदि कोई निगेबान होने की इच्छा करता है , तो वह एक नेक काम चाहता है।" शब्द "निगेबान " एक ऐसा शब्द है जो अन्यजातियों में लोगों के समूह के अगुवा के लिए प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी इस शब्द का अनुवाद "बिशप" किया जाता है, लेकिन यह उसी व्यक्ति को "पादरी" (प्रेरितों 20:28) के रूप में भी संदर्भित करता है। बाइबल कभी भी "बिशप" शब्द का प्रयोग किसी ऐसे पादरी को संदर्भित करने के लिए नहीं करती है जो अन्य पादरियों के ऊपर है, इसका उपयोग हर उस व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसे पादरी या पासबान कहा जाता है।

निगेबानों को दी गई आज्ञा (जिनको बिशप और पादरी भी कहा जाता है) "जागते रहना" है (प्रेरितों के काम 20:28)। यह शब्द एक रात के पहरेदार के लिए प्रयोग किया जाता है जो शहर पर नजर रखता है। पादरी, या निगेबान, वह है जो विश्वासियों के समूह पर नजर रखता है। वह उनका रक्षक है।

ओवरसियर/निगेबान/पास्टर परमेश्वर की भेड़ों को शैतान से बचाता है (1 पतरस 5:8-10; इफिसियों 2:2-3; 6:11-18)। वह आत्मिक युद्ध को समझता है और जानता है कि शैतान और उसकी दुष्टात्माओं से अपनी और अपने लोगों की रक्षा कैसे की जाती है। (अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "आध्यात्मिक युद्ध पुस्तक" पढ़े।)

निगेबान/पादरी परमेश्वर की भेड़ों को झूठे शिक्षकों से भी बचाता है (मत्ती 7:15; गलतियों 1:6-10; प्रेरितों के काम 20:28-30)। उसे बाइबल में परमेश्वर की सच्चाई को जानना चाहिए ताकि वह उन लोगों के द्वारा दुश्मन के झूठ से धोखा ना खाए जो भेड़ होने का दिखावा करते हैं लेकिन वास्तव में भेड़िये हैं।

निगेबान/पासबान परमेश्वर की भेड़ों को उनके खुद से भी बचाते हैं। वह पाप की ओर इशारा करता है और परमेश्वर के सत्य का प्रचार करता है। वह लोगों को पाप से रोकने के लिए वचन सिखाता है। वह उन्हें, जो पाप में फंस जाते हैं, सुधारता है, डांटता है और उन्हें प्रोत्साहित करता है। यह पादरियों के महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं।

देखरेख के इस कार्य का वर्णन करने वाला एक अन्य शीर्षक है "भण्डारी" (1 कुरिन्थियों 4:1)। यूनानी भाषा के शब्द, "ओइकोनोमोस," का अर्थ है "प्रबंध करना" और इसका उपयोग घर के प्रबंधक के लिए किया जाता है। पौलुस पादरियों को "भण्डारियों" के रूप में संदर्भित करता है (1 कुरिन्थियों 4:1)। कलीसिया वह घर है जिसका प्रबंधन एक पादरी करता है (1 तीमुथियुस 3:15), परमेश्वर घर का स्वामी है और कलीसिया में विश्वासी घर के सदस्य हैं (गलातियों 6:10)।

इसे लागू करने में प्रशन : *क्या आप बाइबल को इतनी अच्छी तरह जानते हैं कि आप शैतान के झूठ और झूठी शिक्षाओं के बहकावे में आने से बच सकते हैं? क्या आप लगातार बाइबल के बारे में और अधिक सीख रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि शैतान और दुष्टात्माएँ आपके और आपकी सेवकाई के विरुद्ध कैसे कार्य करते हैं? क्या आप जानते हैं कि उनके हमलों पर विजय पाने के लिए आप को क्या करना चाहिए? क्या आप अपनी सेवकाई के लोगों को भीतरी और बाहरी पाप से बचा रहे हैं?*

चर्च अनुशासन -परमेश्वर पवित्र है और वह चाहता है कि उसकी दुल्हन भी पवित्र हो (1 पतरस 1:16)। शैतान उन लोगों के जीवन में पाप लाने की कोशिश करता है जो संगति में हैं (1 पतरस 5:8)। यह ना केवल उनको बल्कि पूरी कलीसिया को भी प्रभावित करता है (1 कुरिन्थियों 11:30)। परमेश्वर ने स्वयं हनन्याह और सफीरा को उनके पापों के लिए अनुशासित किया (प्रेरितों के काम 5:1-11)। पाप की

गंभीरता को दिखाने के लिए, और दूसरों को गुमराह होने से बचाने के लिए, परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम पाप करने वालों को चेतावनी दें। यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं तो हमें उन्हें कलीसिया के अगुवों तक ले जाना है, और यदि यह भी विफल हो जाता है तो हमें पूरी कलीसिया को सचेत करना है और उन्हें सदस्यता से हटा देना है (मत्ती 18:15-17)। पौलुस ने इसका अभ्यास तब किया जब उसने कुरिन्थ की कलीसिया को पाप में रहने वाले व्यक्ति को संगति हटा देने के लिए कहा (1 कुरिन्थियों 5:5)। शायद यह वही है जिसने सीखा और पश्चाताप किया होगा (2 कुरिन्थियों 2:5-11)।

इसे कैसे निपटा गया है, यह कलीसिया के संविधान में लिखा जाना चाहिए ताकि हर कोई प्रक्रिया को जान सके। जरूरत पड़ने पर इसे मजबूत रखने में मदद मिल सकती है। अगर इन चीजों को मजबूती से नहीं बल्कि प्यार से संभाला जाए तो और भी समस्याएं आ सकती हैं। इन स्थितियों में हमेशा प्रार्थनापूर्ण रहें। इनके लिए करुणा, ज्ञान और साहस की जरूरत होती है।

ग. भेड़ों को खिलाने/सिखाने का कर्तव्य

भेड़ों को खिलने की जिम्मेदारी- एक चरवाहे का एक मुख्य कर्तव्य यह सुनिश्चित करना है कि उसकी भेड़ों को उचित पोषण मिलता है। वह सुनिश्चित करता है कि उन्हें खिलाया जाता है ताकि वे स्वस्थ रहें। यह एक पादरी/चरवाहे का भी कर्तव्य है।

आपके शरीर को मजबूत और स्वस्थ रहने के लिए पोषण की आवश्यकता होती है। आपकी आत्मा को भी मजबूत और स्वस्थ रहने के लिए पोषण की आवश्यकता है। परमेश्वर हमें अपनी आत्मा को पोषण देने के लिए अपना वचन देता है। हमें अपने लोगों को भी उन्हें आपने आप को खिलाना सिखाना चाहिए। यीशु इसकी आज्ञा देता है (यूहन्ना 21:15-17)।

पौलुस एक पादरी को एक शिक्षक के रूप में संदर्भित करता है (इफिसियों 4:11-13)। शब्द "पादरी-शिक्षक" एक ऐसा शब्द है जो बाइबल सिखाने के लिए चरवाहे की जन्मजात/प्राकृतिक शिक्षण -जिम्मेदारी का उल्लेख करता है। हम दिन में कई बार खाते हैं, हर दिन। हमें, परमेश्वर के वचन की भी हर दिन, पूरा दिन आवश्यकता है। हमें अपने लोगों को बाइबल की शिक्षा देना भी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। यह सभी पादरियों के कर्तव्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। अगर एक पास्टर की भेड़ें भूख से मर जाती हैं तो उस ने जो कुछ भी कीया हो और वो जो कुछ भी करता हो, वो कोई मायने नहीं रखता । यदि भेड़ों को खिलाया नहीं जा रहा है, इसका मतलब है कि एक चरवाहा अपना कर्तव्य नहीं कर रहा है।

इफिसियों 4:11-13 यह स्पष्ट करता है कि पादरियों को भेड़ों को खिलाना है, ताकि वे कलीसिया की सेवकाई को पूरा कर सकें। पादरी को सब कुछ खुद नहीं करना है। इसके बजाय, उसे दूसरों को सेवकाई का काम करने के लिए प्रशिक्षित करना है। एक पास्टर से यह उम्मीद नहीं की जाती है कि वह प्रत्येक कार्य को स्वयं अपने ऊपर ले ले, परन्तु वह सेवकाई के कार्य की देखरेख के लिए जिमेदार है। हम किसी स्कूल में प्रिंसिपल, फैक्ट्री में मुखिया या परिवार में पिता की तरह होते हैं। हमें सब कुछ स्वयं करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु हम इसके जिम्मेदार हैं, कि ऐसा होता है (2 तीमुथियुस 2:2)। यीशु ने अपने शिष्यों को सेवकाई के कार्य को करने के लिए प्रशिक्षित किया (लूका 10:1-20), और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

बीमार भेड़ों को चंगा करना - आध्यात्मिक रूप से बीमार भेड़ों को चंगा करना और उन्हें स्वस्थ और फलदायक बनने में मदद करना, हमारी भेड़ों को खिलाने में शामिल है। भेड़ों के या लोगों के सभी चरवाहों का यही काम है। इफिसियों 4:12 में " सक्षम " शब्द का अनुवाद यूनानी शब्द "कटार्तिज़ो" से किया गया

है, जिसका अर्थ है "कुछ उपयुक्त या उपयोगी बनाना।" यह कुछ काम करने का सुझाव देता है क्योंकि इसे कार्य करने के लिए डिज़ाइन किया गया था, ताकि यह फिर से प्रभावशाली बनाया जाए। यह शब्द मछली पकड़ने के जाल को ठीक करने के लिए प्रयोग किया जाता है (मत्ती 4:21; मरकुस 1:19)। यह हमें याद दिलाता है कि हम फटे-टूटे हुए जीवनो से निपटते हैं, जो आध्यात्मिक या भावनात्मक रूप से काम नहीं कर रहे हैं जैसा उन्हें करना चाहिए। चरवाहों के रूप में हमारा काम परमेश्वर के चंगाई वाले प्रेम और सच्चाई के द्वारा उनके जीवन को सुधारने में उनकी मदद करना है। इस शब्द का प्रयोग एक पापी विश्वासी को पुनर्स्थापित करने के लिए भी किया जाता है (गलातियों 6:1)।

वचन का प्रचार करने का आदेश - ना केवल हमें वचन सिखाने का आदेश दिया गया है, बल्कि हमें इसका प्रचार करने का भी आदेश दिया गया है (2 तीमुथियुस 4:1-5) "परमेश्वर और मसीह यीशु की उपस्थिति में, जो जीवितों और मरे हुओं का न्याय करेगा, और उसके प्रकट होने और उसके राज्य को देखते हुए, मैं तुम्हें यह आज्ञा देता हूं: वचन का प्रचार करो; अनकूल परस्थितियो में और विपरीत परस्थितियो में भी तैयार रहें; सुधारना , फटकारना और प्रोत्साहित करना - बड़े धैर्य और सावधानीपूर्वक निर्देषों के साथ। ... सभी परिस्थितियों में बुद्धिमान बने रहो , कठिनाई सहें, एक प्रचारक का काम करें, अपनी सेवकाई के सभी कर्तव्यों को निभाएं ।"

"प्रचार" का अर्थ है "घोषणा करना।" इसका उपयोग एक राजदूत के लिए किया जाता है जिसे उसके राजा द्वारा राजा के संदेश को अधिकार और स्पष्टता के साथ घोषित करने के लिए भेजा जाता है। राजा के संदेश को ले जाना एक महान सम्मान और विशेषाधिकार है, और इसलिए वह एक सम्मानित व्यक्ति है। पादरियों के रूप में हम पर भी यही बात लागू होती है, क्योंकि हम प्रभु यीशु मसीह के राजदूत हैं।

यह हिस्सा हमें परमेश्वर के वचन की घोषणा करने की आज्ञा देता है। हम इसे अपने शब्दों से तब करते हैं जब हम व्यक्तियों या समूहों को सिखाते हैं या प्रचार करते हैं। ऐसा हम अपने जीवन में परमेश्वर के सत्य को लागू करने और दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित करने के द्वारा भी करते हैं।

हमें "वचन" का प्रचार करने की आज्ञा दी गई है। हम कभी भी अपना संदेश नहीं देते, केवल वही शब्द जो राजा ने हमें देने के लिए दिए हैं। हमें राजनीति के बारे में बात नहीं करनी है, या अपनी राय नहीं देना है, या कहानियाँ नहीं सुनाना है, बल्कि परमेश्वर के पूरे वचन का प्रचार करना है। इसे दूसरों तक पहुँचाने के लिए, हमें बाइबल का अध्ययन करना चाहिए और इसे स्वयं अच्छी तरह जानना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:15)।

2 तीमुथियुस 4:1-5 में यह हिस्सा वचन के प्रचार के अतिरिक्त कई आज्ञाएँ देता है। ये सभी कर्तव्य हमारे राजा की तरफ से हैं। वचन का प्रचार करने के बाद दूसरी आज्ञा है, "समय और असमय तैयार रहना।" हमें किसी भी स्थान पर या किसी भी परिस्थिति में परमेश्वर के वचन को प्रसारित करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन को जानना चाहिए, आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर के करीब रहना चाहिए, और एक अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करनी चाहिए ताकि दूसरे हमारी बात सुन सकें। यह "मौसम में और मौसम के बाहर" भी कीया जाना चाहिए। इसका अर्थ है कि जब परिस्थितियाँ अनुकूल या विपरीत हों, जब परमेश्वर के वचन की घोषणा करना आसान या कठिन हो।

तीसरा आदेश, "सुधारना ", गलती और गलतफहमी को उजागर करने और परमेश्वर के सत्य को उसके स्थान पर रखने के हमारे कर्तव्य को दर्शाता है। इसके बाद, हमें "फटकार " लगाना है जहाँ पाप की जानकारी मिलती है। यूनानी शब्द बहुत मजबूत है, जो एक तेज, गंभीर डांट का जिक्र करता है। हमें उस

पाप की ओर संकेत करना है जो वर्तमान में है, परन्तु प्रेम में ऐसा करना है । यह किसी के घर में आग लगने पर चेतावनी देने जैसा है; अत्यावश्यक, स्पष्ट और सटीक शब्द सबसे महत्वपूर्ण होते हैं।

2 तीमुथियुस 4:1-5 में अगली आज्ञा है कि हम जो प्रचार/घोषणा करते हैं उसके द्वारा दूसरों को "प्रोत्साहित" करें। हमें निर्माण करना है, हतोत्साहित नहीं करना है। यह "बड़े धैर्य" के साथ किया जाना है। जिस प्रकार परमेश्वर हमारे साथ कार्य करता है, उसी प्रकार हमें बार-बार उपदेश करते और उपदेश देते रहना चाहिए। एक अच्छा चरवाहा होने के लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है - फिर चाहे यह भेड़ों के लिए हो या लोगों के लिए।

इसके साथ ही हमें वचन में "सावधानीपूर्वक निर्देश" देना चाहिए। हमें बाइबल के सभी भागों को पढ़ाना और लागू करना चाहिए और इसे विस्तार से करना चाहिए। आज कलीसिया में बहुत गलतियाँ और झूठी शिक्षा है, जो मसीहियों और कलीसिया को कमजोर कर रही है।

ऐसा करते समय हमें अपना ध्यान रखना चाहिए। हमें आज्ञा दी गई है कि "हर हाल में बुद्धिमान बने रहो " (2 तीमुथियुस 4:1-5)। हमें आत्म-संयम रखना चाहिए और क्रोध या भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को अपने ऊपर भारी नहीं पड़ने देना चाहिए। इसमें "स्थायी कठिनाई" भी शामिल है। पासबनी का कार्य एक ऐसा कार्य हो सकता है जिसमे शायद कोई सहायता करने वाला पास ना हो। दूसरे लोग हमसे बहुत उम्मीद करते हैं और अक्सर हमारी आलोचना करते हैं। जब हम परीक्षाओं और प्रलोबनों का सामना करते हैं, तो परमेश्वर इन सबका उपयोग हमें यीशु के समान बनाने के लिए करता है।

2 तीमुथियुस 4:1-5 की सूची में अगला कर्तव्य है "एक सुसमाचार प्रचारक का काम करना।" सभी पादरियों के पास सुसमाचार प्रचार का आत्मिक वरदान नहीं है, लेकिन हम सभी को सुसमाचार फैलाने और लोगों को यीशु की ओर संकेत करने की आवश्यकता है। हम जो कुछ भी कहते और करते हैं उन सब का लक्ष्य यीशु, को हमारी सभी आवश्यकताओं के समाधान के रूप में, महिमा देना है। हम इसे अपने शब्दों के साथ-साथ अपने जीवन से भी करते हैं।

अंत में, पौलुस यह कहता हुया सारांशित करता है कि हमें "अपनी सेवकाई के सब कामों का निवारण करना है।" हमें उन सभी कामों को ईमानदारी से करना है जिन्हें करने के लिए परमेश्वर ने पादरियों को आज्ञा दी है।

भेड़ों को कैसे खिलाना है - भेड़ों को खिलाने का अर्थ है उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाना। कुछ पादरी इतने व्यस्त होते हैं कि उन्हें वचन संदेश तैयार करने में समय नहीं लगता। वे रविवार को बोलने के लिए खड़े होते हैं, वे बाइबल के कुछ पद पढ़ते हैं, अपनी बाइबल बंद करते हैं और लोगों से बात करते हैं, वह उन्हें वही बात बताते हैं जो वे उन्हें पहले ही बता चुके होते हैं। लोग केवल उनके शब्द सुनते हैं, बाइबल के वचन नहीं। क्या यह भेड़ों को खिलाना माना जायेगा ?

मान लीजिए आपकी पत्नी अन्य कामों में इतनी व्यस्त है कि वह अच्छा खाना नहीं बनाती है। वह आपको हर भोजन में वही खिलाती है, जो पहले दिन से बचा हुआ है। आप इसे पसंद नहीं करेंगे! यदि वह अच्छा खाना पकाना जानती है, तो वह स्वस्थ, अच्छे स्वाद वाले भोजन की योजना बनाने और तैयार करने में समय व्यतीत करती है। इसी तरह हमें अपने लोगों को खाना खिलाना चाहिए।

पादरियों के रूप में हमें योजना बनाने और तैयारी करने की आवश्यकता है जब हम भी अपने लोगों को खिलाते हैं। जब पौलुस प्रचार करता तो वह पवित्रशास्त्र का एक हिस्सा लेकर लोगों को समझाता। फिर वह इसे अपने जीवन में लागू करता । एज्रा ने भी वैसा ही किया।

आपको अपना उपदेश तैयार करने के लिए सप्ताह की शुरू में शुरुआत करनी होगी। एक किताब चुनें जिसे आप लोगों को सिखाना चाहते हैं और उसका अध्ययन शुरू करें। पहली आयत पढ़िए और सोचिए। प्रार्थना करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको यह समझने में मदद करे कि इसका क्या अर्थ है। आप अपनी बाइबल में हवाला देख सकते हैं या किसी कमेंट्री का उपयोग कर सकते हैं। वह तुम्हें जो कुछ सिखा रहा है उसे लिख लें । फिर प्रार्थना करें और परमेश्वर से आपको यह दिखाने के लिए कहें कि यह आपके जीवन पर कैसे लागू होता है। इसे भी लिख लें। जब आपकी एक आयत समाप्त हो जाए तो अगली आयत पर जाएं और वही काम करें।

फिर जब रविवार आता है तो आप अपने नोट्स का उपयोग लोगों को यह सिखाने के लिए करें कि पहली आयत का क्या अर्थ है। आप उन्हें बताएं कि यह उन पर कैसे लागू होता है। आप इसे समझाने के लिए बाइबल या जीवन की कहानियों या उदाहरणों का उपयोग कर सकते हैं। फिर आप अगली आयत के साथ भी ऐसा ही करें। सावधान रहें कि एक उपदेश में बहुत अधिक आयातों का उपयोग ना करें । बहुत सी आयातों का वर्णन करने की कोशिश करने से बेहतर है कुछ आयातों को अच्छी तरह बयाँ करना। अगले सप्ताह आप अगली आयातों के साथ भी ऐसा ही करें।

इस तरह वे परमेश्वर का वचन सीख लेगें । आप केवल अपने वचन ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचनों को सिखा रहे होंगे। लोग एक ही चीज को बार-बार नहीं, बल्कि नई चीजें सीखेंगे। यह उन्हें सप्ताह के दौरान सोचने और अभ्यास करने के लिए कुछ देगा। वे आध्यात्मिक रूप से विकसित होंगे। जब आप ऐसा करेंगे तो आप अपने लोगों को खाना खिला रहे होंगे। वे बढ़ेंगे और यीशु के समान बनेंगे। (बाइबल के अध्ययन और शिक्षण के बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "बाइबल का अध्ययन" और "बाइबल का प्रचार और शिक्षण" पुस्तक पढ़े।)

इस लागु करने में प्रशन : *क्या आप नियमित रूप से परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं? क्या आप इसे एक साल पहले की तुलना में बेहतर जानते हैं? क्या आप परमेश्वर के वचन को सही ढंग से सिखाते और प्रचार करते हैं? क्या दूसरे समझते हैं कि आप क्या कह रहे हैं और इसे अपने जीवन में लागू करते हैं ? क्या आप सही, दिलचस्प और संभावित रूप से जीवन बदलने वाले उपदेशों को विकसित करने और प्रस्तुत करने के लिए ईमानदारी से कड़ी मेहनत करते हैं?*

घ. भेड़ों की सेवा करने का कर्तव्य

एक पादरी के लिए शब्द - बाइबल एक पादरी के लिए चार शब्दों का उपयोग करती है, - और इनमें का प्रत्येक हमारे कर्तव्यों के एक अलग पहलू को दर्शाता है। पादरी, या पादरी-शिक्षक, एक चरवाहे को संदर्भित करता है जो अपनी भेड़ों की अगुवाई करता है और उन्हें खिलाता है जब वह परमेश्वर का वचन सिखाता है। अन्यजातियों द्वारा निगेबान का उपयोग उसके लिए किया जाता है जो लोगों की निगेबानी करता है और उनकी रक्षा करता है। प्राचीन, निगेबान के समान है, लेकिन इसका उपयोग यहूदी संस्कृति में किया जाता है। निगेबान और प्राचीन दोनों किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करते हैं जो एक समूह के लिए योजना बनाता है और उसका मार्गदर्शन करता है। वह सब कुछ खुद नहीं करता है, लेकिन वह सुनिश्चित करता है कि यह हो जाए। सेवक या डीकन, वह है जो विनम्रतापूर्वक दूसरों के लिए सबसे अच्छा काम करके उनकी सेवा करता है।

	पोइमीन	**प्रेस्बुटीरोस**	**एपिस्कोप्स**	**डीयाक्नोस**
लिप्यन्तरण		प्रेस्बेटरी	एपिस्कोपल	डीकन

अनुवाद	पासबान	प्राचीन	निगेबान (बिशप)	सेवक (दास)
शाब्दिक	चरवाहा	कमान अधिकारी	रखवाला	खाने की मेज़ पर प्रतीक्षा करने वाला वेटर
मुख्य विचार	उपहार, करत्व खिलने,अगुवाई करने द्वारा निगेबानी करना	कार्यलय आराधनालय के प्रमुख के लिए यहूदी शीर्षक - अधिकार, व्यक्तिगत गरिमा, परिपक्वता	कार्यालय लोगों के समूह के मुखिया, नीति-निर्माता के लिए अन्यजाति उपाधि	मिजाज दास, परमेश्वर का बंदी
की तरफ से	परमेश्वर	अन्य	दूसरों	खुद
	इफिसियों 4:11; 1 पतरस 5:1-4	1 पतरस 5:1-4; 1 तिमोथियस 5:1,17,19; तीतुस 1:5-6	1 तिमोथियुस 3:1-7; तीतुस 1:7-9; 1 Peter 5:1-4	तिमोथियुस1 4:6; 2 तिमोथियुस4:5

सेवक अपनी भेड़ों की सेवा करते हैं - हमने देखा है कि, पादरियों के रूप में, हमारा कर्तव्य भेड़ों की रक्षा करना और उन्हें खिलाना है। भेड़ों की सेवा करना हमारा एक और कर्तव्य है। शब्द "पादरी" भेड़ों को निगेबानी करने और उन्हें हमारे द्वारा खिलाने के कर्तव्य को दर्शाता है। "निगेबान " भेड़ों की हिफाज़त करने की हमारी ज़िम्मेदारी पर ध्यान केन्द्रित कराता है। एक और शब्द, "सेवक " (1 तीमुथियुस 4:6), भेड़ों की सेवा करने पर धयान केन्द्रित कराता है। इसी यूनानी शब्द का अनुवाद प्रेरितों के काम 6:1-15 में "डीकन" के रूप में किया गया है। यह एक नौकर को संदर्भित करता है जो खाने की मेज़ पर प्रतीक्षा करता है। (वेटर)

पादरी और अगुवे लोगों के सेवक हैं। कुछ पादरी सोचते हैं कि भेड़ें उनकी सेवा करने के लिए हैं, और इसलिए लोगों से उम्मीद करते हैं कि वे अपने पादरी की इच्छा के अनुसार एक प्रभावशाली दिखने वाली कलीसिया बनने के लिए एक पादरी के साथ मेल खाते दिखाई देने के लिए सब कुछ करेंगे। अपने अभिमान में, वे सोचते हैं कि वे दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। लेकिन बाइबल कहती है कि हमें अपने लोगों की सेवा करनी है, नाकि उनसे अपनी सेवा करानी है। भेड़ें चरवाहे की सेवा नहीं करती, चरवाहा अपनी भेड़ों की सेवा करता है।

यीशु एक चरवाहा था जो अपनी भेड़ों की सेवा करता था। यीशु सेवा कराने के लिए नहीं बल्कि सेवा करने के लिए आया था (मत्ती 20:28) .. उसने अपने शिष्यों के पैर धोए और कहा कि हमें भी ऐसा ही करना है। हमें अपनी भेड़ों की सेवा करनी है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम वह सब कुछ करें जो वे हमसे चाहते हैं। अपनी भेड़ों की सेवा करने का अर्थ है वह करना जो उनके लिए सर्वोत्तम है।

यह वैसा ही है जैसा हम अपने बच्चों के साथ करते हैं। क्या होगा अगर हमने वह सब कुछ किया जो हमारे बच्चे हमसे चाहते थे हम उनके लिए करें ? क्या यह उनके लिए अच्छा होगा? एक माता-पिता अपने

बच्चों की सेवा इस तरह से करते हैं जो उन्हें परिपक्व होने में मदद करेगा, नाकि वह सब कुछ वो करके जो बच्चा चाहता है। कभी-कभी बच्चे परेशान हो जाते हैं या हमें पसंद नहीं करते । लेकिन हम जानते हैं कि उनके विकास के लिए सबसे अच्छा काम करना ज्यादा महत्वपूर्ण है। कभी-कभी हमारे लोग हमसे खफा हो जाते हैं या हमें पसंद नहीं करते। वे दूसरों को बता सकते हैं कि आप एक अच्छे पादरी नहीं हैं, या यहां तक कि किसी दूसरे चर्च में भी जा सकते हैं। लेकिन हमें वह करना चाहिए जो हम से परमेश्वर की उम्मीद है, भले ही वे लोग यह ना समझें।

हम परमेश्वर के सेवक हैं। हम अपने लोगों की सेवा करते हैं जैसे वह उनकी सेवा करता है। हम केवल उस स्तर तक ही अगुवाई कर सकते हैं, जहा तक हम सेवा करने के इच्छुक हैं। चेलों के पैर धोने में यीशु हमारी सेवा का उदाहरण है (यूहन्ना 13:1-17)। हम पहले परमेश्वर के सेवक हैं, फिर दूसरों के ।

अपने लोगों के सच्चे सेवक होने के लिए, हमें यीशु की तरह विनम्र सेवक होना चाहिए। अभिमान पादरियों के लिए एक आम तरह का प्रलोभन और खतरा है। सच्चे नेतृत्व के लिए नम्रता की आवश्यकता होती है (नीतिवचन 16:18)। हम विनम्र हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हम अपने आप में अपर्याप्त हैं और केवल परमेश्वर की सहायता से ही कार्य कर सकते हैं। शैतान गर्व रूपी हथियार से हमला करता है - हमें खतरे से अवगत होना चाहिए और विनम्र रहना चाहिए।

एक प्रभावी अगुवा बनने के लिए जो परमेश्वर की सेवा करता है और उसके लोगों की अगुवाई करता है, हमारे पास उसके लिए एक प्रेम होना चाहिए जो उसके अनुयायियों के लिए प्रेम में फैल जाए। हमें उनकी भलाई के लिए वास्तविक देखभाल और चिंतत होने के लिए प्रेरित होने की आवश्यकता है। एक प्यार करने वाले माता-पिता की तरह, हमें उन लोगों के बारे में ज़्यादा चिंता करनी चाहिए जिनके लिए हम ज़िम्मेदार हैं। हमें यीशु की तरह आत्म-बलिदान करने की आवश्यकता है जिसने अपने शिष्यों के पैर धोए (यूहन्ना 13) फिर उनके लिए क्रूस पर चढ़ गया।

इसे लागु करने में प्रशन : *गर्व के साथ संघर्ष, सब से अधिक, आप कब करते हैं? विनम्र बने रहने के लिए आपको क्या करना चाहिए? आप किस तरह से दूसरों की सेवा करते हैं? आपके लिए सेवा करना कब सबसे कठिन होता है? दूसरों की सेवा करने में यीशु को आपका आदर्श कैसे होना चाहिए?*

ङ. भेड़ों की अगुवाई करने का कर्तव्य

पादरियों को भी अपनी भेड़ों का नेतृत्व करने की आज्ञा दी जाती है, जैसा कि चरवाहे अपनी भेड़-बकरियों के झुंड के साथ करते हैं। भेड़ को नेतृत्व की जरूरत है। परमेश्वर उन लोगों के माध्यम से दिशा प्रदान करता है जिन्हें वह अपनी भेड़ों का चरवाहा होने के लिए चुनता है। (नेतृत्व के बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "बाइबल से नेतृत्व के सबक" पुस्तक पढ़े ।)

1.कलीसिया के अगुवे

प्राचीन और निगेबान अगुवा के रूप में - पादरी/चरवाहे के लिए एक और शब्द, "प्राचीन," है जो इस भूमिका पर केंद्रित है। शब्द "प्राचीन " एक ही व्यक्ति को "चरवाहा" और "निगेबान " या "बिशप" के रूप में संदर्भित करता है। पतरस एक आयत में तीनों शब्दों का प्रयोग उस व्यक्ति के संदर्भ करने में करता है जिसे हम पादरी कहते हैं (1 पतरस 5:1)। शब्द "प्राचीन" उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो एक आराधनालय के कार्यों की देखरेख करता है। अन्यजातियों द्वारा "निगेबान ," का अनुवाद "बिशप" भी किया गया था। यह उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो अन्यजातियों के एक समूह के उद्देश्यों की देखरेख करता है। जब पौलुस अन्यजातियों को लिखता है तो वह "निगेबान " शब्द का प्रयोग करता है।

जब पतरस यहूदियों को लिखता है तो वह इसके स्थान पर "प्राचीन" का प्रयोग करता है। लेकिन वे दोनों एक ही अर्थ रखते हैं और लोगों के समूह के कमांन अधिकारी को संदर्भित करते हैं।

उसकी भूमिका यह सुनिश्चित करने की थी कि समूह में सब कुछ ठीक ठाक तरीके से काम करते हैं । उसे सब कुछ खुद नहीं करना होता था। लेकिन उसे यह सुनिश्चित करना होता था कि सब कुछ हो गया है । वह एक स्कूल के प्रिंसिपल/ प्रधान आचर्य की तरह है जो दूसरों के काम की देखरेख करता है। वह एक स्कूल में सभी काम नहीं करता है, लेकिन वह सभी की योजना, प्रतिनिधि और निगेबानी करता है। दाऊद ने एक चरवाहे के रूप में और फिर इस्राएल के अगुवा के रूप में यही किया (भजन 78:70-72)।

याद रखे, जब लोग मूसा के पास अपनी समस्याएँ लेकर आते थे ? वो दिन भर आते रहते थे । बहुत सारे लोग थे, मूसा उन सभी की मदद नहीं कर सकता था और ना ही कुछ और कर सकता था। क्या आप जानते हैं कि उसके ससुर ने उसे क्या करने के लिए कहा था? उसने कहा कि उसे मदद के लिए कुछ अन्य लोगों को भर्ती करना चाहिए (निर्गमन 18:13-26)। ऐसा तब भी हुआ जब प्रारंभिक कलीसिया विधवाओं को भोजन और वस्त्र देने में बहुत व्यस्त थी । प्रेरितों के पास बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने का समय भी नहीं होता था। उन्होंने क्या किया? इसके बदले उन्होंने काम करने के लिए डीकन रखे। उन्होंने कहा, "हमारे लिए बाइबल का अध्ययन करना और प्रार्थना करना अधिक महत्वपूर्ण है" (प्रेरितों के काम 16:1-5) इसलिए उन्होंने दूसरों को विधवाओं की मदद करने के लिए प्रशिक्षित किया। दूसरों को मदद करने के लिए प्रशिक्षित करना एक पास्टर के रूप में हमारे कर्तव्यों में से भी एक है। हम उनके काम की देखरेख करके उनकी अगुवाई करते हैं।

इसे लागु करने में प्रशन : *1 से 10 के पैमाने पर, दस सबसे अच्छे होने के साथ, आप एक अगुवा के रूप में खुद का मूल्यांकन कैसे करेंगे? एक अगुवा के रूप में आप सबसे मजबूत कहां हैं? नेतृत्व में आपकी कमजोरियां कहां हैं? आप उन्हें सुधारने में मदद के लिए क्या कर सकते हैं? क्या दूसरे लोग आपका सम्मान करते हैं और एक अगुवा के रूप में आपका अनुसरण करते हैं? क्या आप प्रशिक्षण देते हैं और प्रत्यायोजित करते हैं, या सब कुछ स्वयं करने का प्रयास करते हैं?*

2. कलीसिया का विवरण

एक साथ एकत्रित लोगों के समूह के लिए यूनानी शब्द है "एक्लेसिया"। यह एक सभा या लोगों के समुदाय को संदर्भित करता है। इसका शाब्दिक अर्थ है वे जिन्हें "अलग बुलाया गया है।" "निगेबान " लोगों के एक समूह "एक्लेसिया" के लिए ज़िम्मेदार था। नए नियम में इस शब्द का अनुवाद "कलीसिया" किया गया है। यह परमेश्वर की भेड़ों के झुंड का नाम बन गया। इसका इस्तेमाल दो तरह से किया जाता था।

विश्वव्यापी कलीसिया - विश्वासियों के पूरे समूह को, यीशू को सूली पर चढ़ाए जाने से लेकर जब यीशु का क्लेश से पहले वापस लौटने तक, (2 थिस्सलुनीकियों 4:13-18) विश्वव्यापी कलिसिया कहा जाता है। यह उन सभी से बना है जो उद्धार के लिए मसीह में आपना विश्वास रखते हैं, चाहे वो यहूदी हो या अन्यजाति। इस समूह के अन्य नामों में मसीह की दुल्हन (प्रकाशितवाक्य 19:7-9; 21:2; 22:17), मसीह की देह (1 कुरिन्थियों 12:12-31; इफिसियों 1:22-23; 4:11) शामिल हैं। -16; 5:23; रोमियों 12:5), एक सच्ची दाखलता की शाखाएं (यूहन्ना 15:5), परमेश्वर के लोगों के साथ साथी नागरिक (इफिसियों 2:19), परमेश्वर के घराने के सदस्य (इफिसियों 2:19),मिलकर बना हुआ एक पवित्र मंदिर (इफिसियों 2:21-22; 1 पतरस 2:5) और चुने हुए लोग, एक शाही याजकई , एक पवित्र राष्ट्र और ऐसे लोग जो परमेश्वर के है (1 पतरस 2:9)।

आज लोगों के तीन समूह है ,अन्यजाति (अविश्वासी अन्यजाति), यहूदी (अविश्वासी यहूदी) और कलीसिया (विश्वास करने वाले यहूदी और अन्यजाति इकठे) हैं। पुराने नियम के समय में केवल दो समूह थे: यहूदी (विश्वासी और अविश्वासी) और अन्यजाति (विश्वासी और अविश्वासी)। मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार में कलीसिया कुछ नया और अलग है। यह इज़राइल की जगह पर नहीं है,(मतलब कोई नया इज़राइल नहीं है)। इस्राएल के लिए भी परमेश्वर के वादे अभी सच हैं। कलीसिया, जो मसीह की दुल्हन है, उसके साथ अनंत काल तक शासन करेगी और राज्य करेगी (प्रकाशितवाक्य 2:27-28; 5:10; 1 कुरिन्थियों 6:2)। यहूदी या अन्यजाति जो यीशू को सूली पर चढ़ाए जाने से पहले, या यीशु के हमें स्वर्ग (मेघारोहण) लेने के लिए लौटने के बाद उद्धार के लिए परमेश्वर में अपना विश्वास रखते हैं, उन्हें "परमेश्वर के दास" कहा जाता है (उत्पत्ति 26:24; संख्या 12:7; यहोशू 24:29) ; 2 शमूएल 7:5; यशायाह 20:3)।

स्थानीय कलीसिया - यीशु की मृत्यु होने और पुनार्थान होने से लेकर जब तक वह अपनी कलीसिया के लिए वापस नहीं आता तब तक परमेश्वर की भेड़ों के पूरे झुंड को विश्व्यापी कलीसिया कहा जाता है। हालाँकि परमेश्वर उस बड़े झुंड को विश्वासियों के छोटे समूहों में विभाजित कर देता है जो एक ही क्षेत्र में रहते हैं और उन छोटे झुंडों को स्थानीय कलीसिया कहता है। शब्द "कलीसिया" का प्रयोग विश्वासियों के इन छोटे समुदायों के लिए भी किया जाता है। बाइबल में 'कलीसिया' विश्वासियों के एक समूह को संदर्भित करता है, नाकि उस इमारत को जहां वे इकट्ठा होते हैं। बाइबल के ज़माने में वे घरों में मिलते थे, विशेष ईमारतों में नहीं। एक ईमारत को "चर्च" के रूप में संदर्भित करना ठीक है, लेकिन हमेशा याद रखें कि शब्द कलीसिया वास्तव में विश्वासियों के समूह को संदर्भित करता है जो वहां इकट्ठा होते हैं। महत्वपूर्ण लोग हैं, नाकि कोई भवन (मत्ती 18:20)। संगठित कलीसिया लोगों को समूहबद्ध करने का एक व्यावहारिक तरीका है, लेकिन हमेशा महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं, संगठन नहीं। संगठन केवल व्यक्तियों की सेवा के लिए मौजूद होता है। व्यक्ति संगठन की सेवा करने के लिए नहीं होते हैं। लोग हमेशा योजनाओं या कार्यक्रमों से अधिक अहमियत रखते हैं। एक स्थानीय कलीसिया को इस तरह से ही कार्य करना चाहिए।

यीशु हमारा चरवाहा है (यूहन्ना 10:11-18)। एक स्थानीय कलीसिया का चरवाहा एक पादरी होता है जो उसके (यीशू के) अधीन काम करता है, अपने लोगों के एक छोटे समूह की देखभाल करता है, जैसे वह करता होता।

पवित्र आत्मा और कलीसिया - यीशू को सूली पर चढ़ाए जाने के पचास दिन बाद, जो फसह का दिन था, यह एक और यहूदी त्योहार था जिसे पिन्तेकुस्त कहा जाता था (प्रेरितों के काम 2)। यीशु ने वादा किया था कि वह पवित्र आत्मा के माध्यम से, जो त्रिएक का तीसरा व्यक्ति है, अपने शिष्यों के साथ होगा और उनमें उपस्थित होगा (यूहन्ना 14:16, 26)। जब पवित्र आत्मा आया तो विश्वासी इकट्ठे थे (प्रेरितों के काम 2:1-4)। पुराने नियम में पवित्र आत्मा कुछ विश्वासियों पर विशेष उद्देश्यों के लिए और सीमित समय के लिए आता था (न्यायियों 3:10; 1 शमूएल 10:10; 16:14; भजन संहिता 51:11)। परन्तु अब कलीसिया के युग का प्रत्येक विश्वासी उद्धार के क्षण ही पवित्र आत्मा को प्राप्त करता है (1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 1:13; रोमियों 8:9) और अपना पूरा जीवन उसके निवास करने का ठिकाना बनता है (इफिसियों 1:13; 4 :30; 1 कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19)।

पवित्र आत्मा कलीसिया का वास्तविक अगुवा है, जो पासबान के माध्यम से और विश्वासियों के हृदयों में कार्य करता है। वह कलीसिया के अगुवों को स्थापत करता है (प्रेरितों के काम 20:28), आराधना में मसीहियों की अगुवाई करता है (इफिसियों 2:18), हमें प्रार्थना में प्रेरित करता है (रोमियों 8:26-27), हमारी गतिविधियों में मार्गदर्शन करता है (प्रेरितों के काम 13:2; 16:6- 7), पादरियों और कलीसिया में

प्रत्येक को आध्यात्मिक उपहार देता है (इफिसियों 4:11), सच्चाई में हमारा मार्गदर्शन करता है (यूहन्ना 16:13) और हमारे प्रचार और शिक्षा को शक्तिशाली बनाता है (1 थिस्सलुनीकियों 1:5)।

3. कलीसिया का उद्देश्य

परमेश्वर पादरियों और कलीसिया के अगुवओं के माध्यम से कलीसिया का उस दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए काम करता है जिस दिशा में वह चाहता है कि कलीसिया जाए। यह उसकी कलीसिया है और वह इसे बनाता और निर्देशित करता है (मत्ती 16:18)। (अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "परमेश्वर कलिसियाओं से क्या उम्मीद करता है " पुस्तक पढ़े।)

परमेश्वर हमें नियमित रूप से एक साथ इकट्ठा होने की आज्ञा देता है (इब्रानियों 10:25), लेकिन जब हम इकट्ठे होते हैं तो हमें क्या करना चाहिए? कलीसिया का उद्देश्य, अपने आप में, स्पष्ट रूप से प्रेरितों के काम 2:41-42 में दिया गया है। इसका उदेश्य शिक्षण, आराधना और संगति प्रदान करना है।

शिक्षण पादरियों और कलीसियाओं की मुख्य जिम्मेदारियों में से एक है (इफिसियों 4:11-12; मत्ती

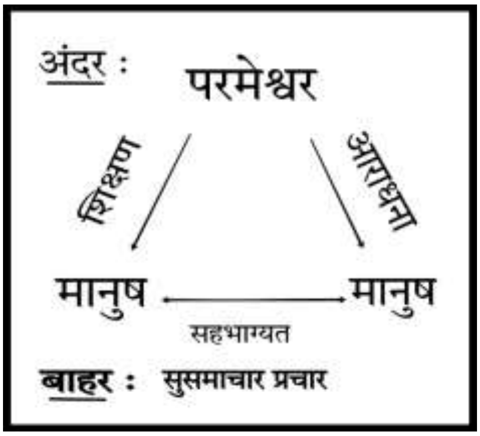

28:19-20)। भेड़ों को मजबूत और स्वस्थ रहने के लिए खाना खाए होना जरूरी है। हव्वा की परीक्षा, परमेश्वर द्वारा कही गयी बातों के प्रति उसकी अज्ञानता के कारण हुई थी (उत्पत्ति 3:4)। यीशु ने परमेश्वर के वचन को जानने और उद्धृत करने के द्वारा शैतान के प्रलोभन का मुकाबला कीया (मत्ती 4:1-11)। यीशु ने अपने शिष्यों को शिक्षा देकर उन्हें प्रशिक्षित कीया (मत्ती 11:1; 16:24; मरकुस 4:34; लूका 12:1)।

परमेश्वर अपने वचन की शिक्षा के माध्यम से हमसे बात करता है। हम प्रार्थना और **आराधना** के माध्यम से परमेश्वर से बात करते हैं। आराधना केवल उसी की है । यह हमारे लिए नहीं है और ना इसके लिए कि हम कितना 'अच्छा' महसूस करते हैं - यह सिर्फ उसके बारे में है। बाइबल में पहले दो बार "आराधना" का उपयोग किया जाता है जब अब्राहाम ने इसहाक को बलिदान करने के लिए पहाड़ पर लेकर जाता है (उत्पत्ति 22:5) और फिर जब अय्यूब ने यह खबर सुनी कि उसके सभी बच्चे मारे गए (अय्यूब 1:20)। वे निश्चित रूप से उन दोनों में से किसी के लिए भी भावनात्मक रूप से उचित समय नहीं था ! फिर भी, उन्होंने अपनी नज़र इस पर रखी कि परमेश्वर कौन है और क्या है, और यही आराधना है।

परमेश्वर को धन्यवाद देना अच्छा है, लेकिन यह आमतौर पर हमारी समझ पर आधारित होता है कि परमेश्वर ने क्या किया है और हमें वो सब मंनजूर है। फिर क्या होगा अगर हम, अय्यूब और अब्राहाम की तरह, इसे समझते और स्वीकार नही करते हैं? तब ही स्तुति और आराधना का कार्य शुरू होता है, क्योंकि यह हमारे जीवन में परिस्थितियों के बावजूद स्वयं परमेश्वर की भलाई की पुष्टि कर रहा होता है। उस

समय उससे प्रेम करना परमेश्वर के हृदय को छूता है - जब हम समझ नहीं पाते हैं या जो हो रहा है उसे पसंद नहीं करते हैं (रोमियों 12:1; फिलिप्पियों 4:18)।

आराधना जोर से, भावनात्मक गायन या उपदेश पर आधारित नहीं है। आराधना इस बात पर केंद्रित है कि परमेश्वर कितना महान है, नाकि इस पर कि मैं कैसा महसूस कर रहा हूं। आपने चर्च में आराधना का मूल्यांकन करने के लिए यह देखना कि लोगों को कैसा महसूस होता है, यह सब गलत है। आराधना हमारे लिए नहीं है, यह परमेश्वर के लिए है। यह सब उसके बारे में है, हमारे बारे में नहीं!

इसे लागु करने में प्रशन : *आप आराधना को कैसे परिभाषित करते हैं? आप वास्तविक उपासना में प्रत्येक सप्ताह कितना समय व्यतीत करते हैं? आप सबसे अच्छी आराधना कब करते हैं? इस सप्ताह एक विस्तारित अवधि निर्धारित करें जब आप भक्ति-भंग करने वाली बातों से दूर रह सकें और केवल उस पर ही ध्यान केंद्रित कर सकें। आप जहां भी हैं वहां बैठने के लिए समय निकालें और अभी उसकी आराधना करें।*

एकत्रित होने पर कलीसिया का तीसरा उद्देश्य है **संगति**। एक दूसरे के लिए प्रेम तब दिखाया जाता है जब हम एक साथ होते हैं (1 कुरिन्थियों 13:13)। यीशु को स्वयं अपने शिष्यों के साथ समय की आवश्यकता थी। उसे मानव संगति की आवश्यकता थी। वह भीड़ से हट जाता और केवल चेलों के साथ निकल जाता (मरकुस 3:7-19)। उसे उनकी जरूरत थी। दुर्भाग्य से वे हमेशा उसके लिए हाजिर नहीं होते थे, जैसे गतसमनी में उसकी गिरफ्तारी से पहले (मत्ती 26:36-46; मरकुस 14:32-42)। अगर उसे दूसरों की जरूरत है तो हम भी निश्चित रूप से यही करते। जितना अधिक मैं जीवन में आगे बढ़ता हूं, उतना ही मुझे एहसास होता है कि मुझे अन्य विश्वासियों की कितनी आवश्यकता है और यह कितना बड़ा आशीर्वाद है कि परमेश्वर उन्हें मेरे जीवन में रखता है।

इसे लागु करने में प्रशन : *आप मसीही संगती में सप्ताह में कितना समय बिताते हैं, बिना किसी मकसद केवल मौज-मस्ती और निकटता में एक दूसरे का आनंद लेने के लिए? आपको अन्य विश्वासियों के समर्थन और संगति की सबसे अधिक आवश्यकता कब होती है? क्या आप वास्तव में अपने जीवन में अन्य विश्वासियों की सराहना करते हैं, या क्या आप उन्हें अपनी सेवकाई के लक्ष्यों को पूरा करने में मदद के लिए उन्हें उपकरणों के रूप में ही देखते हैं? अपने अतीत में उन लोगों के बारे में सोचें जिनका उपयोग परमेश्वर ने आपकी यात्रा में आपकी सहायता करने के लिए किया है। उनके लिए प्रार्थना करें। उन्होंने आपके जीवन में जो भूमिका निभाई, उसके लिए आज फिर से उन्हें (मेल, ईमेल या व्यक्तिगत रूप से) धन्यवाद दें।*

हमें पता होना चाहिए कि परमेश्वर हमारे कलीसिया और समुदाय के लोगों में कहाँ कार्य कर रहा है और फिर उस कार्य में उसके साथ शामिल हों। अविश्वासियों के लिए शिक्षण, आराधना, संगति और उन तक पहुंच होनी चाहिए। हमें अपनी कलीसिया के लिए इन सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। (लक्ष्य निर्धारित करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए परिशिष्ट 1: "लक्ष्य निर्धारित करना" देखें।)

4. कलीसिया का संगठन

पादरी चर्च का आध्यात्मिक अगुवा होता है, लेकिन उसे तानाशाह नहीं होना चाहिए। लोगों के किसी भी समूह को संगठन की आवश्यकता होती है। विश्वासियों के समूह की संरचना कैसे करें, इसके बारे में बाइबल स्पष्ट विवरण नहीं देती है। इसे विभिन्न तरीकों से पूरा किया जा सकता है। हालाँकि हम बाइबल से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जो हमें योजना बनाने में मदद कर सकती है।

कलीसिया की सदस्यता - स्थानीय कलीसियाओं में विश्वासी स्वयं आपने आप को संगति के लिए समर्पित करते थे (प्रेरितों के काम 2:42; 20:7; इब्रानियों 10:25; फिलिप्पियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:1)। कलीसिया में सदस्यता के बारे में बाइबल कुछ नहीं बताती है, लेकिन इसकी अपनी एक व्यावहारिक उपयोगता है। यह विश्वासियों के एक स्थानीय समूह के प्रति प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करता है। सदस्यता एक समूह को बढ़ने और वफादार रहने के लिए एक-दूसरे को जवाबदेह ठहराने की भी अनुमति देती है। सदस्यता लोगों को यह महसूस करने में मदद करती है कि वे एक समूह का हिस्सा हैं। वे समूह का हिस्सा महसूस करते हैं और इसमें के दूसरों की परवाह करते हैं। यह ऐसे निर्णय लेने में मदद करता है जो पूरे समूह को आसानी से प्रभावित करते हैं। एक कलीसिया जिसकी पासबानी मैं करता था, उसका संविधान यह कहता था कि कलीसिया में सभी प्रमुख निर्णय सदस्यों के वोट से होने चाहिए , इसलिए सदस्यता के लिए योग्यता होना महत्वपूर्ण था। जो कुछ हो रहा होता था, लोगों को उसके बारे में सूचित करना भी आवश्यक था क्योंकि आर्थिक मामले और अन्य चीजों के बारे में अंतिम बात उन्हीं की ही मान्य होती थी।

यह कहा गया है कि एक कलीसिया में शामिल होने की तुलना में स्वर्ग में जाना आसान है। दुर्भाग्य से यह किसी हद तक सच है। मुक्ति को केवल स्वतन्त्र रूप से स्वीकार करने से ही हम स्वर्ग में प्रवेश करते हैं। परन्तु कलीसिया की सदस्यता के लिए हमें बपतिस्मा लेना होगा, अगुवों से बात करनी होगी और कलीसिया के विश्वास से सहमत होना होगा। यह कलीसिया की आलोचना नहीं है। यह वही तरीका है जो यहाँ पृथ्वी पर होना चाहिए।परमेश्वर सबके दिलों को जानता है, हम नहीं। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह व्यक्ति वास्तव में एक विश्वासी है। यदि चर्च की सदस्यता ना देना मुक्ति की झूठी सुरक्षा देता है। तो यदि वे जो विश्वासी नहीं हैं, कलीसिया में शामिल हो सकते हैं तो वह भी दूसरों पर बुरा प्रभाव डाल सकते है।

उन लोगों से कई बार मिलना अच्छा है जो अपने उद्धार को सुनिश्चित करने और आध्यात्मिक रूप से बढ़ने में मदद करने के लिए शामिल होना चाहते हैं। (अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "आध्यात्मिक विकास और शिष्यत्व" पुस्तक पढ़े)। उन्हें कलीसिया के विश्वास में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे उन विश्वासों को स्वीकार कर सकते है और उनका पालन कर सकते हैं। जब लोग शामिल होना चाहते हैं तो यह एक ऐसा समय होता है जब वे सीखने और बढ़ने के लिए तैयार होते हैं इसलिए इसका लाभ उठाना अच्छा होता है। हमें दूसरों को प्रशिक्षित करना है (इफिसियों 4:11-12) और ऐसा करने का यह एक बहुत अच्छा तरीका है।

कलीसिया की शाशन प्रणाली- फिर, बाइबल के पास यह कहने के लिए कुछ नहीं है कि एक कलीसिया में किस तरह की शाशन प्रणाली होनी चाहिए। इसमें व्यक्तिगत समूह की स्वतंत्रता है। कुछ में पादरी का कहना ही सब कुछ होता है (लूथरन, पेंटेकोस्टल, आदि)। दूसरों में अगुवे मार्गदर्शन करते हैं और सुझाव देते हैं लेकिन प्रत्येक व्यक्ति का एक समान वोट होता है (बैपटिस्ट, मैनोनाइट, आत्मनिर्भर , धर्मसंग, आदि)। कुछ संप्रदायों में एक व्यक्ति होता है जिसका उस संप्रदाय (एपिस्कोपल, रोमन कैथोलिक, मेथोडिस्ट, पूर्वी रूढ़िवादी) के सभी चर्चों पर पूर्ण अधिकार होता है। फिर भी दूसरों के पास शाशनीय प्रणाली का एक प्रतिनिधि रूप होता है जहां लोग कई प्रतिनिधियों को चुनते हैं जो चर्च को संचालित करने के लिए एक समूह बनाते हैं (प्रेस्बिटेरियन, रिफॉर्मेड, यूनाइटेड चर्च ऑफ क्राइस्ट)। ऐसे लोग भी हैं जो किसी भी प्रकार की शाशन प्रणाली बनाने की कोशिश नहीं करते हैं (ब्रद्रन्स)।

बाइबल कहती है कि प्रत्येक विश्वासी एक याजक है और सभी एक दूसरे के समान और परमेश्वर की दृष्टि में समान हैं (1 पतरस 2:5-9)। एक अंतिम अधिकार रखने वाले एक व्यक्ति को स्थानीय कलीसिया में या पूरे संप्रदाय में दूसरों से ऊपर रखना यह बाइबल की तालीम नहीं है। नए नियम और कलीसिया के

इतिहास का अध्ययन करने के बाद, यह मेरी राय है कि कलीसिया के लोगों को सभी महत्वपूर्ण मामलों में अंतिम निर्णय (एक वोट करने से) देना चाहिए। जब वे अपने अगुओं का सम्मान करते हैं और उनका भरोसा करते हैं, तो वे उनके मार्गदर्शन और सुझावों का पालन भी करेंगे। लेकिन अगर खराब नेतृत्व के साथ कोई समस्या है तो लोग अपने वोट का इस्तेमाल चर्च को ईश्वरीय दिशा में वापस लाने के लिए कर सकते हैं। अगुओं को भी लोगों पर भरोसा करना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए; यह जानते हुए कि परमेश्वर उनसे बात करता है और उनके द्वारा कार्य भी करता है। इसने मेरे लिए मेरी पूरी सेवकाई के लिए बहुत अच्छा काम कीया है। परमेश्वर शाशन प्रणाली के अन्य रूपों में भी काम कर सकता है और करता भी है।

कलीसिया का संविधान, विश्वास की घोषणा - विश्वासियों के किसी भी समूह के लिए यह अच्छा है कि वे जिस शाशन प्रणाली का पालन करना चाहते हैं और यह कैसे काम करेगी, उसे लिखित रूप में रखें । सरकारें और व्यवसायक ऐसा करते हैं। **एक संविधान** कलीसिया में काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कर्तव्यों की व्याख्या करता है। यह विवरण देता है कि कलीसिया कैसे कार्य करेगी और इसकी शासन प्रणाली कैसे काम करेगी। यह लोगों को काम करने के तरीके को चुनौती देने या बदलने से रोकता है।

यह स्पष्ट करना चाहिए कि कलीसिया को कब एकत्र होना है, वे कैसे और कितनी बार प्रभु भोज करेंगे और कहां, किसे और कैसे बपतिस्मा देंगे। यह इसको भी परिभाषित करता है कि एक व्यक्ति कलीसिया में कैसे शामिल होता है और उसकी सदस्यता को दूसरी कलीसिया में स्थानांतरित करने की क्या प्रिक्रिया है । कलीसिया के अनुशासन को स्पष्ट किया जाना चाहिए। जिस तरह से कलीसिया शाशन प्रणाली काम करती है उसे विस्तृत कीया जाता है। वे एक पादरी का चुनाव कैसे करते हैं, योग्यताएँ क्या हैं, और यदि आवश्यक हो तो एक पादरी को कैसे हटाया जाए, यह भी शामिल होता है। पादरी की ज़िम्मेदारियाँ, और उसकी शक्ति की सीमाएँ लिखी जाती हैं। ऐसा ही अन्य अगुओं जैसे सहायक पादरियों, डीकनों और महिला डीकन और महिलाओं और बच्चों के अगुओं के लिए भी किया जाता है। जिस तरह से निर्णय लिए जाते हैं, यह बताए जाने चाहिए। क्या कलीसिया में उत्पन्न होने वाले प्रमुख मुद्दों में पादरी, पादरी और कलीसिया के अन्य अगुओं, या सभी लोगों का कहना अंतिम मन्य होता है? इन चीजों का समय से पहले योजना बनाने और लिखती रूप में होना महत्वपूर्ण हैं , ताकि हर कोई जानता हो और समझता हो कि कलीसिया को कैसे चलाया जाता है।

विश्वास की घोषणा भी जरूरी है। यह लिखिती दस्तावेज बताता है कि कलीसिया बाइबल के मूल सिद्धांतों के बारे में क्या विश्वास करती है। नए सदस्यों को सिखाने का यह एक अच्छा तरीका है। यह भी आश्वासन देता है कि त्रुटि प्रवेश नहीं करती है क्योंकि सब कुछ विश्वास की घोषणा के अनुरूप होता है ।

इस दस्तावेज़ में शामिल होना चाहिए कि समूह धर्मग्रंथों, परमेश्वर पिता, मसीह पुत्र, पवित्र आत्मा, ट्रिनिटी, पाप, उद्धार , कलीसिया , भविष्यवाणी, सुसमाचार प्रचार , मिशन, आध्यात्मिक उपहार और ऐसे अन्य मुद्दों के बारे में क्या मानता है।

प्रत्येक पास्टर को इन बातों के बारे में अपने विश्वासों की पुष्टि करने में मदद करने के लिए अपने स्वयं के विश्वास की घोषणा को लिखने के लिए समय निकालना चाहिए। जब वह पूछताछ करता है, जब संदेह उत्पन्न होता है या दूसरों को यह बताता है कि वह क्या मानता है, तो वह इसका इस्तेमाल कर सकता है। यह एक बहुत अच्छा अनुशासन है जब कोई सेवकाई शुरू करता है।

डीकन नया नियम एक स्थानीय कलीसिया में अगुवों के दो समूहों की बात करता है। आध्यात्मिक अगुवे जो कलीसिया की निगेबानी करते हैं और आध्यात्मिक जरूरतों का ख्याल रखते हैं। उन्हें पादरी, चरवाहा,

सेवक , प्राचीन, निगेबान या बिशप कहा जा सकता है - ये सभी एक ही व्यक्ति को संदर्भित करते हैं। इनकी आत्मिक आवश्यकताएं 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:6-9 में वर्णत की गयी हैं

इसके अतिरिक्त, ऐसे लोग भी हैं जिन्हें इमारत (भवन) के रख-रखाव के लिए जिमेदार नियुक्त किया जाता है और जो उनकी जरूरतों की देखरेख करने के लिए उपस्थित होते है । इन्हें डीकन (प्रेरितो के काम 7 अध्याय) कहा जाता है। वे भौतिक, शरीरक और आर्थिक जरूरतों का ध्यान रखते हैं ताकि आध्यात्मिक अगुवाओं के पास मण्डली की आध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अधिक समय रह सके। उनकी आवश्यकताएं 1 तीमुथियुस 3:8-13 में सूचीबद्ध की गयी हैं।

नया नियम महिला डीकन के बारे में भी बात करता है, महिला डीकन जो महिलाओं और बच्चों की शारीरिक जरूरतों को पूरा करने के द्वारा पुरुष डीकनों की सहायता करती हैं (1 तीमुथियुस 3:1)। यह कलीसिया में पुरुष अगुओं के साथ-साथ महिलाओं के लिए भी एक बड़ी मदद साबित हो सकती है। डीकनेस डीकन के अधिकार में कार्य करती हैं और उन्हें रिपोर्ट करती हैं।

अवज्ञाकारी भेड़-कभी-कभी एक भेड़ चरवाहे या अन्य भेड़ों पर हमला करेगी। वे सोच सकती है कि वे चरवाहे से बेहतर जानती है और अन्य भेड़ों को रह से भटकाने की कोशिश करती है। या वे अवज्ञाकारी हो सकती है और झुंड को छोड़ सकती है। एक अच्छे चरवाहे को ऐसी भेड़ों के साथ प्रेमपूर्वक लेकिन दृढ़ता से व्यवहार करने की ज़रूरत है। उन्हें अगुओं द्वारा चेतावनी दी जाने की आवश्यकता है और यदि वे नहीं बदलते हैं, तो अंततः उन्हें झुंड से हटा दिए जाना चाहिए। यह एक पास्टर के लिए सुखद कार्य नहीं है परन्तु कभी-कभी एक आवश्यक कार्य होता है (मत्ती 18:15-17; 1 कुरिन्थियों 5:1-13; तीतुस 1:13; गलतियों 6:1)। यह बाकी झुंड के लिए किया जाता है, लेकिन यह गुमराह भेड़ों को अपनी गलतियों को देखने और पश्चाताप करने का मौका भी देता है (1 कुरिन्थियों 5:5;2 कुरिन्थियों 2:5-11)। (ऊपर "भेड़ों की रक्षा के लिए "ख " कर्तव्य" के तहत कलीसिया का अनुशाशन " भी देखें।)

इसे लागु करने में प्रशन : *आपको कलीसिया में किस प्रकार की शाशन प्रणाली सबसे अच्छी लगती है? क्यों? इसकी ताकतें क्या हैं? इसकी कमजोरियां क्या हैं? आप कमजोरियों को कैसे दूर कर सकते हैं? आप क्या मानते हैं कि कलीसिया की सदस्यता के लिए क्या आवश्यकताएं होनी चाहिए? आप इसका समर्थन बाइबल से कैसे कर सकते हैं?*

5. कलीसिया के अध्यादेश

प्रभु भोज दो नियम हैं जिनका पालन विश्वासियों के प्रत्येक हिस्से को करना है, वो हैं : प्रभु भोज और बपतिस्मा। यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ने से एक रात पहले प्रभु भोज की स्थापना की थी (मत्ती 26:17-29; 1 कुरिन्थियों 11:23-30)। उसने अपने अनुयायियों को उसके जाने के बाद भी ऐसा करते रहने की आज्ञा दी, "मेरे स्मरण में ऐसा ही करो" (1 कुरिन्थियों 11:24-25)। यह हमारे लिए बहाए गए यीशु के लहू और हमारे लिए टूटे हुए उसके शरीर को याद करने के लिए किया जाता है (1 कुरिन्थियों 10:16)।

बाइबल हमें यह नहीं बताती कि ऐसा कितनी बार करना है। आरंभिक कलीसिया इसे हर हफ्ते करती थी, जब वे मिलते थे (प्रेरितों के काम 20:7) लेकिन हमें ऐसा करने की आज्ञा नहीं दी गई है। ना ही बाइबल हमें बताती है कि किन चीजों का उपयोग करना है। यीशु अपने शिष्यों के साथ फसह का पर्व मना रहा था इसलिए उन्होंने दाख रस और अख्मीरी रोटी का इस्तेमाल किया। प्रत्येक कलीसिया चुन सकती है कि उनके समय और संस्कृति में कौन सी चीजें उनके लिए सर्वोत्तम हैं। खास बात जो मायना रखती है वो है कि यह यीशु की प्रेमपूर्ण यादगारी में किया जाता है - यह कब और कैसे किया जाता है, यह मुख्य बात नहीं है जिस पर ध्यान केन्द्रित कीया जाए। केवल इसे करने से हमें कुछ प्राप्त नहीं होता।

हमारे दिलों में एकमात्र लाभ तब होता है जब हम क्रूस पर हमारे लिए यीशु के कार्य के लिए उसकी स्तुति करते हैं।

पादरियों को नियमित रूप से (साप्ताहिक, मासिक या जो भी उनकी कलीसिया के लिए सबसे अच्छा है) प्रभु भोज का पालन करने के लिए अपनी मंडलियों का नेतृत्व करना चाहिए। बाइबल यह नहीं कहती है कि केवल एक पास्टर ही प्रभु भोज का प्रबंध कर सकता है। एक पिता द्वारा अपने परिवार का इस प्रकार आराधना में नेतृत्व करने में कोई बुराई नहीं है। कोई भी व्यक्ति या विश्वासियों का समूह प्रभु भोज का पालन कर सकता है। एकमात्र आवश्यकता यह है कि भाग लेने वाले विश्वासी हों और अपने जीवन में ज्ञात, जानबूझकर किए गए पाप के साथ नहीं जी रहे हों (1 कुरिन्थियों 11:27-32)।

प्रभु-भोज का पालन करना कोई ऐसा अनुष्ठान नहीं है जो आशीष अर्जित करता हो या हमारे पापों को मिटा देता हो। यह कोई नेक कार्य नहीं है जिससे हम परमेश्वर से कुछ कमाते हैं। पेय या रोटी रूप नहीं बदलते, वे सिर्फ रोटी और पेय ही रहते हैं। महत्व हमारे दिलों में है। यह केवल हमारे लिए क्रूस पर यीशु के कार्य को याद करने और उसके लिए उसे धन्यवाद देने का एक तरीका है। यह यीशु के शरीर को तोड़े गए और उद्धार के लिए बहाए गए खून की यादगारी है। जैसे रोटी और पेय स्वतंत्र रूप से प्राप्त होते हैं, वैसे ही मुक्ति भी स्वतंत्र रूप से प्राप्त होती है। इसके लिए भुगतान किसी दुसरे ने किया था लेकिन इसे विश्वास में प्राप्त किया जाना चाहिए।

बपतिस्मा -बपतिस्मा भी एक बाहरी क्रिया है जिसका उद्देश्य है आंतरिक विश्वास को दिखाना। यह पानी के नीचे जाने का कार्य नहीं है जो मायने रखता है , बल्कि दिल का रवैया है जो मायने रखता है। यीशु ने स्वयं यह दिखाने के लिए बपतिस्मा लिया था कि वह अपनी पहचान मानवजाति के साथ बना रहा है (मत्ती 3:13-17)। हमारा बपतिस्मा यीशु के साथ हमारी पहचान को दर्शाता है (1 पतरस 3:21; गलातियों 2:20; रोमियों 6:3)। यीशु मरा, कब्र में गया और जीवित निकला। जब हम पानी के नीचे जाते हैं और ऊपर आते हैं तो यही चित्रित होता है - हम यीशु के साथ क्रूस पर मरे और उसके साथ एक नए जीवन में वापस आए (रोमियों 6:1-7; गलातियों 2:20)।

प्रभु भोज की तरह, विश्वासी के लिए बपतिस्मा की आज्ञा भी दी जाती है (मत्ती 20:19-20; प्रेरितों के काम 2:38; 22:16)। प्रभु भोज के विपरीत, जिसे बार-बार किया जाना है, बपतिस्मा एक ही बार करने वाला कार्य है जो दर्शाता है कि हम मर चुके हैं और मसीह में होकर जीवन में वापस आ गए हैं (गलातियों 3:26-27)। मुक्ति एक बार की घटना है और इसी तरह बपतिस्मा, जो बाहरी रूप से दिखाता है कि आंतरिक रूप से क्या हुआ, यह भी एक ही बार होने वाली घटना है और इसे जीवन में बाद में दोहराने की आवश्यकता नहीं है। यदि एक पादरी को लगता है कि किसी के फिर से बपतिस्मा लेने का कोई विशेष कारण है, और प्रार्थना के बाद उसे लगता है कि वह इसके साथ आगे बढ़ सकता है, तो ठीक है। लेकिन यह केवल विशेष परिस्थितियों के लिए है। यदि एक विश्वासी ने एक बार बपतिस्मा लिया है, तो उसे केवल एक अलग चर्च में शामिल होने के लिए दुबारा बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है।

मुक्ति के लिए बपतिस्मा आवश्यक नहीं है - मुक्ति के लिए बपतिस्मा आवश्यक नहीं है। उद्धार केवल विश्वास के द्वारा अनुग्रह से है (रोमियों 3:22, 24, 25, 26, 28, 30; 4:5; गलातियों 2:16; इफिसियों 2:8-9; फिलिप्पियों 3:9, आदि)। प्रेरितों के काम 2:38 जैसे कुछ आयतें कहती हैं, "पश्चाताप करो और बपतिस्मा लो," और कुछ में उद्धार के साथ बपतिस्मा शामिल है। लेकिन यूनानी भाषा , जिसमें नया नियम लिखा गया था, यह स्पष्ट करता है कि केवल एक ही आज्ञा है - पश्चाताप। बपतिस्मा पश्चाताप का स्वाभाविक प्रदर्शन है और बाद में दूसरों को यह दिखाने के तरीके के रूप में आता है कि उनके दिल में पहले से ही क्या हो चुका है। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के उपदेश में (प्रेरितों के काम 3:12-26) वह बपतिस्मे का

कोई संकेत नहीं देता। पौलुस ने कभी भी पानी के बपतिस्मे को अपनी सुसमाचार प्रस्तुतियों का हिस्सा नहीं बनाया (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। 1 कुरिन्थियों 1:17 में, पौलूस कहता है कि "मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, बल्कि सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा," इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से बपतिस्मा से सुसमाचार को अलग करता है।

बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि हम पवित्र आत्मा को उद्धार के समय प्राप्त करते हैं, बपतिस्मा लेने पर नहीं (प्रेरितों के काम 10:47; 1 कुरिन्थियों 12:131)। विश्वास के क्षण में पवित्र आत्मा उद्धार, नया जन्म लाता है।

बाइबल उन लोगों के बारे में बताती है जो बपतिस्मे के अलावा बचाए गए थे। पश्चाताप करने वाली स्त्री (लूका 7:37-50), लकवाग्रस्त पुरुष (मत्ती 9:2), चुंगी लेने वाला (लूका 18:13-14), और क्रूस पर चढ़ा चोर (लूका 23:39-43) सभी ने बपतिस्मा लेने के बिना पापों की क्षमा का अनुभव किया। बपतिस्मा लेने से पहले कुरनेलियुस स्पष्ट रूप से एक विश्वासी था (प्रेरितों के काम 10:44-48)। ऐसा ही कूशी खोजा था (प्रेरितों के काम 8:26-40)। जल बपतिस्मा निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है और जब भी संभव हो इसे प्रशासित किया जाना चाहिए। हालाँकि, नया नियम यह नहीं सिखाता है कि उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक है। यह यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा आंतरिक शुद्धिकरण का बाहरी प्रमाण है।

डुबकी द्वारा बपतिस्मा कुछ लोग आज शिशुओं को 'बपतिस्मा' देते हैं, या एक वयस्क पर पानी छिड़कते हैं और उसे 'बपतिस्मा' कहते हैं। हालाँकि, बाइबल जो आज्ञा देती है वह उन लोगों के लिए पूर्ण डुबकी है जो परमेश्वर के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करने के लिए पर्याप्त परिपक्व हैं। इसके लिए बाइबल में बहुत समर्थन है।

"डुबकी " शब्द बैपटिजो का प्राथमिक अर्थ है। इसका उपयोग जहाज के डूबने या डाई में डूबे हुए कपड़े के लिए किया जाता है। यदि "डालना" या "छिड़कना" अन्य यूनानी शब्दों का अर्थ होता जो स्पष्ट रूप से इन कृत्यों का संकेत देते, तो इसका उपयोग किया जाता।

इसके अतिरिक्त, नया नियम (अंदर में " और "उससे बाहर ") में इसके साथ उपयोग किए जाने वाले पूर्वसंग सबसे अच्छा समझाते हैं यदि व्यक्ति को "पानी में" डुबोया जा रहा है और फिर उसे "बाहर" लाया जा रहा है। डुबकी , मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरूत्थान, और मसीही विश्वासी की उसके पुराने तरीकों से मृत्यु और मसीह में एक नए जीवन के लिए पुनरुत्थान को बेहतर रूप से चित्रित करती है (रोमियों 6:1-4 और कुलुस्सियों 2:10-12)।

यहूदी धर्म में परिवर्तित होने वाले किसी व्यक्ति को पानी में डुबकी लगाने की यहूदी प्रथा से मसीही बपतिस्मा विकसित हुआ। यहूदी प्रथा और मसीही प्रथा के बीच का अंतर यह है कि यहूदी धर्मांतरण करने वाले यहूदी खुद को डुबोते हैं, यहूदियों के साथ पहचान बनाने की अपनी इच्छा दिखाते हैं। मसीहीयों को किसी और के द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है, इसे दिखाते हुए, कि मुक्ति की तरह, यह स्वयं का नहीं है, बल्कि कुछ ऐसा है जो वे स्वतंत्र रूप से प्राप्त कीया जाता है ।

प्रारंभिक कलीसिया में डुबकी का उपयोग कीया जाता था और नए नियम में बपतिस्मे के सभी उदाहरण या तो इसी की मांग करते हैं या सबसे निश्चित रूप से डुबकी की अनुमति देते हैं। इथियोपिया के खोजे ने यह कहा , "देखो, यहाँ जल है" (प्रेरितों के काम 8:36); तब यह कहता है कि वे जल में गए और जल में से निकल आए। जाहिर है उसमें का जल उसे डुबकी देने के लिए काफी था। अगर डुबकी लगाना जरूरी ना होता तो वह उसमें क्यों जाते ?

यह देखना दिलचस्प है कि पूर्वी कट्टरपंथी कलीसिया - जो पहली शताब्दी से लगातार यूनानी का उपयोग कर रहे हैं, पानी के छिड़काव या डालने के बजाय डुबकी द्वारा बपतिस्मा देते हैं।

बपतिस्मा शिशुओं के लिए नहीं -शिशुओं को बपतिस्मा देने के लिए कोई बाइबिल प्रमाण नहीं है, केवल उनके लिए है वे जो यीशु के लिए निर्णय ले सकते हैं। यह केवल वह उमरदराज लोग हैं जो यीशु के प्रति समर्पण करते हैं, जिन्होंने बपतिस्मा लिया है (प्रेरितों के काम 10:48; 8:36-38; लूका 3:21-22; मत्ती 28:19-20)। यह एक प्रतिक्रिया के रूप में किया जाता है; उद्धार की गवाही जो केवल वही कर सकते हैं जिन्होंने उद्धार को स्वीकार कर लिया है।प्रभु भोज की तरह, बपतिस्मा कौन दे सकता है, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। यह कोई आध्यात्मिक अगुवा या पादरी होता है जिसे बपतिस्मा का प्रबंध करने के लिए उचित समझा जा सकता है। पत्नियों या बच्चों के मामले में, कुछ लोग आज पिता को वास्तविक डुबकी देने वाले के रूप में नियुक्त करते हैं जबकि पादरी केवल रस्म की सचाई बताता है जो क्या हो रहा है। चूंकि पिता घर का मुखिया होता है, इसलिए इसका पालन करना एक अच्छी प्रथा है। यह उसे और उसके परिवार को एक साथ यीशु का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है। मैंने इस अभ्यास का पालन किया और इसमें शामिल सभी लोगों के लिए इसे बहुत मायने रखता हुआ पाया है।

बपतिस्मा और कलीसिया की सदस्यता -कई कालीसीयाएं बपतिस्में को कलीसिया की सदस्यता के लिए अनिवार्य बना देती हैं। यह सुनिश्चित करने का एक अच्छा तरीका है कि व्यक्ति उद्धार को समझता है और उसने यीशु के प्रति व्यक्तिगत प्रतिबद्धता की है। हालाँकि, बपतिस्मा और कलीसिया की सदस्यता अलग-अलग निर्णय होने चाहिए। सिर्फ बपतिस्मा लेने का मतलब यह नहीं है कि कोई व्यक्ति कलीसिया की सदस्यता के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को करने के लिए आटोमेटिक ही तैयार हो गया है। बपतिस्में के लिए एक प्रतिबद्ध जीवन की आवश्यकता है और यह दिखाने की इच्छा होती है कि उस व्यक्ति ने उद्धार प्राप्त कर लिया है।

वयस्कों के लिए हमारी कलीसिया में शामिल होने के लिए बपतिस्मा एक आवश्यकता है, लेकिन मैं उन लोगों को भी बपतिस्मा देता हूँ जो उस समय प्रतिबद्धता बनाने के लिए तैयार नहीं थे। मैं चाहता था कि वे इन्हें दो अलग-अलग प्रतिबद्धताओं के रूप में देखें। बपतिस्में के द्वारा सभी के लिए उद्धार का काम, विश्वासियों के एक स्थानीय समूह के प्रति प्रतिबद्धता में आने से पहले आता है। एक नया विश्वासी तैयार हो सकता है और यह दिखाने के लिए बपतिस्मा लेना चाहता है कि उसके पास उद्धार है, लेकिन उसके जीवन में अभी भी कुछ ऐसे मुद्दे हो सकते हैं जिन्हें परमेश्वर को पूरी तरह से समर्पित जीवन जीने के लिए प्रतिबद्ध होने से पहले उन पर काम करने की आवश्यकता है। बपतिस्मा का मतलब जीवन में पीछे मुड़कर देखना और यीशु के साथ मरने और जीवन में आने का प्रतीक है। कलीसिया की सदस्यता के लिए प्रतिबद्ध होना मतलब यीशु के शिष्य के रूप में एक पवित्र जीवन जीने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने के लिए तैयार होना है। कलीसिया की सदस्यता के लिए और अधिक की आवश्यकता है: एक जीवन जो यीशु की आज्ञाकारिता में और विश्वासियों के एक स्थानीय समूह के लिए प्रतिबद्ध होने की इच्छा में जिया गया हो। उन्हें अलग-अलग कदम की तरह रखना बेहतर होगा । ये अलग-अलग प्रतिबद्धताएं हैं और इन्हें भ्रमित या मिश्रित नहीं किया जाना चाहिए।

एक पादरी या किसी अन्य परिपक्व मसीही को उस व्यक्ति से मिलना चाहिए, जो बपतिस्में के लिए अनुरोध करता है, ताकि उन्हें उद्धार को समझने और यीशु का अनुसरण करने में मदद मिल सके। शिष्यत्व प्रशिक्षण शुरू करने का यह एक अच्छा समय और अवसर है। बपतिस्मा लेने में दिलचस्पी रखने वालों के साथ बैठकों की एक श्रृंखला का होना अच्छा है ताकि वे अपने उद्धार को सुनिश्चित कर सकें, उन्हें इसके महत्व और अर्थ को सिखाया जा सके और उन्हें मसीही जीवन और कलीसिया की सदस्यता

की मूल बातें सिखाई सके। कई कलिसीयाओं में इसके लिए कक्षाएं होती हैं, जब कभी भी इसके बारे में अधिक जानने के इच्छुक लोगों का एक समूह होता है। यह उन लोगों को बपतिस्मे की व्याख्या कर सकता है जो बहुत चाहवान हैं लेकिन इसे पूरी तरह से नहीं समझते हैं।

शिशु समर्पण - बच्चों या बच्चों को समर्पित करना कोई अभिषेक नहीं है। इसकी आज्ञा यीशु ने नहीं दी है, लेकिन यह एक अच्छा अभ्यास है जिसका अधिकांश कलिसियांए पालन करते हैं। एक बच्चे को समर्पित करना उद्धार प्रदान नहीं करता है - यह केवल तभी आता है जब वे इतने बड़े हो जाते हैं कि यीशु के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार कर सकते हैं। परमेश्वर के कोई पोते/नाते नहीं हैं, केवल बच्चे हैं।

माता-पिता को विश्वासियों के एक समूह के सामने अपने बच्चों को परमेश्वर के लिए समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करना एक अच्छा अभ्यास है। यह पादरी को माता-पिता से मिलने और उन्हें उद्धार के बारे में सिखाने और उनको आपने बच्चों को प्रभु को जानने में विकास करने में मदद करने का समय देता है। जब बच्चा कलीसिया में समर्पित होता है तो यह कलीसिया में दूसरों के लिए एक अच्छा उदाहरण पेश करता है और पादरी को ईश्वरीय बच्चों की परवरिश के बारे में बात करने का मौका देता है। यह सभी उपस्थित लोगों को यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करने का भी एक अच्छा समय है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं और सीखते हैं कि वे परमेश्वर को समर्पित थे, इस से उनके आगे आध्यात्मिक विकास के लिए एक ठोस नींव रखी जाती है। समर्पित होने की जागरूकता बच्चे के जीवन में सुरक्षा और उद्देश्य लाती है।

समर्पण आमतौर पर एक पादरी के द्वारा किया जाता है जो कुछ शब्द बोलकर जो हो रहा है उसकी व्याख्या करता है । 1 शमूएल 1:20-28; भजन संहिता 103:17-18; मत्ती 19:13-15; मरकुस 10:13-16 या लूका 18:15-17 को पढ़ा जा सकता है या सुबह की सभा में उपदेश के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

जबकि बच्चा अपने माता-पिता और कलीसिया द्वारा परमेश्वर की देखभाल के लिए समर्पित कीया जाता है, यह माता-पिता के लिए भी आपने बच्चे को यीशु के लिए जीने के लिए पालने की जिमेदारी के लिए समर्पण कारने का समय होता है। इसलिए, केवल मसीही माता-पिता ही ऐसा कर सकते हैं। यदि माता-पिता में से एक विश्वासी है और एक नहीं है और वे अपने बच्चे को समर्पित करना चाहते हैं, तो अविश्वासी जन को उद्धार की सचाई से अवगत करने का यह एक अच्छा समय होता है। बच्चे की खातिर और माता-पिता में से एक विश्वासी के लिए, हमें भी बच्चे को समर्पित करने की रस्म पूरी करनी चाहिए। जब माता-पिता में से एक जन भी विश्वासी होता है तो परमेश्वर उसका आदर करता है और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 7:14)।

जब माता-पिता दोनों अविश्वासी हों, तो हमें यह पता लगाने के लिए माता-पिता से बात करनी चाहिए कि वे अपने बच्चे को समर्पित क्यों करना चाहते हैं। यह उनसे सुसमाचार की सच्चाई के बारे में बात करने का एक अच्छा तरीका है। मैं जाने से पहले माता-पिता के साथ प्रार्थना करूंगा, परमेश्वर को कहूंगा कि वह उन्हें यीशु को उनकी जरूरत के रूप में दिखाए । मैं भी वही करता जो वे चाहते और परमेश्वर से प्रार्थना करता कि वह इस बच्चे को अपना काबूल करे और जब वह समझने लगे तो परमेश्वर उसे आपने बारे में एक उद्धार कर्ता होने के ज्ञान में लाएँ। मैं उसे इस बच्चे के पूरे जीवन में परमेश्वर की सेवा करने के लिए बच्चे का उपयोग करने के लिए भी कहूंगा। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि माता-पिता ने यह समझ लिया है कि जीवन में उद्धार बच्चे का व्यक्तिगत निर्णय है/होगा । मैं चर्च सभा में बच्चे के लिए प्रार्थना नहीं करूंगा, क्योंकि इससे वहां के लोगों को गलत संदेश जा सकता है और यह अविश्वासी माता-पिता

को झूठा आश्वासन देना साबित हो सकता है। उन्हें पता होना चाहिए कि मसीही धर्म परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध है, नाकि अनुष्ठानों या परंपराओं का पालन करने का एक मिश्रण ।

मुक्ति के लिए आयु - बाइबल आयु का कोई न्यूनतम स्तर नहीं देती है कि कब कोई अपने पाप को पहचान सकता है और यीशु के उद्धार का मुफ्त उपहार स्वीकार कर सकता है। कई 4 या 5 साल की उम्र के छोटे बच्चों ने विश्वास की घोषणा की है और आपने पूरे जीवन में यीशु का ईमानदारी से पालन किया है। उद्धार तब आता है जब एक व्यक्ति अपने आप को वह सब जो उसके पास है और जिसे वह समझता है, वह सब यीशु को देता है । इसमें कोई रोक-टोक नहीं है। यह मानसिक या भावनात्मक मुद्दों वाले लोगों के लिए भी सच है। हम जो जानते हैं और समझते हैं, परमेश्वर हमें केवल उसके लिए जवाबदेह ठहराता है, और यदि हम अपना सब कुछ देते हैं और यीशु के बारे में जो कुछ हमने सुना है उस पर विश्वास करते हैं तो विश्वास करने का यह कार्य उद्धार के लिए काफी है। जैसे-जैसे वे बड़े होंगे, वे यीशु के बारे में अधिक जानेंगे और आपने जीवनों में उसके होने की आवश्यकता को और अधिक स्पष्ट रूप से देखेंगे। वे लगातार स्वयं को प्रतिबद्ध करते रहेंगे, जैसा कि हम सब करते हैं (रोमियों 12:1-2) परन्तु उद्धार केवल एक बार ही होता है - पहली बार परमेश्वर के उपहार को समझा जाता है, बेशक यह अपूर्ण रूप से हो ,और इसे स्वीकार किया जाता है, इसमें कुछ भी कमी नहीं रहती । यीशु ने स्वयं कहा था कि वयस्कों को एक छोटे बच्चे की तरह विश्वास करना चाहिए, उसने यह नहीं कहा कि बच्चों को एक वयस्क की तरह विश्वास करना चाहिए (मत्ती 18:2-4)।

बपतिस्मा के लिए आयु - इससे एक अन्य प्रशन उत्पन्न होता है कि किस उम्र में एक ऐसे बच्चे को बपतिस्मा दिया जाए, जो एक नया विश्वासी है। कुछ लोग बड़े होने तक प्रतीक्षा करने पर जोर देते हैं ताकि वे अपनी प्रतिबद्धता को बेहतर ढंग से समझ सकें, और यह अकलमंदी की बात है। मैंने व्यक्तिगत रूप से बच्चों को बपतिस्मा देना चुना जैसे ही उन्होंने यह अनुरोध किया कि वे स्पष्ट रूप से अपने उद्धार की पुष्टि कर सकते हैं और बता सकते हैं कि वे बपतिस्मा क्यों लेना चाहते हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से महसूस करता हूं कि किसी बच्चे को यह बताना सही नहीं है कि वह बड़े होने तक ऐसा नहीं कर सकता। यीशु स्पष्ट रूप से बच्चों को वैसे ही स्वीकार करता है जैसे वे हैं (मत्ती 19:14)। बच्चों को उससे दूर करने के लिए यीशु ने शिष्यों की आलोचना की (मरकुस 10:14)। मैं निश्चित रूप से इसके लिए दोषी नहीं होना चाहता। मैं माता-पिता से कहता हूं कि वे अपने छोटे बच्चों को बपतिस्मे के लिए मजबूर ना करें , बल्कि तब तक प्रतीक्षा करें जब तक कि वे इसके बारे में खुद नहीं कहते । तब हम इसके महत्व की व्याख्या कर सकते हैं और यदि वे बपतिस्मा लेना चाहते हैं, तब हम जान लेते हैं कि यह एक वास्तविक निर्णय है।

प्रभु भोज में भाग लेने के लिए आयु -यह मेरी प्रथा है कि मैं उन बच्चों को प्रभु भोज में भाग लेने की अनुमति देता हूँ जो यीशु के उद्धार के प्रावधान को समझते हैं । जब छोटे बच्चे प्यार और विश्वास का वह कदम उठाते हैं, तो मुझे निश्चित रूप से यकीन होता है कि यीशु के मन में कोई आपत्ति नहीं है। जब वे यीशु तक पहुंचना चाहते हैं तो मैं हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। यीशु ने कहा कि जो लोग छोटे बच्चों को उनके विश्वास में ठोकर खिलाते हैं, उनके लिए बेहतर होगा कि उनके गले में चक्की का पाट लटकाकर उन्हें समुंदर में फेंक दिया जाए (मत्ती 18:6; मरकुस 9:42; लूका 9:56 - ध्यान दें कि यह 3 सुसमाचारों में दर्ज है।)। माता-पिता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि जो हो रहा है उसका अर्थ और महत्व सिखाने के लिए एक प्रशिक्षण समय के रूप में प्रभु भोज का उपयोग करें (व्यवस्थाविवरण 6:7; 11:19)। यह मेरा विश्वास है कि बच्चों को भाग लेने देने की तुलना में उनको इसमें भाग लेने में रोकना अधिक खतरनक हो सकता है। मैं कभी नहीं चाहता कि वे यह सोचें कि यीशु के पास आने से पहले कुछ और भी आवश्यकताए

हैं । मैं निश्चित रूप से उनसे ऐसे नहीं कहना चाहता कि वे यीशु का अनुसरण करने के लिए अभी बहुत छोटे हैं।

कलीसिया की सदस्यता के लिए आयु - मैं अपनी सेवकाई में बच्चों को तब बपतिस्मा देता हूं जब वे उद्धार और बपतिस्मा के अर्थ को समझते हैं। छोटे बच्चों को बपतिस्मा दिया जा सकता है, लेकिन मेरी कलीसिया के संविधान में कहा गया है कि वे 18 साल तक वोट देने वाले सदस्य नहीं हो सकते, यही उम्र संयुक्त राज्य अमेरिका में उनके वोट देने वाले नागरिक बनने की है । यह एक अच्छा समझौता है इसलिए वे जिम्मेदारियों और लाभों के साथ सदस्य हो सकते हैं, लेकिन उन वयस्क निर्णयों में शामिल नहीं हो सकते हैं जिनमें मतदान करना शामिल हो ।

इसे लागु करने में प्रशन : *जब आपने यीशु पर विश्वास किया तब आप कितने वर्ष के थे? एक बच्चे के मसीही बनने की उम्र के बारे में आपका व्यक्तिगत विश्वास क्या है, कब वे प्रभु भोज में हिस्सा ले सकते हैं और कब उन्हें बपतिस्मा दिया जा सकता है? आपके लिए, प्रार्थना और बाइबल अध्ययन के माध्यम से अपने किसी निर्णय पर आना, महत्वपूर्ण है। आप स्थिति का सामना करने तक की प्रतीक्षा ना करें, अभी अपनी आन्तरिक भावनाओं पर प्रिक्रिया करें।*

6. कलीसिया की सेवाएं

कलीसिया मण्डली के लोगों के साथ-साथ समुदाय के अन्य लोगों को भी कई सेवाएँ प्रदान करती है। इनमें से कुछ तब होती हैं जब कलीसिया इकट्ठा होती है, अन्य व्यक्तिगत आधार पर होती हैं और फिर भी कई अप्रतिय्क्ष कर्तव्य होते हैं जिन्हें पादरी के आलावा कोई नहीं देखता। इनका या तो वह खुद , या फिर कोई ऐसा व्यक्ति जिसे वह प्रशिक्षित करता है और नियुक्त करता है, उन सभी के लिए जिम्मेदार होता है। आइए इन कर्तव्यों को देखें।

शादियाँ -बाइबल में मसीहीयों के लिए केवल चर्च ईमारत में या पादरी द्वारा ही शादी पड़े जाने का कोई आदेश नहीं है, लेकिन इसका कारण केवल यह है कि वे चाहते हैं कि उनके विश्वासी साथी और परमेश्वर, उनके इस तरह के एक महत्वपूर्ण शुरुआत का हिस्सा बनें। कानूनी अधिकारियों या अन्य लोगों द्वारा किए गए विवाह परमेश्वर की दृष्टि में बंधनीय और मान्य हैं, लेकिन मसीहीयों के साथ आने से मसीही शादी / विवाह विशेष है। यीशु ने काना में विवाह समरोह में उपस्थित हो कर परमेश्वर की दृष्टि में विवाह का समर्थन किया (यूहन्ना 2:1-11)।

मसीही विश्वासी होने के नाते हमारे लिए अपनी सरकार का पालन करना और उसके असूलों का पालन करना आवश्यक है, और यह विवाह करने में भी सत्य है (रोमियों 13:1-2)। पता करें कि आपकी स्थानीय सरकार की कानूनी आवश्यकताएं क्या हैं और उनका पालन करें। परमेश्वर की दृष्टि में किसी से विवाह करना, परन्तु सरकारी दृष्टि से विवाह नहीं करने की अनुमति नहीं है (रोमियों 13:1-7)। यदि कोई जोड़ा उस सरकार के निर्धारित मानकों का पालन नहीं करता है जहाँ वे रहते हैं, तो उनका विवाह परमेश्वर की दृष्टि में भी नहीं किया जा सकता है।

शादी से पहले एक जोड़े को सलाह देने का यह एक बड़ा विशेषाधिकार और शानदार अवसर है। जितना अधिक समय हम उनके साथ बिता सकते हैं उतना अच्छा है। हमें उन्हें यह जानने में मदद करनी चाहिए कि परमेश्वर प्रेम और विवाह के बारे में क्या कहता है (अधिक जानकारी के लिए देखें "शादी और सेवकाई " जेरी श्मॉयर की पुस्तक पढ़े)। यह उन्हें शिष्य बनाने का भी एक अच्छा समय है (अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "आध्यात्मिक विकास और शिष्यत्व" पुस्तक पढ़े)। (शादी के लिए उपयोग किए जाने वाले उपदेश के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "बाइबल का प्रचार और शिक्षण" पुस्तक पढ़े)।

मसीही जोड़ों को विवाह के अर्थ और उद्देश्य, पिता और पति की भूमिका और पत्नी और माता की भूमिका के बारे में बाइबल की शिक्षाओं को स्पष्ट रूप से समझना और स्वीकार करना चाहिए। पादरियों के रूप में यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम सुनिश्चित करें कि वे इन बातों को जानते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए, पास्टर का बहुत अधिक समय खर्च करने की बजाये, उन्हें विवाह के बारे में एक अच्छी किताब पढ़ने की आवश्यकता हो सकती है, जैसे कि मेरी पुस्तक "शादी और सेवकाई ।" जबकि इसमें सेवकाई वालों के लिए सिद्धांत शामिल हैं, यह शादी करने वाले सभी लोगों के लिए एक अच्छी सामान्य पुस्तक है।

बाइबल स्पष्ट दिशा-निर्देश देती है कि मसीही किससे शादी कर सकते हैं - एक अन्य विकासशील मसीही के साथ (2 कुरिन्थियों 6:14)। हमें उन दो लोगों के बीच विवाह नहीं करना है जो यीशु के प्रति एक सा प्रेम और प्रतिबद्धता को साझा नहीं करते हैं। हमें एक विश्वासी और अविश्वासी का विवाह नहीं करना है। हमें किसी ऐसे व्यक्ति से प्रतिबद्ध, विकासशील विश्वासी का विवाह उस से नहीं करना है जो विश्वासी होने का दावा करता है लेकिन यीशु का 100% अनुसरण करने या यीशू में विकास करने की कोई इच्छा नहीं रखता है।

मैंने दो अविश्वासियों का विवाह किया है, क्योंकि वे समान रूप से जुए में हैं। यह मुझे उनके साथ बाइबल की सच्चाई साझा करने का एक शानदार अवसर देता है। मैं उन्हें समझाता हूं कि परमेश्वर की आशीष पाने के लिए उन्हें उसका अनुसरण करना चाहिए और चूंकि वे ऐसा नहीं कर रहे हैं इसलिए मैं उन्हें यह नहीं बता सकता कि उनके पास परमेश्वर की आशीष है। मैं शादी समारोह में जो कुछ भी कहता हूं उसमें मैं सावधान रहता हूं, इसलिए उन्हें नहीं लगता कि उनके पास परमेश्वर का आशीर्वाद है क्योंकि एक पादरी उनकी शादी कर रहा है। इस तरह से अविश्वासियों की सेवा करने का मेरा अच्छा अनुभव रहा है। यह मुझे शादी में शामिल होने वाले लोगों को यीशु के बारे में बताने का अवसर भी देता है।

मैं उस जोड़े का विवाह नहीं करूँगा जहाँ एक ने यीशु पर विश्वास किया हो और दूसरे ने नहीं (2 कुरिन्थियों 6:14)। मुझे नहीं लगता कि किसी मसीही पादरी को ऐसा करना चाहिए। मैंने कई मसीही जोड़ों की शादी की है जो एक साथ रह रहे थे। मेरा मानना है कि उन्हें सही काम करना चाहिए और शादी करनी चाहिए, और मेरे पास उन्हें सलाह देने और उनके विश्वास में बढ़ने में मदद करने का एक खुला अवसर है। मैं चर्च की इमारत में उनकी शादी नहीं करूंगा क्योंकि मैं यह आभास नहीं देना चाहता कि परमेश्वर उनकी शादी को आशीश दे रहा है जबकि वे उसे अस्वीकार करते हैं। मैं उन्हें यह स्पष्ट कर देता हूं कि परमेश्वर चाहता है कि उनकी शादी हो, लेकिन शादी के बाहर शरीरक सम्बंद स्थापित करना पाप है। मैं समारोह में कुछ भी नहीं कहता कि लोगों को यह सोचने दूं कि परमेश्वर की दृष्टि में उनके रहने की स्थिति उचित है। मैं उन्हें शर्मिंदा नहीं करता और ना ही इसके खिलाफ बात करता हूं।

किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करना जो पहले से ही किसी और से विवाहित है, परमेश्वर के नियम के साथ-साथ मनुष्य के नियम के भी विरुद्ध है। एक से अधिक पाप है। विवाह एक पुरुष और एक स्त्री का ही होता है (उत्पत्ति 2:18-25; मत्ती 19:4-6)।

तलाकशुदा व्यक्ति से शादी करना मसीहीयों के बीच एक विवादत विषय है। परमेश्वर तलाक से घृणा करता है (मलाकी 2:14-16)। वह केवल पाप के कारण इसकी अनुमति देता है (मत्ती 19:3-9)। बाइबल शारीरक सम्बन्धी विश्वासघात के लिए तलाक की अनुमति देती है (मत्ती 5:32; 19:9) या जहाँ एक अविश्वासी साथी विश्वासी को छोड़ जाता है (1 कुरिन्थियों 7:12-15)। निर्दोष मसीही साथी पुनर्विवाह करने के लिए स्वतंत्र है, परन्तु केवल एक अन्य विश्वासी से ही (रोमियों 7:1-3; 1 कुरिन्थियों 7:39)। यदि तलाक व्यक्ति के मसीही बनने से पहले हुआ है, तो वे विवाह करने के लिए स्वतंत्र हैं, तलाक का कोई भी कारण हो - लेकिन केवल एक और विश्वासी से ही (1 कुरिन्थियों 7:20-27, 39; 2 कुरिन्थियों 6:14)।

यदि एक व्यक्ति तलाक और पुनर्विवाह के बाद एक मसीही बनता है, तो उसे अपने वर्तमान साथी के साथ रहना चाहिए और अपने पहले साथी के पास वापस जाने की कोशिश करने के लिए उस रिश्ते को नहीं छोड़ना चाहिए (1 कुरिन्थियों 7:20)।

यह अभी भी उस मसीही की समस्या बना रहता है जो तलाक में दोषी है और बाद में पुनर्विवाह करना चाहता है। अक्सर यह निर्धारित करना कठिन होता है कि वास्तव में 'दोषी' पक्ष कौन है। स्थिति बहुत जटिल हो सकती हैं। यदि एक तलाकशुदा मसीही वास्तव में पश्चाताप करता है और दिखाता है कि वे यीशु का अनुसरण कर रहे हैं और आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं, तो मैं उन्हें और उनकी स्थिति को जानने में समय व्यतीत करूंगा। अगर परमेश्वर ने उन्हें माफ कर दिया है और उन्हें बहाल कर दिया गया है, तो मुझे नहीं लगता कि मुझे अपनी तरफ से कुछ कम करना चाहिए। परमेश्वर दया दिखाता है। उसने मेरे जीवन में मुझ पर बहुत दया की है और मुझे पता है कि वह दूसरों पर भी करता है। वह दाऊद, मूसा और पौलूस जैसे हत्यारों को क्षमा और पुनर्स्थापित करता है। उसने उन सभी का उनके द्वारा की गयी हत्यों के बाद बहुत उपयोग किया।

मैं व्यक्तिगत रूप से तलाक को ऐसे पाप के रूप में नहीं देखता हूँ जो माफ़ होने योग्य नहीं है । यीशु ने सभी पापों के लिए भुगतान किया है (1 यूहन्ना 1:7-9; तीतुस 2:14)। कोई पाप माफ़ ना होने योग्य नहीं है। यह मेरा विश्वास है कि मैं ऐसे लोगों को यीशु की कृपा और दया दिखाता हूं (लूका 6:36), इसलिए मैं उन्हें सलाह दूंगा और, यदि बाकी सब ठीक है, तो विवाह करें यदि वे किसी अन्य विश्वासी से विवाह कर रहे हैं तो । परमेश्वर मुझ पर मेरी योग्यता से अधिक दया करता है, और चाहता हूं कि मैं दूसरों पर दया करूं (मत्ती 5:7; 18:33)। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि परमेश्वर हर पादरी की इस तरह से अगुवाई करेगा, और ना ही मैं तुमसे कह रहा हूं कि तुम्हें यह अवश्य करना चाहिए। वह आपके और परमेश्वर के बीच की बात है। मैं इसे आपके साथ साझा कर रहा हूं ताकि आपको परमेश्वर की तरह दया दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। परमेश्वर प्रेम करने वाला , क्षमा करने वाला परमेश्वर है, जैसा कि हम उड़ाऊ पुत्र की कहानी में देखते हैं (लूका 15:11-32)। उसके पिता ने उसे उसी स्थिति में बहाल कर दिया, जो उसकी बेवफाई और "जंगली जीवन" से पहले थी।

इसे लागु करने में प्रशन : *आप के पास एक जोड़े की शादी पढ़ने या ना पढ़ने को निर्धारित करने के लिए क्या योग्यताएं हैं? आपका तलाक के बारे में क्या मानना है? यह निर्धारित करने के लिए कि परमेश्वर आपकी अगुवाई कैसे कर रहा है, प्रार्थनापूर्वक पवित्रशास्त्र का अध्ययन करें। सेवकाई में इनका सामना करने से पहले इन बातों के बारे में दृढ़, विस्तृत दृढ़ विश्वास पर आएं। विवाह पढ़ने से पहले आप विवाह के लिए क्या प्रशिक्षण प्रदान करते हैं? आप जोड़े की सेवा कैसे करते हैं? आप उपस्थित लोगों के साथ सुसमाचार कैसे बाँटते हैं?*

जनाज़े - जनाजे करने के बारे बाइबल का कोई आदेश नहीं हैं। बहुत कुछ स्थानीय रीति-रिवाजों और उपस्थित लोगों की जरूरतों पर निर्भर करता है। जनाज़े जीवत लोगों के लिए होते है, मरने वालों के लिए नहीं। यह मर चुके लोगों के अनंत भाग्य को प्रभावित नहीं करते हैं, लेकिन वे दूसरों (जीवित) लोगों की सेवा करने और उनसे सुसमाचार साझा करने के बड़े अच्छे अवसर हो सकते हैं। यह उन विश्वासियों के लिए परमेश्वर की शांति लाने का भी एक अच्छा समय है जो दुखी हैं। जनाजे में शामिल होने वाले लोगों को जीवन के अस्थाई होने और मृत्यु का निश्चित होने की सचाई का सामना करना पड़ता है। उनकी मुक्ति की आवश्यकता के बारे में उनसे बात करने का यह एक अच्छा समय है।

जनाज़े की रस्म से पहले, परिवार के साथ मिलकर प्रार्थना करें और उन्हें प्रोत्साहित करें। यदि यह एक मसीही परिवार है तो आप उन्हें उनके प्रिय जन के स्वर्ग में होने का आश्वासन दे सकते हैं। यदि मृत

व्यक्ति एक विश्वासी नहीं था तब भी आप उन्हें एक प्रेमपूर्ण, करुणामय परमेश्वर की ओर संकेत कर सकते हैं जो उनकी सहायता करेगा यदि वे उसकी ओर मुड़ें। दोनों में से किसी भी स्थिति में , इस बारे में भी बात करें कि जनाज़े में वह क्या करना चाहते हैं: पसंदीदा बाइबल हिस्सा , मृतक के बारे में सराहनीय बातें , आदि। जनाज़े और दफन के विवरण की योजना बनाने में उनकी सहायता करें। उनके इस मृत्यु द्वारा टूट जाने के बाद जीवन में आगे बढ़ने के बारे में बात करें। हमेशा करुणा और प्रेम दिखाएं। उनके नुकसान के प्रति संवेदनशील रहें और यीशु में आशा दें।

जनाज़े का उपदेश छोटा और स्पष्ट होना चाहिए। यह, यीशु और उसके उद्धार के प्रावधान पर केन्द्रित होना चाहिए। इसमें मृतक व्यक्ति को एक उदाहरण के रूप में संदर्भित किया जा सकता है कि कैसे यीशु एक जीवन को बदल सकता है, लेकिन ध्यान यीशु पर होना चाहिए। यदि वह व्यक्ति मसीही नहीं था तो मैं उसके अनंत भाग्य का उल्लेख नहीं करता या आश्वासन नहीं देता कि वे स्वर्ग में हैं (क्योंकि वे नहीं हैं)। ना ही मैं उन लोगों की ओर इशारा करता हूं जो शोक कर रहे हैं। उपयोग करने के लिए पवित्र शास्त्रों में भजन 23; 1 कुरिन्थियों 15:20-26, 35-44, 54-57; यूहन्ना 14:1-7; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13; भजन 116:15 शामिल हैं:। (जनाज़े की रस्म अदा करने में उपयोग किए जाने वाले धर्मोपदेश के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "बाइबल का प्रचार करना और सिखाना" पुस्तक पढ़े)।

मैंने अपनी सेवकाई में लोगों को समय से पहले अपने जनाज़े की योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए इसे एक अभ्यास बना दिया ताकि मृत्यु आने पर जीवित लोगों के लिए इसे करना आसान बन सके। मैं उनसे बाइबल के पसंदीदा हिस्से मांगता हूं, वे शब्द जिन्हें वे सेवा के दौरान प्रियजनों को पढ़ने के लिए लिखना चाहते हैं, पसंदीदा मसीही गीत आदि। यह उन लोगों की सेवा कर सकता है जो जीवित हैं और उनके लिए इसे एक अर्थपूर्ण क्रिया बनाना आसान कर देता है। यह एक तरीका भी हो सकता है कि व्यक्ति स्वर्ग में अपने भविष्य के बारे में सोचने की अपनी इच्छाओं को लिखकर रख सकता है। आप उन्हें आश्वस्त कर सकते हैं और मृत्यु के किसी भी भय को दूर कर सकते हैं।

दफनाने की क्रिया - कुछ जगहों पर यह परंपरा है कि जब शरीर को कब्र में रखा जाता है तो एक छोटी प्राथना सभा होती है। इसमें आशा और प्रोत्साहन के कुछ शब्द, एक या दो पवित्रशास्त्र के हिस्से (जैसा कि ऊपर सूचीबद्ध है), कुछ समापती शब्द और समापती प्रार्थना शामिल हो सकते हैं। वही किया जा सकता है जब राख को दफनाया जाता है, घर लाया जाता है या कहीं छिड़का जाता है।

जनाज़े की रस्म और कब्र दिए जाने के बाद हमेशा सुनिश्चित करें कि आप परिवार के साथ कुछ समय बिताते हैं, तसली देते है और उनके लिए प्रार्थना करते हैं। कुछ दिनों बाद, फिर से उनके पास जाकर देखें कि वे कैसे हैं और आप उनकी सेवा कैसे कर सकते हैं। मैं मृत्यु की तारीख लिखता हूं और अगले वर्ष उसी समय उनसे संपर्क करता हूं। दूसरों को तारीख याद नहीं होगी, लेकिन अगर आप ऐसा करते हैं तो यह उनकी सेवा करने के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन और अवसर हो सकता है।

इस लागु करने में प्रशन : *जनाज़ा करने के लिए कहे जाने पर आपके पास सेवकाई करने के कुछ अवसर क्या हैं? आपके लिए जनाज़ा करने में इसका सबसे कठिन हिस्सा क्या लगता है? इसे कम कठिन बनाने के लिए आप क्या कर सकते हैं?*

आराधना सभा - आराधना सभा का उद्देश्य आराधना करना है, परमेश्वर की स्तुति करना है कि वह कौन है और वह क्या करता है। संगीत, संदेश, गवाही और पैसा इकट्ठा करना सभ परमेश्वर और उनकी महानता पर केंद्रित होना चाहिए। अक्सर कलिसियाएं चर्च और उसकी सेवकाई , या पादरी पर ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन आराधना में पूरा धयान परमेश्वर पर होना चाहिए।

उपदेश- हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं कि एक पासबान को अपनी भेड़ों को कैसे खिलाना है, तो आइए हम उपदेश तैयार करने और इसे प्रस्तुत करने के महत्वपूर्ण कर्तव्य को देखें। इसके बारे में विस्तृत जानकारी के लिए जेरी श्मोयर द्वारा "बाइबल का अध्ययन" और "बाइबल का प्रचार और शिक्षण" देखें। इन पुस्तकों में बहुत उपयोगी जानकारी दी गई है।

भेड़ों को परमेश्वर का वचन खिलाना हमारा कर्तव्य है। यह केवल बाइबल है जिसका हमें अध्ययन करना है और प्रचार करना है। पादरियों को राजनीति में शामिल नहीं होना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:4)। वे परमेश्वर के वचन की सच्चाई का प्रचार कर सकते हैं क्योंकि इसमें राजनीतिक मुद्दे शामिल हैं लेकिन मंच परमेश्वर के वचन को सिखाने के लिए है।

उपदेश लोगों को प्रशिक्षित करने, निर्माण करने और प्रोत्साहित करने के लिए हैं। कभी भी डांट या आलोचना ना करें। पाप पर ध्यान ना देकर, जीने के सही तरीके पर ध्यान केंद्रित करके पाप और असफलता से निपटा जा सकता है। हमें समाधान को साझा करने की आवश्यकता है, समस्या नहीं। लोग जीवन के बोझ और दुखों को लेकर चर्च आते हैं। उन्हें अगले सप्ताह तक पूरा करने के लिए आशा, आश्वासन और परमेश्वर के वादों की आवश्यकता है। जो गलत है आप उसके के बारे में बात कर सकते हैं लेकिन ध्यान सही समाधान पर दें। उनकी सोच बदलने के लिए करें ताकि वह अपनी रोजाना मदद पाने के लिए नई सच्चाई सीखें। साथ ही उनके दिलों की बात करें ताकि उन्हें विश्वासपूर्वक परमेश्वर पर भरोसा करने और उसकी सेवा करने के लिए प्रेरित किया जा सके। यीशु ने यही किया। उसने उन लोगों को, ना तो डांटा और ना उनकी निंदा नहीं , जो उनका अनुसरण कर रहे थे, उसने हमेशा आशा और प्रोत्साहन दिया। उसने उन्हें पाप ना करने के लिए कहा परन्तु क्षमा का आश्वासन भी दिया (यूहन्ना 8:11)।

हमेशा अपने स्वयं के उपदेश विकसित करें। अन्य विकसित उपदेशों की नकल या प्रयोग करने की आदत ना बनाएं। आप तैयारी करने और संदेश देने से पहले, ज्ञान और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना हमारा सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यदि आप नम्र हृदय से परमेश्वर के पास , उसके मार्गदर्शन और अगुवाई की तलाश में आते हैं, तो वह आपको यह प्रदान करेगा (यिर्मयाह 29:10-14)।

इसे लागु करने में प्रशन : *यदि एक रविवार को यीशु आपके चर्च में उपस्थित होता , तो वह सभा और संदेश के बारे में क्या कहता ? क्या वह प्रसन्न होगा क्योंकि ध्यान उस पर केन्द्रित था, या अन्य चीजें अधिक महत्वपूर्ण थीं? परमेश्वर से प्रतिदिन प्रार्थना करें कि वह आपकी आराधना के समय को पूरी तरह से उसके बारे में बनाने में आपकी मदद करें। वह आपके उपदेशों के बारे में क्या कहेगा ? क्या आप अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए प्रसन्न होंगे या शर्मिंदा होंगे क्योंकि आप उन पर उतनी मेहनत नहीं करते जितनी आपको करना चाहिए? क्या उसको आपका लोगों से बात करने का तरीका पसंद आयेगा ? लोगों उनके विश्वास में प्रशिक्षण देने और प्रोत्साहित करने के लिए क्या वह आपकी प्रशंसा करेगा?*

7. कलीसिया की सेवकाईए

शिष्यतव प्रशिक्षण -यीशु हमें आज्ञा देता है कि जो लोग उसके पास उद्धार के लिए आते हैं उन्हें "चेला बनाओ" (मत्ती 28:18-20)। , यीशु के अपने शब्दों में, इसका अर्थ है "उन्हें वह सब कुछ जिसकी मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, उन्हें मानना सिखाओ" (मत्ती 28:20)। यीशु ने उन लोगों के साथ यही किया जो उसका अनुसरण करते थे। पौलुस ने भी अपने द्वारा परवर्तित लोगों के साथ ऐसा ही किया (प्रेरितों के काम 14:21-23)। (इसे कैसे करें, इसके लिए जेरी श्मॉयर द्वारा लिखी पुस्तक "आध्यात्मिक विकास और शिष्यत्व" देखें)

परामर्श- एक चरवाहे के सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक है भेड़ों का मार्गदर्शन करना है। एक पासबान अपनी भेड़ों का एक समूह के रूप में मार्गदर्शन करता है जब वह उन्हें प्रचार करता है और सिखाता है। कभी-कभी भेड़ों को चरवाहे की तरफ से अतिरिक्त मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, या फिर ऐसा कहें कि उनका गलत व्यवहार बदलने की आवश्यकता होती है। एक पास्टर ऐसा तब करता है जब वह अपनी भेड़ों को सलाह देता है। शिक्षण सत्य बताता है; परामर्श विशिष्ट परिस्थितियों में सत्य को लागू करता है। शिक्षण से गलती को रोका जाता है, परामर्श गलती को सुधारता है। प्रत्येक व्यक्ति को समय-समय पर सलाह की आवश्यकता होती है, और पादरी एक ऐसा व्यक्ति है जिसे वे जानते हैं और सही मार्गदर्शन के लिए उस पर भरोसा करते हैं (इफिसियों 4:11-12; 1 पतरस 5:1-4)। यीशु अपने चरवाहों के द्वारा परामर्श देता है, क्योंकि वह अद्भुत युक्ति करने वाला कहलाता है (यशायाह 9:6)। परमेश्वर का वचन सत्य की शिक्षा देना, गलती को इंगित करना, गलत विश्वासों और व्यवहारों को सुधारना और भक्ति में प्रशिक्षण देना है (2 तीमुथियुस 3:16)। पास्टर जरूरत पड़ने पर मार्गदर्शन और सलाह देने के लिए परमेश्वर के वचन का उपयोग करता है।

हम सभी गलती करते हैं और सच्चाई से भटकने के कारण कमजोर पड़ जाते हैं (याकूब 1:14-15; 1 यूहन्ना 2:15-17) और इसलिए हमें बुद्धिमानी की सलाह देने के लिए किसी की आवश्यकता होती है (नीतिवचन 1:5; 11:14; 15: 31-32; 19:20; 13:18)। परमेश्वर पादरियों और अन्य लोगों को यह देगा जो बुद्धि की सलाह देते हैं (याकूब 3:17; इफिसियों 6:11-17)। निर्देशन के ये शब्द बाइबल पर आधारित होने चाहिए (नीतिवचन 19:21; 3:5-6)। परमेश्वर का आत्मा हमें इस बुधि का , दूसरों की जरूरतों को पूरा करने में, उपयोग करने में मदद करेगा (इफिसियों 1:17; यशायाह 11:2; 1 कुरिन्थियों 12:8)। दुनिया की बुधि पर भरोसा मत करो, ना इस पर जो दूसरे कह सकते हैं या इस पर कि सबसे आसान और सबसे लोकप्रिय समाधान क्या है। आप जो कुछ भी कहते हैं वह बाइबल द्वारा समर्थित होना चाहिए और आपके भीतर परमेश्वर की आत्मा की अगुवाई में होना चाहिए।

दूसरों को परामर्श देते समय, धैर्य, करुणा, समझ और बुधि के लिए प्रार्थना करें। कभी भी उतावले, आलोचनात्मक या निर्णयात्मक ना बने । उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा यीशु आपके साथ करता है।

सबसे पहले, ध्यान से सुनें और तथ्यों को इकट्ठा करें। यदि संभव हो, तो वे जो कहते हैं, उसे लिख लें ताकि आपको महत्वपूर्ण तथ्य याद रहे। बेहतर ढंग से समझने में सहायता के लिए प्रशन पूछें। यदि इसमें दो लोग शामिल हैं तो सलाह देने से पहले आपको दोनों पक्षों की बात सुननी चाहिए। केवल एक व्यक्ति से बात करने से आपको पूरी तस्वीर कभी नहीं मिल सकती है। हमेशा एक और पक्ष होता है। बातचीत को मुधे पर रखें ताकि वह इधर-उधर ना भटके और अन्य विषयों पर ना जाएँ । इस मुद्दे पर ध्यान दें कि परामर्श लेने वाला क्या कहता है और आप क्या कहते हैं।

समस्या के पीछे की समस्या की तलाश करें, मूल समस्या को ढूंढे। डॉक्टर लक्षणों का इलाज नहीं करते हैं; वे यह पता लगाना चाहते हैं कि समस्या का कारण क्या है। परमेश्वर से कहें कि वह आपको बुधि दे। यदि आप केवल लक्षण का इलाज करते हैं तो मूल समस्या अन्य तरीकों से सामने आती रहेगी। अधिकांश समस्याओं की जड़ भय, चोट, अभिमान, क्षमा या अस्वीकृति की भावनाएँ होती हैं। वास्तविक इलाज करने के लिए इनसे निपटा जाना चाहिए।

जलदबाज़, सस्ते-सधारण से उत्तर ना दें, जैसे, "बस परमेश्वर पर अधिक भरोसा करें," या "इसके बारे में प्रार्थना करें।" समस्या की जड़ को देखने में उनकी मदद करें और उन्हें पवित्रशास्त्र से दिखाएं कि इस पर कैसे विजय प्राप्त करें। उन्हें हमेशा परमेश्वर की ओर इशारा करें। बातचीत खत्म होने पर उन्हें पढ़ने

के लिए पवित्र शाशत्र का हिस्सा दें। उनके साथ प्रार्थना करें। उन्हें प्रोत्साहित करें और उन्हें आशा दें। उन्हें विशिष्ट निर्देश दें कि उन्हें क्या करना चाहिए (या नहीं करना चाहिए)। सुनिश्चित करें कि वे उठाए जाने वाले कदमों को समझते हैं। हो सके तो उन्हें लिख लें और उन्हें पेपर दे दें। बहुत अधिक सलाह ना दें, केवल उठाए गए कदमों पर ध्यान दें अन्यथा वे भ्रमित और व्याकुल हो जाएंगे।

बाद में उनसे संपर्क करके देखें कि वे कैसा हैं और क्या वे आपकी सलाह पर अमल कर रहे हैं। सुनिश्चित करें कि वे आगे की सलाह देने से पहले आपके निर्देशों का पालन कर रहे हैं। आपसे जो कुछ भी कहा गया हो उस हर बात को हमेशा विश्वास में रखें। आपको जो कुछ भी बताया गया था, उसे कभी किसी को ना बताएं। यदि आपको अच्छी सलाह देने के लिए कोई स्थिति बहुत कठिन लगती है, तो उन्हें किसी और के पास भेज दें, या किसी जानकार से बात करें और उस व्यक्ति को सलाह देने से पहले उनकी राय लें। आप किसी के पूरे जीवन को प्रभावित कर रहे हैं इसलिए सुनिश्चित करें कि आप जो कहते हैं वह उनके लिए सही है। कभी-कभी शारीरिक समस्याएं भावनात्मक संकट भी पैदा कर सकती हैं, इसलिए आपको शारीरिक लक्षणों से निपटने के लिए डॉक्टर को दिखाने के लिए किसी को रेफर करना पड़ सकता है।

दूसरों को परामर्श देना पादरियों के लिए उनको सिखाने और शिष्य बनाने का एक अद्भुत विशेषाधिकार और महान अवसर होता है। यह जो आमने-सामने की शिक्षा है, दूसरों के जीवन पर बहुत प्रभाव डालती है। (अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मोयर द्वारा "बाइबिल परामर्श" पुस्तक पढ़े ।)

इसे लागु करने में प्रशन : *क्या लोग मदद और सलाह के लिए आपके पास आने में सहज महसूस करते हैं? क्या आपके पास उनसे बात करते समय धैर्य, करुणा और बुधि होते हैं ? क्या आप विश्वास बनाए रखते हैं और जो कुछ आपको बताया जाता है उसे कभी किसी से साझा नहीं करते हैं? क्या आप उन लोगों के साथ प्रार्थना करते हैं जिन्हें आप सलाह देते हैं, और फिर उनके लिए नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं? दूसरों के लिए एक बेहतर परामर्शदाता बनने के लिए आप क्या कर सकते हैं?*

लोगों से मिलने जाना -पादरियों को अपना कुछ समय दूसरों के पास जाने में बिताना चाहिए। यीशु ने उन लोगों के लिए एक विशेष आशीष का वादा किया जो गरीबों, विधवाओं, जेल में बंद लोगों और अन्य जरूरतमंद लोगों से मिलने गए और उनकी मदद की (मत्ती 25:31-46)। परमेश्वर ने उन चरवाहों की निंदा की जिन्होंने अपनी भेड़ों के साथ समय नहीं बिताया (यिर्मयाह 23:1-2)। प्रारंभिक कलीसिया में पादरी लोगों के घरों में शिक्षा देने जाते थे (प्रेरितों के काम 5:42)। पौलुस भी ऐसा कीया करता था (प्रेरितों के काम 20:20)।

लोगों से उनके घरों में जा कर मिलना, या किसी अन्य स्थान पर उनसे मिलने की व्यवस्था करना, उन्हें यह दिखाता है कि वे महत्वपूर्ण हैं और आप उनकी परवाह करते हैं। याद रखें, हम उनकी नजरों में यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह उनके लिए यीशु के प्रेम का भी उदाहरण बनता है। ऐसा करने से आप उन्हें और उनकी जरूरतों को बेहतर तरीके से जान सकते हैं। इससे आपको अधिक प्रभावी ढंग से उनकी सेवा करने में मदद मिल सकती है।

कुछ ऐसी मुलाकातों उन्हें आराम या प्रोत्साहन देंगी । दूसरा इन के माध्यम से उन लोगों की तलाश होगी जिन्होंने भाग लेना बंद कर दिया है, या जो संघर्ष कर रहें है उनकी की सहायता करना साबित होगी । जिन लोगों ने आपके चर्च में आना शुरू कर दिया है, उनके पास जल्द से जल्द जाना चाहिए। वृद्ध या बीमार जो बाहर नहीं निकल सकते हैं, उनके पास जाना चाहिए। जो नियमित रूप से आते हैं, सेवकाई के काम में मदद करते हैं, और आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं, उनसे भी मुलाकात की जानी चाहिए।

इससे उन्हें यह जानने में मदद मिलती है कि उनकी सराहना की जाती है और वे महत्वपूर्ण हैं। सभी को प्रोत्साहन की जरूरत होती है। जो पादरी प्रोत्साहन देते हैं , महसूस करते हैं कि उन्हें प्रोत्साहन देने के साथ-साथ, खुद भी प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

मुलाकात की अविधि लंबी नहीं होनी चाहिए, लेकिन यह इतनी छोटी भी नहीं होनी चाहिए कि यह असभ्य लगे। सुनिश्चित करें कि आप बात करने से ज्यादा सुनते हैं। जब आप सुनते हैं तो आप उस व्यक्ति के बारे में सीखते हैं, जब आप बात करते हैं तो आप कुछ नहीं सीखते हैं। अगर लोग बात करते हैं तो वह आपकी का उनके पास आने का अधिक आनंद लेते हैं। यदि आप अधिक बातें करते हैं तो वे आपका उनके पास आने का कम आनंद लेते हैं। उनसे उनके और उनके जीवन के बारे में सवाल पूछें। वे जो कहते हैं उसमें रुचि लें। उन्हें कुछ बताने के लिए बीच में ना आएं, बस उनकी बात सुनें। कभी भी पैसे ना मांगें या संकेत ना दें कि आपको कोई उपहार दिया जाना चाहिए। अगर प्यार से कुछ दिया जाता है, तो उसे शालीनता से स्वीकार करें।

जब आप महिलाओं से मिलने जाते हैं, तो आपको अपनी पत्नी या कलीसिया के एक पुरुष को अपने साथ ले जाना चाहिए। ऐसी महिला को कभी ना लें जो आपकी मां, पत्नी या बेटी ना हो। कभी भी किसी ऐसी महिला के साथ अकेले ना रहें जो आपकी मां, पत्नी या बेटी नहीं है। यदि संभव हो, तो कलीसिया से एक युवा पुरुष को लें जो अगुवा बनने की झलक दिखाता है और उन्हें प्रशिक्षित करें ताकि वे स्वयं जाकर लोगों से मुलाकात कर सकें। इस तरह वे विकास करेंगे और आपके पास कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसके साथ आप सेवकाई भार साझा करेंगे ।

बीमारों के पास जाना -जैसा कि देखा गया है, बीमारों के पास जाना यीशु की नज़र में बहुत महत्वपूर्ण है (मत्ती 25:31-46)। आपका उद्देश्य उनके लिए यीशु के प्रेम और उसकी चिंता को प्रदर्शित करना है। उन्हें बताएं कि उन्हें भुलाया नहीं गया है। मुलाकात में वहाँ अधिक ना रुकें, बीमार लोग जल्दी थक जाते हैं। आप क्या चाहते हैं कि वे आपके आने का आनंद लें, ना कि बस इसे सहन कर लें ? यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह एक अच्छा समय है जाने से पहले इसकी जाँच करें, यह एक अच्छा विचार भी है। वहां से आने से पहले हमेशा उनके साथ प्रार्थना करें। अगर हो सके तो वहाँ रहते हुए एक दिलासा देनेवाला धर्शाम शास्त्र का हिस्सा पढ़िए। आप यीशु का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं इसलिए उसका प्रेम और करुणा दिखाएं।

इसे लागु करने में प्रशन : *आप लोगों को मिलने उनके घर जाने में कितना सहज महसूस करते हैं? आपके वहां जाने का उद्देश्य क्या होना चाहिए? आप कैसे बता सकते हैं कि आप काफी देर तक रुके हैं और जाने का समय आ गया है? अगर कोई नहीं चाहता कि आप उनसे मिलने जाएं तो आप क्या करेंगे?*

सामुदायिक भागीदारी -सामुदायिक गतिविधियों में शामिल होना अच्छा है जिससे जरूरतमंद लोगों को लाभ होता है। लेकिन याद रखें, हम जो खुशखबरी पेश करते हैं, वह मानव जाति की सभी बीमारियों का अंतिम इलाज है। सामाजिक कार्यों में मदद करना और सामुदायिक परियोजनाओं में शामिल होना अविश्वासियों से मिलने और यीशु को समुदाय में लाने का एक अच्छा तरीका है, लेकिन हमारी पहली और सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी परमेश्वर की भेड़ों की चरवाही/रखवाली करना है। हमारे पास अनन्त जीवन के लिए शुभ समाचार है, इसलिए हम अन्य बातों के द्वारा राह से कुराहे नहीं पड़ सकते। लोगों को पृथ्वी पर एक बेहतर जीवन जीने में मदद करना महत्वपूर्ण है, लेकिन यह सुनिश्चित करना कि वे स्वर्ग जाएं, इस से भी अधिक महत्वपूर्ण है। प्रेरितों ने डीकनों को भोजन और वस्त्र वितरित करने के कर्तव्य सौंप दिया ताकि वे प्रार्थना और बाइबल अध्ययन जैसे अतिअधिक महत्वपूर्ण कर्तव्यों पर ध्यान केंद्रित कर

सकें (प्रेरितों के काम 6:1-4)। कभी भी अन्य गतिविधियों में इतना व्यस्त ना हों कि प्रभु के लिए आपका कार्य प्रभावित हो!

राजनीतिक भागीदारी -जबकि मसीहीयों के लिए अपने समुदाय में राजनीतिक प्रक्रियाओं और गतिविधियों में शामिल होना महत्वपूर्ण है, झुंड के रखवाले जैसे पादरियों को राजनीतिक रूप से सक्रिय नहीं होना चाहिए। पद के लिए दौड़ना या कार्यालय या राजनीतिक दल के उम्मीदवार का समर्थन करने में बहुत समय व्यतीत करना वो काम नहीं है जिसे करने के लिए परमेश्वर चरवाहों को बुलाता है। एक पासबान होने की बुलाहट दूसरी किसी भी बुलाहट से बड़कर है और कुछ भी और करने के लिए इसकी लापरवाही नहीं की जानी चाहिए। परमेश्वर एक व्यक्ति को सेवकाई से बाहर राजनीति में ले जा सकता है, लेकिन सुनिश्चित करें कि तो यही देखरेख है यदि आप उस बुलाहट को महसूस करते हैं। दोनों को एक साथ करने की कोशिश ना करें। कलीसिया का नुकसान होगा और यह अच्छा नहीं है।

प्रार्थना - पादरी, और कलीसिया में अन्य जो प्रेरित और उपहारित हैं, उन्हें कलीसिया के लोगों को और उनकी जरूरतों को अपनी प्रार्थना में रखना चाहिए (1 तीमुथियुस 2:1-4)। यह एक महत्वपूर्ण सेवकाई है। पता लगायें कि आपकी कलीसिया में कौन से लोग हैं जो प्रार्थना योद्धा हैं। ये प्रतिभाशाली और प्रेरित लोग आपकी सेवकाई के लिए आपकी कल्पना से कहीं अधिक कार्य कर सकते हैं। उन्हें प्रोत्साहित करें। उनके साथ प्रार्थना की ज़रूरतें साझा करें - लेकिन कभी भी कोई भी गोपनीय या व्यक्तिगत बात नहीं। जो बात पहले से ही सामान्य जानकारी के रूप में नहीं है उन्हें ना बताएं । उनके लिए प्रार्थना करें, क्योंकि उनकी महत्वपूर्ण सेवकाई में बाधा डालने के लिए दुश्मन द्वारा उन पर हमला किया जाएगा।

प्रशासनिक कर्तव्य -एक पादरी को चर्च में सब कुछ करने की जरूरत नहीं है। उसे दूसरों को प्रशिक्षित करना चाहिए और उनके साथ कर्तव्यों को बाँटना करना चाहिए (इफिसियों 4:11-12)। यह विशेष रूप से उन चीजों पर लागू होता है जिनमें अन्य लोग मदद कर सकते हैं, जैसे कि कलीसिया के भौतिक कार्य (प्रेरितों के काम 6:1-4)। पौलुस हमेशा सेवकाई के कार्यों में सहायता करने के लिए अपने साथ दूसरों को लाता था। फिर भी, कुछ ऐसे कर्तव्य हैं जिनके लिए केवल एक पादरी ही जिम्मेदार होता है और उसे इनको अवश्य करना चाहिए। यदि वह उन्हें स्वयं नहीं करता है, तो उसे जिम्मेदार व्यक्ति के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इसमें संगठन और प्रशासनिक कार्य शामिल हैं।

पादरियों को सदस्यों की एक वर्तमान सूची उनके बपतिस्मा की और चर्च सदस्यता तारीखों के साथ रखनी चाहिए। उसे विवाह और जनाजों की सूची भी रखनी चाहिए। उसे व्यक्तिगत रूप से अन्य रिकॉर्ड या रिपोर्ट रखने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन यह सुनिश्चित करना उसकी जिम्मेदारी है कि यह कार्य बड़ी कुशलतापूर्वक, बड़ी सफाई से और समय पर किए जाते हैं। यह परमेश्वर द्वारा जो प्रदान किया है उसका एक अच्छा भण्डारी होने का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

V. कलीसिया से बाहर के लोगों के प्रति कर्तव्य

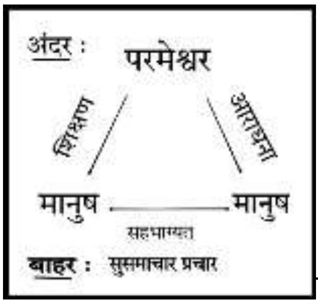

हमने कलीसिया के भीतर लोगों के प्रति अपनी जिम्मेदारी देखी है, लेकिन चरवाहों के रूप में कलीसिया से बाहर के लोगों के प्रति भी हमारी जिम्मेदारी है। हमें जिस तरह भी हो सके उनकी सेवा करनी चाहिए और अपनी क्षमता के अनुसार मदद करनी चाहिए। उद्देश्य और मुख्य ध्यान उन्हें यीशु के पास उद्धार के लिए आने में मदद करने पर होना चाहिए । कलीसिया के भीतर के कार्य शिक्षण, आराधना और संगति है। कलीसिया का काम, उन लोगों के लिए है जो कलीसिया से बहार है, उन्हें यीशु के पास लाना है। जो विश्वासी बन जाते हैं उन्हें या तो मौजूदा कलीसिया में जोड़ा जाना चाहिए या एक नई कलीसिया में गठित किया जाना चाहिए।

क. अपनी कलीसिया को विकसित करने का कर्तव्य

यीशु हमें उसके संदेश को दूसरों तक ले जाने की आज्ञा देता है (प्रेरितों के काम 1:8) और जब कोई व्यक्ति प्रतिक्रिया करता है तो हमें उन्हें शिष्य बनाना और उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाना होता है (मत्ती 28:19-20)। कुछ कलिसियाएं सुसमाचार प्रचार में बहुत आगे हैं; अन्य विश्वासियों को प्रशिक्षण और अनुशासन देने में बेहतर हैं। सभी कलिसीयाओं को दोनों काम करना है, भले ही वे एक या दूसरे में बेहतर हों। परमेश्वर कलीसिया को प्रतिभाशाली विश्वासी देता है (इफिसियों 4:11-12; 1 कुरिन्थियों 12:28)। वह अलग-अलग विश्वासियों और कलिसीयाओं को अलग-अलग उपहार देता है, इसलिए कोई भी दो बिल्कुल एक जैसे नहीं होते हैं (1 कुरिन्थियों 12:4-11)। कुछ लोगों के पास सुसमाचार प्रचार और बाहरी लोगों तक पहुचने का मजबूत वरदान होते हैं, अन्य के पास ऐसे उपहार होते हैं जो विश्वासियों को प्रशिक्षित, शिष्य और सेवक बनाते हैं। दोनों ही किसी भी स्वस्थ, बढ़ती हुई कलीसिया के लिए आवश्यक हैं।

जिस कलीसिया की मैं 35 वर्ष तक पासबानी करता रहा, वह मसीहीयों को सिखाने और प्रशिक्षण देने के लिए उपहारित की गई थी। चोट खाए हुए और संघर्ष करते हुए मसीही, सलाह, मदद, प्यार और समर्थन के लिए हमारे पास आते । हम उन्हें प्रशिक्षित करते और उनकी विश्वास में बढ़ने के लिए मदद करते । हमारी कलीसिया के अधिकांश लोगों के पास आत्मिक वरदान थे जिन्होंने इस सेवकाई में योगदान दिया। कुछ के पास तो था, लेकिन बहुतों के पास सुसमाचार प्रचार का वरदान नहीं था। आध्यात्मिक चंगाई और शिष्यत्व पर ध्यान देना हमारी सेवकाई का मुख्य काम था। हमारे पास एक और कलीसिया थी जो सुसमाचार प्रचार में बहुत अच्छा कार्य करती थी । परमेश्वर ने मेरे क्षेत्र की सभी कलीसियाओं का उपयोग मसीह की देह का निर्माण करने के लिए किया। व्यक्तिगत विश्वासियों की तरह, प्रत्येक कलीसिया की अपनी ताकत और कमजोरियां थीं, आध्यात्मिक उपहारों का अपना मिश्रण था। किसी एक कलीसिया के पास यह सब नहीं था। लेकिन हमारे क्षेत्र में कलिसीयाओं ने एक साथ सेवा की।

संख्या में वृद्धि (मात्रा) -प्रत्येक पादरी, मसीही और कलीसिया का समूह अपने आसपास के लोगों के साथ सुसमाचार साझा करने के लिए जिम्मेदार है। कुछ कलीसियाओं को लगता है कि यह केवल पादरी का काम है और उससे उम्मीद करते हैं कि वह सुसमाचार प्रचार के साथ-साथ सेवकाई के सभी कार्य करेगा। यह सच नहीं है। प्रत्येक मसीही दूसरों को यह बताने के लिए जिम्मेदार है कि यीशु ने उनके लिए

क्या कीया है। कुछ पादरियों को सुसमाचार प्रचार करने का उपहार मिला होता है, लेकिन अपने विश्वास को साझा करने के लिए सभी पादरी जिम्मेदार हैं। प्रत्येक मसीही विश्वासी को सुसमाचार फैलाने की आज्ञा दी गई है (मत्ती 4:19-20; 28:18-20; रोमियों 1:16; फिलेमोन 6; मरकुस 16:15-16; 13:10)। पादरियों को अपनी कलीसिया में लोगों को अपने विश्वास को साझा करने के लिए तैयार और प्रेरित करना चाहिए, भले ही वो इसे उतना अच्छा तरह ना करते हों । प्रत्येक को यीशु के बारे में बात करने के अवसरों की तलाश करनी चाहिए।

मेंढक और छिपकली दोनों ही कीड़ों पर जीवित रहते हैं, लेकिन वे उनका शिकार कैसे करते हैं, इसमें बहुत अंतर होता है। एक मेंढक शांत होकर बैठा रहता है और अपनी पहुंच में आने वाले एक कीट के आने का इंतजार करता है और फिर उसे पकड़ लेता है। हालाँकि, छिपकली हर जगह तेज गति से भागती हैं, एक कीट के लिए हर दरार और कोने में खोज करती हैं। वे सक्रिय और सतर्क रहती हैं, भोजन पर कब्जा करने के लिए तेजी से आगे बढ़ती रहती हैं। कुछ मसीही मेंढक की तरह होते हैं। वे अविश्वासियों का आपने पास आने और बातचीत शुरू करने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। अन्य छिपकली की तरह होते हैं, वे सक्रिय और सतर्क रहते हैं, हर जगह यीशु के बारे में बोलने के संभावित अवसर की तलाश में रहते हैं। आपकी कलीसिया कैसी है? आप किस तरह के हैं? क्या आपके लोग दूसरों को उद्धार की व्याख्या करना और उन्हें यीशु में विश्वास की ओर ले जाना जानते हैं?

परिपक्वता (गुणवत्ता) में वृद्धि - किसी कलीसिया की वृद्धि ना केवल संख्या (मात्रा) में वृद्धि को संदर्भित करती है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए परिपक्वता (गुणवत्ता) में बढ़ने को भी संदर्भित करती है। इफिसियों 4:11-12 में पौलुस इसे बहुत स्पष्ट करता है कि पादरियों को चाहिए कि वह दूसरों को उनके विश्वास में बढ़ने में मदद करें । सुसमाचार प्रचारकों को विशेष रूप से यीशु के बारे में समाचार फैलाने और लोगों को उसके उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करने में अगुवाई करने के लिए उपहारित कीया गया है। वह उपहार बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन जो पादरी कलिसीयाओं की पासबानी करते है उनको हमेशा सुसमाचार प्रचार करने में अधिक उपहारित नहीं होते हैं । अगर वे होते भी हों , तो भी पासबानी करने के प्रति उनकी ज़िम्मेदारियाँ मिसाल बन जाती हैं और उनका ज़्यादातर समय इस्तेमाल करती हैं। पासबान, जिन्हें पौलूस (यूनानी में एक शब्द) द्वारा पादरी -शिक्षक कहता है, उन्हें दूसरों को सेवकाई का कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करना होता है। "पादरी" के रूप में हमें अपने लोगों की पासबानी, देखभाल, रक्षा, मार्गदर्शन और अगुवाई करना होता है। "शिक्षक" के रूप में हमें उन्हें परमेश्वर का वचन खिलाना होता है ताकि वे स्वस्थ रहें और आध्यात्मिक रूप से विकास करें। हमें वह सब कुछ नहीं करना है जो एक कलीसिया में करने की आवश्यकता है, लेकिन हमें दूसरों को इसे करने के लिए प्रशिक्षित करना होता है। इसमें उद्धार के लिए दूसरों को यीशु के पास लाने के लिए उन तक पहुंचना भी शामिल है। यह कलीसिया में प्रत्येक का कार्य है।

यीशु की सेवकाई का मुख्य ध्यान आपने शिष्यों को उसके लिए काम करने में आगे बढ़ने के लिए प्रशिक्षत करना था (लूका 10:1-20)। पौलुस ने तीमुथियुस, तीतुस और अन्य लोगों के साथ भी ऐसा ही किया (2 तीमुथियुस 2:2)। जब हम सेवा करते हैं, हम इसे शिक्षण की औपचारिक ढंग में या अनौपचारिक समय किसी को अपने साथ ले जाने में कर सकते हैं, ताकि वे हमसे सीख सकें। यीशु और पौलुस दोनों ऐसा करते थे ।

कलीसिया के विकास को केवल सेवाओं में भाग लेने वाले लोगों की संख्या से परिभाषित करने की गलती ना करें। परमेश्वर हमारी सफलता को संख्याओं से परिभाषित नहीं करता है, और ना लोगों की संख्या से या इस से कि कलीसिया के पास कितनी धनराशि है। हम नए नियम में किसी भी कलीसिया के आकार

को नहीं जानते हैं, लेकिन हम यह जानते हैं कि कौन स्वस्थ है और कौन स्वस्थ नहीं है । जब मैं पादरी बना तो कलीसिया छोटी थी । जब मैं 35 साल बाद सेवानिवृत्त हुआ तो इसका आकार अभी भी उतना ही था। परन्तु यह एक स्वस्थ कलीसिया थी क्योंकि बहुतों ने उद्धार प्राप्त किया और इसकी सेवकाई के माध्यम से अपने विश्वास में वृद्धि पाई थी । परमेश्वर के रज्य के लिए, स्थानीय स्तर पर और विष्व भर में भी बहुत कुछ पूरा किया गया। (अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा " परमेश्वर कलिसीयाओं से क्या उम्मीद करता है " पुस्तक पढ़े ।)

इसे लागु कारने में प्रशन : *क्या आप को सुसमाचार प्रचार करने का उपहार दीया गया है ? यदि हां, तो आप अपनी कलीसिया में लोगों की लापरवाही किए बिना उस उपहार का उपयोग कैसे करते हैं? यदि नहीं है , तो क्या आप अब भी दूसरों को यीशु का सुसमाचार सुनाने की पूरी कोशिश करते हैं? आप कैसे बता सकते हैं कि आपकी कलीसिया के लोग आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं? यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपके लोग अपने विश्वास को दूसरों के साथ साझा करना जानते हैं आप क्या कर सकते हैं? आप उन्हें बेहतर तरीके से कैसे प्रशिक्षित कर सकते हैं? आप लोगों को अपने विश्वास को साझा करने में अधिक सक्रिय होने के लिए कैसे प्रेरित कर सकते हैं?*

ख. नई कलिसियाएं शुरू करने का कर्तव्य

जब भी संभव हो, परमेश्वर चाहता है कि कलीसियाओं की संख्या बढ़े। एक स्थान पर बड़ने और बड़ते रहने के बजाय, कलिसीयाओं के लिए यह अच्छा है कि वे लोगों के समूहों को उनके गृह क्षेत्रों में नई कलीसियाए शुरू करने के लिए भेजें। फिर जैसे-जैसे ये नई कलिसियाए बड़ती जाती हैं, वे विभाजित हो सकती हैं और फिर और कलिसियाए शुरू कर सकती हैं। कलीसिया के विकास के लिए यह सबसे अच्छा तरीका है।

नई कलीसिया शुरू करने के महत्व की शिक्षा दें और प्रचार करें ताकि आपके लोग इस विचार को जानें और स्वीकार करें। नई कलीसिया बनाने की जिम्मेदारी सिर्फ पादरी की ही नहीं, बल्कि पूरी कलीसिया की है। यीशु ने ऐसा उस समय किया जब उसने अपने शिष्यों को दो-दो करके नए क्षेत्रों में जाने और वहां रहने वाले लोगों की सेवा करने के लिए भेजा था (लूका 10:1-20)। एक पादरी के लिए यह बेहतर है कि वह आपने आप करने के बजाय दूसरों को कलीसिया शुरू करने के लिए प्रशिक्षित करे। जब वह नई कलीसियाएँ लगाता है तो वह मनुष्यों को अपने साथ ले जा सकता है और इस तरह वे स्वयं सीख भी सकते हैं और इसे स्वयं कर भी सकते हैं (2 तीमुथियुस 2:2)।

सभी पादरियों को नई कलीसिया शुरू करने के आवश्यक कौशल उपहार में नहीं मिलते है , लेकिन वे अपनी कलीसिया में दूसरों को, जिनके पास ऐसे उपहार हैं, उनका उपयोग करने के लिए, सक्षम कर सकते हैं । जब आप एक परिवार, या कई परिवारों को पहचानते हैं, जिनमें रुचि और कौशल है, जो एक नई कलीसिया शुरू करने में उपयोगी हैं, तो उन्हें प्रशिक्षित करें और उन्हें अपने क्षेत्र के लोगों से बात करना शुरू करने में मदद करें। जब कोई छोटा समूह हो, तो उन्हें नियमित रूप से इकठे होना शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें प्रोत्साहित करने और मार्गदर्शन करने के लिए उनके साथ नजदीकी संपर्क में रहें।

नई कलीसिया शुरू करने के लिए बहुत मेहनत, दृढ़ता, धैर्य और प्रार्थना की आवश्यकता होती है। यह हृदय तोड़ने वाला और निराश करने वाला कार्य हो सकता है, लेकिन यह बहुत ही लाभकारी और आशा और ख़ुशी देने वाला कार्य भी साबित हो सकता है। मत्ती 16:18 में यीशु के शब्दों को याद रखें, "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल ना होंगे।"

इसे लागु करने में प्रशन : क्या आपके पास आध्यात्मिक उपहार या कौशल हैं जो एक नई कलीसिया शुरू करने में उपयोगी हैं? आप उनका उपयोग, विश्वासियों के नए समूहों को लगाने और उन्हें बढ़ने में मदद करने के लिए, कैसे काम कर सकते हैं? यदि आपको कलसिया बनाने के क्षेत्र में उपहार नहीं दिया गया है, तो आप, उनको जिनके पास यह उपहार है उन्हें प्रशिक्षित और तैयार करने के लिए, क्या कर सकते हैं? आप उनका समर्थन और प्रोत्साहन कैसे कर सकते हैं?

VI. अन्य पादरियों के प्रति कर्तव्य

पादरियों के रूप में हमारे पास ना केवल स्वयं के प्रति, हमारे परिवारों और हमारी कलीसिया के लोगों के प्रति कर्तव्य हैं, हमारे पास अन्य पादरियों के प्रति भी जिम्मेदारियां होती हैं। हम एक ही टीम में हैं, उसी महान चरवाहे के लिए काम कर रहे हैं। अन्य पादरियों के प्रति कोई तुलना /मुकाबलेबाजी, उनसे कोई ईर्ष्या या उनकी को आलोचना नहीं की जा सकती (1 कुरिन्थियों 3:9)। हमें झूठे शिक्षकों का मूल्यांकन और न्याय करना है, लेकिन साथी पादरियों और उनकी सेवकाई का नहीं (1 तीमुथियुस 5:19-25; रोमियों 14:4)। हमें एक दूसरे का समर्थन करना चाहिए, एक दूसरे के साथ मुकाबला नहीं करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 3:8-9)। हम एक साथ काम करती हुयी एक देह हैं (1 कुरिन्थियों 12:12-27; रोमियों 12:4)। जब देह के अंग एक दूसरे के खिलाफ काम करते हैं तो शरीर कमजोर और अस्वस्थ हो जाता है। कलीसिया के साथ तब ऐसा होता है जब पादरी और कलीसिया आपस में ईर्ष्या करते हैं या एक दूसरे के साथ मुकाबला करते हैं।

हमें एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करने, एक-दूसरे की मदद करने, एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने और अपने आम दुश्मन के खिलाफ मिलकर काम करने की जरूरत है। अन्य पादरियों के साथ संगति और सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है। हम चिंतन को साझा कर सकते हैं, अंतर्दृष्टि और ज्ञान प्रदान कर सकते हैं, कठिनाइयों के दौरान प्रोत्साहित कर सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे को जवाबदेह ठहरा सकते हैं। हम जरूरत पड़ने पर दूसरों की मदद करने के लिए अपने वरदानो और ताकतों को साझा कर सकते हैं। हमें एक दूसरे की जरूरत है। मुझे लगता है कि आज इतने सारे पादरियों के संघर्ष का एक कारण यह है कि उनके पास अन्य पादरी नहीं हैं जो ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद कर सकें। तीमुथियुस के पास काम साझा करने के लिए तीतुस जैसा साथी पादरी था । उसके पास एक संरक्षक के रूप में पौलूस भी था । पौलूस के पास एक संरक्षक के रूप में बरनबास और एक दोस्त के रूप में लूका था जो उसके साथ यात्रा और सेवा करता था। यीशु के पास उसके शिष्य थे, और विशेष रूप से याकूब, यूहन्ना और पतरस।

इसे लागु करने में प्रशन : *जरूरत पड़ने पर आप किसके पास जा सकते हैं? आप किसके साथ संघर्ष और कठिनाइयों को साझा कर सकते हैं? यदि तुम संघर्ष करोगे तो तुम्हें कौन देखेगा ? अगर आप फिसलते हैं तो आपको कौन जिम्मेदार ठहराएगा? आपका गुरु कौन है? आप किसका मार्गदर्शन कर रहे हैं? आप किन युवा पादरियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं और उनकी मदद कर रहे हैं? आप उनके लिए क्या कर रहे हैं?*

VII. पादरियों की पत्नियाँ

एक पादरी की पत्नी पत्नी को शामिल किये बिना, पादरी के कर्तव्यों को संबोधित करना पूर्ण नहीं होगा। पास्टर बनने के लिए उसका शादीशुदा होना आवश्यक नहीं है, लेकिन जो शादीशुदा हैं उनके लिए यह

अध्याय मददगार साबित हो सकता है। यह अविवाहित पुरुषों के लिए भी विवाह के बारे में सोच- विचार करने के लिए अच्छा है।

एक पादरी की पत्नी परमेश्वर और अपने पति के साथ अपना संबंध उसी तरह विकसित करती है जैसे कोई भी मसीही महिला करती है। ऐसा वह अपने फायदे के लिए करती हैं। एक पादरी की पत्नी को लाभ होता है जब वह एक मसीही की तरह और पत्नी के रूप में बाइबल के सिद्धांतों का पालन करती है। बाइबल एक धर्मी स्त्री और पत्नी के चरित्र के लक्षण देती है।

क. परमेश्वर से उसका संबंध

अपने पति की तरह, वह भी परमेश्वर के स्वयं के स्वरूप में रची गई है (उत्पत्ति 1:26)। वह भी अनूठे और विशेष रूप से बनाई गई है (भजन 139:1-16)। वह परमेश्वर की अति उत्तम रचना है (इफिसियों 2:10)। परमेश्वर उसको भी उसके पति के समान प्रेम करता है। परमेश्वर की दृष्टि में वे समान हैं (गलातियों 3:28)। उसे प्रार्थना, आराधना और बाइबल अध्ययन के नियमित समयों के माध्यम से परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध में विकसित होने की आवश्यकता है। परमेश्वर के साथ समय बिताना एक प्राथमिकता है।

कुछ पादरियों की पत्नियाँ परमेश्वर की ओर से सेवकाई के लिए विशेष बुलाहट महसूस करती हैं जबकि अन्य को यह विशेष बुलाहट नहीं मिलती है। भले ही एक महिला को विशेष रूप से उसके पति के रूप में पूर्णकालिक सेवकाई के लिए नहीं बुलाया जाता है, फिर भी उसके पास सेवा योगदान के लिए अनूठे आध्यात्मिक उपहार होते हैं। पादरी की पत्नी होने की उसकी स्थिति के कारण कलीसिया परिवार उसे विशेष रूप में देखता है।

कई महिलाओं ने यीशु की महिमा के लिए ईमानदारी से उसकी सेवा की है (लूका 8:1-13; 23:49, 55-56; 24:1-6, 10)। मुख्य प्राथमिकता होती है परमेश्वर के साथ अपने स्वयं के चलने की और आध्यात्मिक विकास की लापरवाही ना करना। यदि आप विश्वास में बच्चे हैं, तो आपको सलाह देने के लिए एक परिपक्व, धर्मी महिला को ढूंढ़ने से इसमें मदद मिल सकती है। बाइबल अध्ययन, संगति और प्रार्थना के लिए नियमित रूप से मिलें। यदि आप वृद्ध हैं, और अधिक परिपक्व महिला हैं तो किसी छोटी महिला को ढूंढे और उसके जीवन में निर्माण करें। इसमें समय लगता है लेकिन यह करने योग्य काम है।

ख. आपने आप से उसका संबंध

एक पादरी की पत्नी, सबसे पहले और सबसे सर्वाधिक, परमेश्वर की बेटी होती है। उसकी पहचान यीशु (2 कुरिन्थियों 5:17-18) में है, ना कि किसी पादरी के साथ हुयी उसकी शादी से। वो सब बनने के लिए, जो बनने के लिए परमेश्वर ने उसे बनाया है , उसे स्वस्थ खाने, उचित आराम करने और घर और सेवकाई को संतुलित करके अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने की आवश्यकता है। सेवकाई में जीवन की कई मांगें हैं। उसके पास अपने पति और बच्चों के साथ-साथ कलीसिया की ज़रूरतों के लिए ज़िम्मेदारियाँ हैं। आपने आप को और अपने पति को स्वस्थ रखने के लिए आपनी उचतम कोशिश करना उसकी पूरी जिमेदारी है।

परमेश्वर हमें एक दिन विश्राम करने की आज्ञा देता है (उत्पत्ति 2:1-3; निर्गमन 20:8-11; यशायाह 58:13-14; 56:1-8; प्रेरितों के काम 17:2; प्रेरितों के काम 18:4, 11) ; लूका 4:16; मरकुस 2:27-28; मत्ती 12:10-12; इब्रानियों 4:1-11; उत्पत्ति 1:5, 13-14; नहेमायाह 13:19)। समस्याओं के उत्पन्न होने पर उन्हें प्रबंधित करने के लिए, आराम करने और परिवारिक रिश्ते का आनंद लेने का समय आवश्यकता

है। एक पत्नी अपने पति को एक दिन आराम करने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद कर सकती है। यदि वह सहयोग नहीं करता है, तो भी उसे अपने आप को गति देने और आराम और तरो-ताजगी का समय निर्धारित करने का एक तरीका खोजने की जरूरत है। परमेश्वर हमें सप्ताह में केवल 6 दिन काम करने के लिए देता हैं। अगर हम सोचते हैं कि हमें पूरे 7 दिन काम करने की ज़रूरत है तो हम वह कर रहे हैं जिसकी वह उम्मीद नहीं कर रहा है। कुछ चीजों को प्राथमिकता दें, कुछ सौंपें और कुछ त्यागें।

यहाँ एक धर्मी महिला के कुछ चरित्र लक्षण दिए गए हैं जिनमें एक पादरी की पत्नी के रूप में एक महिला को विकसित करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

उसके पास एक कोमल और शांत आत्मा है - जब एक महिला में कोमल और शांत आत्मा होती है, यह परमेश्वर को प्रसन्नता देता है (1 पतरस 3:4)। पादरियों को अपनी पत्नियों से इसकी आवश्यकता है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह चुप रहती है या शांत रहती है, पर हाँ वह दयालु, प्रेमपूर्ण तरीके से बोलती है (इफिसियों 4:15)। वह आदर सम्मान से बोलती है (इफिसियों 5:33; 5:21-32; 1 पतरस 3:1-7)। सुलैमान कहता है कि घर की छत के कोने में अकेले रहना, झगड़ालू पत्नी के साथ रहने से अच्छा है (नीतिवचन 21:9, 19)। एक कोमल और शांत आत्मा सम्मान दिखाती है। पुरुषों को भी उतना ही सम्मान चाहिए होता है जितना महिलाओं को प्यार कीए जाने की जरूरत होती है। एक शांत आत्मा का अर्थ डर या चिंता के बजाय "आंतरिक शांति" या आंतरिक संतोष भी है। ईश्वरीय महिलाओं को यह जानकर आंतरिक विश्वास होता है कि परमेश्वर उनसे प्यार करता है और उनके जीवन और सेवकाई में मौजूद होता है।

वह अपने जीवन में संतुलन रखती है -एक पादरी की पत्नी के महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक है , सेवकाई और विवाह के बीच संतुलन बनाए रखना। कभी-कभी पादरी दूसरों की मदद करने और उनकी आपूर्ति में अत्यधिक व्यस्त रहता है और अपने परिवार और पत्नी की लापरवाही करता है। मसीह यीशू बड़ी संख्या में सेवकाई करने, भीड़ की माँग पूरी करने, शिष्यों के साथ समय बिताने और फिर पिता के साथ अकेले समय बिताने का संतुलन बनाये रखता था। व्यक्तिगत, निजी पारिवारिक समय और पति-पत्नी के समय के लिए समय निकालना पत्नी के लाभ के लिए है। रिश्तों को खिलाने/देखरेख की जरूरत है ताकि वे बढ़े। अपनी शादी में समय और ऊर्जा लगाएं और अपने पति को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें। अपने पति के साथ विश्राम के लिए और दिन में बात करने के लिए समय को प्राथमिकता दें।

वह सिखाने योग्य है -परमेश्वर लगातार एक पादरी के जीवन में कार्य कर रहा होता है ताकि वह यीशु के जैसा और अधिक बनता जाए (फिलिप्पियों 1:6)। यह एक पादरी की पत्नी के बारे में भी यही सच है। उसे सीखने योग्य आत्मा वाली , खुले दिमाग और सीखने वाली और बढ़ने की हार्दिक इच्छा वाली होने की आवश्यकता है (नीतिवचन 131:18; 4:5; 9:9; 1 पतरस 5:5)। इसके लिए विनम्रता की आवश्यकता होती है। (मत्ती 23:12; अय्यूब 22:29; भजन संहिता 25:9; 1 पतरस 5:6)। जरूरत पड़ने पर उसे माफी मांगने या अपनी राय बदलने के लिए तैयार रहने की जरूरत है।

ग . उसका अपने पति से संबंध

एक पत्नी के रूप में उसकी मुख्य जिम्मेदारी अपने पति को सहारा देना और उसकी मदद करना होता है (इफिसियों 5:22-24, 33; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1-6)। परमेश्वर ने महिला को उसके पति के लिए एक सहायक के रूप में बनाया। (उत्पत्ति 2:18) विवाहित पुरुषों को एक सहायक, मददगार पत्नी की आवश्यकता होती है। उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। अबीगेल एक अच्छी उदाहरण थी (1 शमूएल

25:39-42)। एक पत्नी उसे प्रोत्साहित करने, प्रार्थना करने, सलाह देने और उन लोगों से बचाने में मदद करती है जो उसे हराने की और हतोत्साहित करने की कोशिश करते हैं।

वह एक टोली का हिस्सा है -पति और पत्नी सेवकाई में एक टोली बनाते हैं। पत्नी कलीसिया में अपने पति के समान कार्य या अधिकार में कार्य नहीं करती है, परन्तु उन्हें विवाह के कारण सेवकाई में एक साथ जोड़ा जाता है (2 कुरिन्थियों 6:14)। दुर्भाग्य से, कुछ पादरियों की पत्नियाँ पासबानी को केवल "उसकी" सेवकाई के रूप में देखती हैं और उसके साथ भाग नहीं लेती हैं। साथ ही साथ , कुछ पादरी उसे वह काम सौंप देते हैं जो कोई और नहीं करना चाहता। ऐसा करना ना तो प्यार है या ना उचित है।

एक धर्मी पत्नी को अपने पति के लिए एक प्रोत्साहन की तरह होना चाहिए। वह उन चीजों को देख सकती है जो वह नहीं देख सकता है और जरूरत पड़ने पर उसे अच्छी सलाह देती है। जब उसे बात करने और सुझाव देने की आवश्यकता होती है तो वह सुन सकती है। जब वह संघर्ष करता है, तो वह उसकी सहायता कर सकती है और यदि वह पाप करता है, तो वह उसके लिए प्रार्थना कर सकती है (गलातियों 6:2-12)। वह उसे जितना बेहतर जानती है उतना कोई नहीं जानता है । वह उसकी ताकत, कमजोरियों, प्रलोभनों और चुनौतियों को जानती है। वह जानती है कि उसकी सबसे अच्छे ढंग से मदद कैसे करनी है।

जब वह महिलाओं के लिए सेवकाई करता है तो उसकी मदद करने के लिए वह एक अनूठी सहायक होती हैं। वह अन्य महिलाओं की जरूरतों और समस्याओं को समझ सकती है, महिलाओं द्वारा सबसे अच्छी तरह से संभाले जाने वाले संवेदनशील विषयों को संबोधित कर सकती है, और जब वह महिलाओं के साथ परामर्श या दौरा करता है तो उसके साथ जाती है। एक पुरुष को कभी भी, किसी भी कारण से उस महिला के साथ अकेले नहीं रहना चाहिए जो उसकी पत्नी, मां या बेटी नहीं है। यह एक पादरी की प्रतिष्ठा और प्रलोभन से बचाव के लिए आवश्यक है। उसकी पत्नी इसे सुनिश्चित कराने में मददगर के रूप में उपलब्ध हो सकती है।

वह एक सहायक पादरी नहीं है, और उसके पति को या कलीसिया के लोगों द्वारा उसके इस नजरिये से व्यवहार नहीं करना चाहिए। वह अपने पति और कलीसिया के लिए उपयोग करने के लिए अपना अनूठा दृष्टिकोण और उपहारों की पेशकाश करती है। अक्विला की पत्नी प्रिसिला, पत्नी का एक अच्छी उदाहरण थी जिसने अपने उपहारों का उपयोग सेवकाई में किया और अपने पति के साथ एक टोली के रूप में काम किया (प्रेरितों के काम 18:26; रोमियों 16:3-5; 1 कुरिन्थियों 16:19)।

वह प्रार्थना करती है - प्रार्थना करना अपने पति के प्रति किसी भी पत्नी की जिम्मेदारी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ज्ञान, मार्गदर्शन, दृढ़ता, साहस और पवित्रता के लिए प्रार्थना करें। उसके और आपने पूरे परिवार के चारों ओर सुरक्षा बाढ़े के लिए प्रार्थना करें (अय्यूब 1:10)। प्रार्थना करें कि परमेश्वर रक्षक स्वर्गदूतों को चारों ओर रखेगा, वह सभी बुराई या बाधाओं से रक्षा करेंगे जो उन्हें नुकसान पहुंचा सकती है (मत्ती 18:10; दानिय्येल 10:21; भजन संहिता 91:11; 34: 6-7; प्रेरितों के काम 12:1-1) 10; इब्रानियों 1:14)।

उसके साथ प्रार्थना करो। विशेष कार्यों या कार्यों के लिए जाने से पहले उसके साथ प्रार्थना करने के लिए आपने आप को उपलब्ध करें। प्रत्येक दिन की शुरुआत और अंत में उसके साथ प्रार्थना करें। अपने परिवार और उसकी जिम्मेदारियों के लिए एक साथ प्रार्थना करें। कुछ चीजें केवल प्रार्थना से ही जीती जाती हैं (मरकुस 9:29)। मैं अपनी सेवकाई को पीछे मुड़कर देखता हूँ और देख सकता हूँ कि मेरी पत्नी की प्रार्थनाएँ अक्सर मेरे सभी व्यस्त कामों की तुलना में परमेश्वर के रज्य के लिए अधिक काम करती हैं।

वह अपने पति से प्यार करती है -परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया का अगुवा एक वफादार, प्यार करने वाला पति हो। इसका शाब्दिक अर्थ है "एक पत्नी का पति।" यूनानी में इसका अर्थ है "एक स्त्री का पुरुष" (1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:6)। एक पादरी को एक विश्वासयोग्य, वफादार और प्यार करने वाला पति होना चाहिए। पत्नी अपने प्यार का प्रतिउतर, विश्वासयोग्य होने से और प्यार करने से, देती है। कई पादरियों के पास अपनी समस्याओं को साझा करने के लिए करीबी दोस्त नहीं होते हैं। एक पादरी की पत्नी उसे सेवकाई में प्रोत्साहित करने के लिए सहयोग प्रदान करती है, उस समय भी जब वह काम छोड़ देने का मन बनाता है। मुझे एक धर्मी , वफादार पत्नी के रूप में आशीष मिली है जो मेरी मदद करती है और कई कठिन वर्षों में मेरे साथ खड़ी रही है। उसके बलिदान प्रेम और सेवा के बिना मैं वह व्यक्ति नहीं होता जो मैं आज हूं या मेरे पास यह सेवकाई नहीं होती जो आज है । मेरे लिए उसका बेशर्त प्यार मेरे लिए परमेश्वर के प्यार का प्रतिबिंब है और इसके लिए मैं उसे (अपनी पत्नी को) और उसे (परमेश्वर) को धन्यवाद देता हूं। धर्मी पत्नियों के लिए परमेश्वर की स्तुति करो (नीतिवचन 18:22; 31:30-31)।

घ . उसका अपने बच्चों और घर से संबंध

वह घर की आत्मा है - परमेश्वर और उसके पति के बाद परन्तु कलीसिया से पहले , एक पादरी की पत्नी को एक ईश्वरीय माँ होना चाहिए (भजन संहिता 127:3-4)। उसके पति को पादरी बनने के लिए "अपने घर को अच्छी तरह से प्रबंधित" करने की आवश्यकता है (1 तीमुथियुस 3:4-5; तीतुस 1:6)। मतलब यह कि उसे अपनी पत्नी और बच्चों को एक दूसरे के प्रति प्रेम और सम्मान से ईश्वरीय जीवन जीने के लिए उनकी अगुवाई करना है । एक पत्नी उसके लिए इस काम को आसान या कठिन बना सकती है। उसका बच्चों पर बहुत प्रभाव होता है और वह घर के लिए भावनात्मक रवैया स्थापित करती है। अगर वह खुश, आशावादी और हर्षित है, तो घर भी ऐसा ही होगा। अगर वह गुस्से में और आलोचनात्मक है, तो इसका असर बाकी सभी पर भी पड़ेगा। उसे अपने पति के साथ, एक प्रेमपूर्ण, विश्वासयोग्य परिवार बनाने के लिए, कार्य करने की आवश्यकता है। वह पारिवारिक जीवन के साथ-साथ सेवकाई में भी उसकी साथी और उसकी टोली में एक साथी होती है।

वह घरेलू प्रबंधन में मदद करती है- एक पादरी के घर का अधिकांश दिन-प्रतिदिन का प्रबंधन उसकी पत्नी द्वारा किया जाता है। वह अपने पति को घर चलाने के बोझ से मुक्त करके उसकी सेवकाई को बहुत बढ़ा सकती है (तीतुस 2:5)। वह एक ऐसा वातावरण तैयार करती है जो बाहरी लोगों के लिए एक महान गवाही और एक शांति-स्वर्ग दोनों है जिसमें वह प्रत्येक दिन के अंत में आपना शरण पाता है; एक ऐसी जगह जहां वह अपने बोझ को हल्का महसूस कर सकता है। वह एक ऐसा वातावरण बनाती है जो सेवकाई और शिष्यत्व के लिए एक स्वागतम स्थान होता है। इसमें जरूरत पड़ने पर दूसरों की पहुनाई करना भी शामिल है। एक धर्मी महिला की उच्च बुलाहट होती है, जैसा कि नीतिवचन 31 की स्त्री में देखा गया है। वह परमेश्वर के वचन और सिद्धांतों पर अपना घर बनाती है (नीतिवचन 14:1)।

वह अपने बच्चों को प्रशिक्षित करती है- अपने पति के साथ मिलकर , पत्नी अपने बच्चों को प्रभु को जानने और उसका अनुसरण करने के लिए प्रशिक्षित करती है (नीतिवचन 22:6; 1:8-9; 6:20-22; व्यवस्थाविवरण 6:7-8)। वह कथनी और करनी की उदाहरण के द्वारा ऐसा करती है। दुश्मन मसीही अगुवओं के विवाह और बच्चों को नष्ट करने की कोशिश करता है। माता-पिता को इन हमलों के प्रति अतिरिक्त सतर्क रहना चाहिए और दुश्मन को हराने के लिए एक साथ प्रार्थना करनी चाहिए।

वह संसाधनों की एक विश्वासयोग्य भण्डारी होती है - पादरी को भुगतान करना एक कलीसिया की आवश्यकता है (देखें खंड IX। चरवाहों के लिए भेड़ के कर्तव्य)। एक पादरी लालची या भौतिकवादी नहीं होता है, लेकिन उसे अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए। एक धर्मी पादरी

की पत्नी आर्थिक मामलों के बारे में संतुलित दृष्टिकोण रखने में एक बड़ी मदद हो सकती है - लालची या मांग करने वाली नहीं। उसे प्रार्थना करनी चाहिए और परमेश्वर से देने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। परिवार के पास जो कुछ है उसे उसका एक अच्छा भण्डारी होना चाहिए और अपने संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए। जब बलिदान की आवश्यकता होती है, तो वह इसे नम्रता के साथ करती है, जैसे कि प्रभु के प्रति। वह दूसरों से ईर्ष्या नहीं करती जिनके पास अधिक है। सेवकाई में सेवा करने की सच्ची दौलत इस दुनिया में दिखाई नहीं देती है लेकिन अगली दुनिया में पुरस्कृत होती है।

नीतिवचन 31 में जो स्त्री है वह स्पष्ट रूप से एक धर्मी महिला थी जो अपने घर, आराधना स्थल और समुदाय दोनों में सक्रिय थी (नीतिवचन 31:10-31)। दूसरों की मदद करना और उनकी सेवा करना एक पादरी की पत्नी होने का हिस्सा होता है। वह जो कुछ भी करती है, उसे ध्यान में रखते हुए, घर या कलीसिया से बाहरी व्यवसाय के बारे में आप का क्या विचार है ? बाइबल नहीं कहती। यह प्रत्येक पादरी और उसकी पत्नी पर निर्भर करता है कि वह यह जान सके कि उनके परिवार के लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है। घर से बाहर काम करने के लिए घर और कलीसिया में समय के प्रबंधन में अतिरिक्त कौशल की आवश्यकता होगी ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या कुछ करना सबसे महत्वपूर्ण है और क्या कुछ दूसरों को सौंपने की आवश्यकता होगी।

जब मैं पासबानी करता था तो मेरी पत्नी एक नर्स के रूप में काम करती थी। आय की आवश्यकता थी और वह परिवार के लिए स्वास्थ्य देखभाल की रक्षा प्रदान करती थी । यह उसके लिए नए लोगों से मिलने और सुसमाचार साझा करने का भी एक अच्छा अवसर होता था। कुछ लोगों ने यीशु की ओर रुख किया और आज भी अच्छे दोस्त बने हुए हैं। परमेश्वर ने उसे उपचारिक कौशल के साथ बनाया और उसमें उन उपहारों का उपयोग, अपनी महिमा के लिए, करने की इच्छा पैदा की। प्रत्येक जोड़े को प्रार्थना करनी होगी और तय करना होगा कि उनके परिवार के लिए सबसे अच्छा क्या है।

ङ. चर्च के लोगों से उसका रिश्ता

महिलाओं को अक्सर उनके पति की नौकरी या भूमिका से परिभाषित कीया जाता है या पहचाना जाता है। एक पादरी से शादी करने वाली महिला को अनिवार्य रूप से कलीसिया में अपनी भूमिका के बारे में लोगों उमीदों का सामना करना पड़ता है । लोग उसकी क्षमताओं को इतनी मान्यता देगें जो शायद सच भी ना हों।

वह भी एक समान्य महिला है - पादरी की पत्नी की भूमिका मूल रूप से अपने पति का सम्मान और समर्थन करने के लिए कलीसिया में किसी भी अन्य पत्नी के समान ही होती है। एक पादरी की पत्नी के रूप में, कुछ लोग यह मान सकते हैं कि उसे वह काम करना चाहिए जो दूसरे नहीं करना चाहते। यह सच नहीं है, और यह बाइबल आधारित भी नहीं है। एक पादरी की पत्नी को कलीसिया में सेवा करनी चाहिए जैसे परमेश्वर अगुवाई करता है। अन्य महिलाओं की तरह उसे भी प्रार्थना करनी चाहिए और उसी के अनुसार अपनी प्रतिभा का उपयोग करना चाहिए।

कुछ मायनों में वह दूसरी महिलाओं की तरह है और कुछ मायनों में वह नहीं है। पादरी के साथ अपने रिश्ते के कारण उसे अलग नजरिये से देखा जाएगा। यह अच्छा है क्योंकि इससे कलीसिया और समुदाय में सेवकाई के लिए अतिरिक्त अवसर प्रदान हो सकता है। यह बुरा हो सकता है क्योंकि उस पर अनुचित उमीदें रखी जा सकती हैं। कभी-कभी यह उसके लिए अन्य महिलाओं के साथ दोस्ती करना कठिन बना सकता है इसकी तुलना में, कि अगर वह पादरी की पत्नी नहीं होती, तो वह बना सकती। जब वह व्यक्तिगत और पारिवारिक जरूरतों को दूसरों के साथ साझा करती है तो उसे विवेक का प्रयोग करने

की आवश्यकता होती है। अन्य पादरियों की पत्नियों के साथ मित्रता करना एक अच्छा विकल्प हो सकता है। फिर से, बहुत अधिक खुलासा करने से पहले भरोसे का परीक्षण करें। अन्य पादरियों की पत्नियों के साथ विश्वसनीय रिश्ता सहायता का एक अच्छा स्रोत होता हैं (तीतुस 2:3-5)।

वह सहायक पादरी नहीं है -चर्च के सदस्यों को धीरे-धीरे सिखाया जाना चाहिए कि पादरी की पत्नी को कलीसिया के मुद्दों के बारे में सब कुछ पता नहीं होता है, ना ही उससे इसकी उम्मीद की जानी चाहिए। उससे सिर्फ इसलिए कोई भूमिका निभाने की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए क्योंकि पहले पादरी की पत्नी ने वह भूमिका निभाई थी। आदर्श रूप से, कलीसिया के सदस्यों को सेवकाई से संबंधित सवालों और चिंताओं को पादरी या किसी अन्य चर्च अगुवा के पास लाना चाहिए, नाकि पादरी की पत्नी के पास।

वह अपने उपहारों का इस्तेमाल करने से सेवा करती है; अन्य मसीहिओं की तरह पादरी की पत्नी के पास विशेष उपहार हैं जो परमेश्वर ने उसे मसीह की देह की सेवा करने के लिए दिए होते हैं (रोमियों 12:6-8)। वह उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कलीसिया को परमेश्वर का एक उपहार होती है (इफिसियों 4:10-12)। परमेश्वर उससे उन उपहारों का उपयोग करने की उम्मीद करता है (1 पतरस 4:10-11)। अगर वह नहीं करती है तो पूरी कलीसिया पीड़ित होती है। यदि वह अन्य कामों में व्यस्त है, तो उसके पास वह करने के लिए समय या ऊर्जा नहीं होगी जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे तैयार कीया है। लूका 2:36-37 में अन्ना, प्रेरितों के काम 9:36 में दोरकास, प्रेरितों के काम 16:15 में लिडिया, प्रेरितों के काम 18:26 में प्रिस्किल्ला, प्रेरितों के काम 21:9 में फिलिप की बेटियां, रोमियों में 16:1-2, फोबी और 1 तीमुथियुस 5:3-10 विधवाएं , सभी के उदाहरण हैं। पहले उपहार के क्षेत्रों में अपने समय को प्राथमिकता दें। अन्य क्षेत्रों को जोड़ें क्योंकि परमेश्वर आपकी अगुवाई करता है।

उसे खुद का मालिक होने की आजादी है - दूसरों की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश मत करो बल्कि धीरे से वो बन जाओ जो तुम खुद हो । लोगों को यह जानने की जरूरत है कि वह भी उनकी तरह ही कमजोरियों और ताकतों वाली इंसान है।

उसे अपने हृदय में लोगों के लिए प्रेम रखने के लिए, परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए- एक पादरी की पत्नी को कलीसिया और अपने पति की देखभाल में सौंपे गए लोगों के लिए सच्चे प्रेम की आवश्यकता होती है। लोगों के प्रति गहरा प्रेम निराश होने को रोकेगा। उसे लोगों को उनकी असंवेदनशीलता और आलोचना के लिए क्षमा करने की आवश्यकता है। उसका प्यार उसके पति और बच्चों के लिए एक अच्छी मिसाल कायम करता है।

उसके पास अच्छा चरित्र है -1 तीमुथियुस 3:11 कहता है, "महिलाओं को सम्मान के योग्य होना चाहिए, दुर्भावनापूर्ण बात करने वाली नहीं, बल्कि संयमी और हर चीज में भरोसेमंद होना चाहिए।" वह अपने सार्वजनिक आचरण, निजी बातचीत और सूचना और जिम्मेदारियों के पुरे प्रबंधन के क्षेत्रों में उच्च चरित्र का प्रदर्शन करती है। यह इस बात पर आधारित होता है कि वह क्या कहती है और क्या नहीं। उसके साथ कोई भी जानकारी विश्वास में साथ साझा की जाती है और उसे इसको गोपनीय रखने की आवश्यकता होती है। उसके पास लोगों के बारे में निजी जानकारी तक की पहुंच होती है। इसे भी गोपनीय रखने की जरूरत है। वह गपशप नहीं कर सकती, या यहाँ तक कि गपशप सुन भी नहीं सकती (नीतिवचन 11:13; 16:28; 10:18; 11:9; इफिसियों 4:29; 1 कुरिन्थियों 6:9-10)। नकारात्मक आलोचना या टिप्पणियों पर चर्चा नहीं की जानी चाहिए (फिलिप्पियों 4:8)। एक सेवक के रवैये के सरल भावों से पता चलता है कि वह दूसरों की परवाह करती है और अपने हितों से पहले उनके हितों की तलाश करती है। फोबी का उदाहरण देखें, जो प्रारंभिक कलीसिया में एक डीकन थी । (रोमियों 16:1-2.)

वह दूसरों के साथ बुद्धि/ज्ञान बाँटती है - एक गुणवंत स्त्री "बुद्धि से अपना मुँह खोलती है" (नीतिवचन 31:26)। वह कलीसिया के भीतर दूसरों को अच्छी सलाह देती है। वह युवा महिलाओं को व्यक्तिगत रूप से और एक समूह के रूप में सलाह दे सकती है (तीतुस 2:3-5)। इलीशिबा ने मरियम को आत्मिक और संसारिक जीवन का प्रशिक्षण प्रदान किया (लूका 1:41-45)।

उसकी सराहना की जाती है और उसका सम्मान किया जाता है -पादरी अपनी पत्नी की प्रशंसा करने और उसका सम्मान करने का एक उदाहरण पेश करता है (नीतिवचन 31:29-31)। ऐसा घर में भी होता है और सार्वजानिक तौर पर भी। वह सभी महिलाओं को महत्व देने और उनका सम्मान करने का उदाहरण स्थापित करता है, जैसा कि यीशु ने किया था (लूका 13:12-16; 17:11-17; 8:3-11, 43-48; 7:36-50; यूहन्ना 4:4-42) पौलुस ने भी वैसा ही किया (रोमियों 16:1-2; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12-13)।

वह आतिथी भाव दिखाती है- यहां तक कि जब संसाधन कम होते हैं, एक पादरी की पत्नी एक स्वागत योग्य खुले घर सहित बहुत ही सरल आतिथ्य भाव प्रदान कर सकती है (1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:8; 1 पतरस 4:9) (कुलुस्सियों 4:15)। पतरस की पत्नी का एक अच्छा उदाहरण है (मरकुस 1:29-34; 1 कुरिन्थियों 9:5)। जबकि कुछ महिलाओं को आतिथ्य के क्षेत्र में उपहार दिया जाता है, सभी को यह पेशकश करनी होती है।

उसे पुरस्कृत किया जाएगा - जबकि पत्नी पृष्ठभूमि में एक भूमिका निभाती है, वह परमेश्वर से अपने पति के प्रतिफल में भाग लेगी, जो सभी विश्वासयोग्यता को समान रूप से प्रतिफल देता है (इफिसियों 6:7-9; 1 पतरस 5:1-4)। परमेश्वर ने जो कुछ दिया है उसका ईमानदारी से उपयोग करने के लिए पुरस्कार, उस विधवा की तरह जिसने उसे दो सिक्के दिए (मति 12:41-44)। यह पादरी की पत्नियों के लिए भी सच है।

च. चर्च के बाहर के लोगों से उसका संबंध

पादरियों की पत्नियाँ उनके चर्च और समुदाय के भीतर प्रसिद्ध हस्ती होती हैं। अगर वे गोपनीयता की लालसा रखती हैं, यह एक बोझ हो सकता है, लेकिन यह कलीसिया के बाहर सेवकाई करने का अवसर है। पादरीयों की पत्नियों को यीशु के राजदूतों के रूप में देखा जाता है जो यीशु के लिए सेवा और बातचीत करने के द्वार खोल सकती हैं (2 कुरिन्थियों 5:20)। सामुदायिक मामलों में सक्रिय तौर पर भागीदारी करना नमक और ज्योति बनने का एक तरीका है (मत्ती 5:13-16)। यह उन लोगों के लिए भी यीशु के प्रेम को दर्शाता है जो उसे नहीं जानते (यूहन्ना 13:35)। बेशक, यह सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिकताएं निर्धारित की जानी चाहिए कि पति की , परिवार की और कलीसिया की जरूरतों को भी पूरा किया जा रहा है।

निष्कर्ष "जो एक पत्नी पाता है वह अच्छी चीज पाता है" (नीतिवचन 18:22), और एक पादरी जो एक धर्मी पत्नी पाता है जो उसको और उनको जिन लोगों की वह सेवा करता है प्रेम करने के लिए तैयार है , वह माणिक से अधिक मूल्यवान है (नीतिवचन 31:10, 15)। जिस कलीसिया को भी ऐसी पत्नी वाला पादरी मिलता है, उसको भी मानो परमेश्वर से एक खजाना ही मिला है। एक पत्नी अपने पति की सेवकाई को बना या बिगाड़ सकती है। किसी भी फलवंत पादरी से उसकी सेवकाई की शक्तियों के बारे में पूछें तो वह अपनी पत्नी को इसमें जरूर शामिल करेगा जिसने विश्वासपूर्वक उससे प्रेम किया है और कलीसिया की सेवा की है क्योंकि वह अन्य सभी से पहले यीशु से प्रेम करती है और उसकी सेवा करती है। मैं अपनी पत्नी के लिए लगातार परमेश्वर का शुक्रिया अदा करता हूं। मैं उसके बिना यह नहीं कर सकता था!

पादरियों के लिए इसे लागु करने में प्रशन : *क्या आप अपनी पत्नी को उसके उपहारों और प्रतिभाओं का पूरा उपयोग करने की अनुमति देते हैं? उस सब के लिए दिखाते हैं जो वह आपके लिए और कलीसिया के लिए करती है क्या आप निजी तौर पर और सार्वजनिक रूप से उसका सम्मान और इज्ज़त करतें हैं? क्या आप उसे उन लोगों से बचाते हैं जो उसका फायदा उठाते हैं? क्या आप यह सुनिश्चित करते हुए कि आप दूसरों की सेवा करने से पहले उनकी ज़रूरतें पूरी करते हैं उसे और बच्चों को सब से पहले रखते हैं ?*

पादरियों की पत्नियों के लिए इसे लागु करने में प्रशन : *क्या आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ रही हैं? क्या आप अपने दिन में परमेश्वर के साथ अकेले समय को सर्वोच्च प्राथमिकता बनाती हैं? क्या आप अपने पति, यीशु और आपनी कलीसिया के लोगों के लिए प्रेम के कारण अच्छे मनोभाव के साथ सेवा करती हैं? क्या आप अपने पति के साथ और उनके लिए नियमित रूप से और विश्वासपूर्वक प्रार्थना करती हैं? क्या आप कभी गपशप सुनती हैं या इधर उधर बात करती हैं? क्या आप एक शांतिपूर्ण, व्यवस्थित घर बनाकर अपने पति की मदद करती हैं?*

ज. चर्च के बाहर के लोगों से उसका संबंध

मेरी पत्नी की तरफ से कुछ शब्द

एक पादरी की पत्नी की प्राथमिकता और विशेषाधिकार

प्राथमिकता

आपने विवाह और सेवकाई के 40 वर्षों के बाद पादरियों की पत्नियों के लिए मेरा प्रोत्साहन बहुत सधारण सा है: "अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और अपनी सारी आत्मा और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करो।'... 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो।' '" (मरकुस 12:50-51) ।

पहली चीज़ें पहली रहें : **"प्रभु से प्रेम करो।"** सब कुछ इस भावना करों, मनो कि आप प्रभु के लिए करती हो (कुलुस्सियों 3:17, 23)। प्रभु के लिए प्रेम को आप जो कुछ भी करती हैं यह सब उस प्रेम से प्रेरित होना चाहिए जो प्रभु के लिए है अन्था आप का अपने पति, परिवार, कलीसिया और पड़ोसियों की देखभाल करना एक दबाव का सा हो जाएगा। यदि आप जानती हैं कि आप अपना काम मुख्य रूप से इसलिए कर रही हैं क्योंकि परमेश्वर ने पहले आपसे प्यार किया था, तो यहां पृथ्वी पर मान्यता, इनाम और सफलता उतनी महत्वपूर्ण नहीं रह जाती है। क्योंकि आप जानती हैं कि आप यह उसके लिए प्रेम और आज्ञाकारिता में करती थी ।

आयत का अगला हिस्सा कहता है कि आप **"खुद से प्यार करेंगी** । यह एक स्वस्थ समझ और स्वीकृति है" इसका अर्थ है कि आप मसीह में जो कुछ हैं आपने आप को उसी रूप में देख रही हैं जैसे वह आपको देखता है - परमेश्वर की एक रिहा कराई हुई संतान जिसे वह पसंद करता है, जिसे प्यार करता है, जिसको प्रावधान देता है, जिसे वह देखता है और जिसकी वह पूरी तरह से परवाह करता है (गलातियों 3:26; भजन 23: 1 ; मत्ती 10:30-31)।

तुम उसके प्रिय हो (रोमियों 1:7; 9:25)। वह तुम्हारे कारण आनन्दित होता है (सपन्याह 3:17)। वह आपका ध्यान, संगति और प्रशंसा चाहता है (1 कुरिन्थियों 1:9; भजन संहिता 50:14,23)। वह आपकी कदर करता है। क्या आप अपने लिए उसके प्रेम की गहराई और पूर्णता को समझती हैं? तब ही आप

आश्वस्त और सुरक्षित हो सकती हैं। वह शांतिपूर्ण आत्मा को प्रेम करता है, भयभीत और कोमल आत्मा को नहीं और ना ही किसी क्रोधित और कड़वी आत्मा को (1 पतरस 3:4)। यह उसके मन को भाता है। जब आप मसीह में सुरक्षित होती हैं तो आप आत्मविश्वास से दूसरों की सेवा करने के लिए स्वतंत्र होती है: पहले आपका पति, फिर बच्चे और परिवार और फिर विश्वासी और अविश्वासी (इफिसियों 5:22-33)।

खुद से प्यार करने का मतलब है कि आप खुद की भी परवाह करती हैं। परमेश्वर नहीं चाहता है या आपसे यह उम्मीद नहीं करता है कि आप निरंतर आधार पर सेवकाई और परिवार के लिए अपनी मूलभूत आवश्यकता का त्याग करें, उधारण के तौर पर अपनी शारीरिक शक्ति की बहाली के लिए आराम और शांत समय। जीवन का एक ऐसा समय भी आ सकता है जब बच्चे बहुत छोटे होते हैं और यह भिन्न हो सकता है। बिना गैस के कार चले इसकी उम्मीद तो कोई नहीं कर सकता । जब आप अपनी देखभाल के लिए समय निकालती हैं और शारीरिक समस्याओं और भावनात्मक थकावट को रोकती हैं तो आप बेहतर सेवा करती हैं। यहाँ तक कि यीशु भी अपनी ताजगी के लिए आपने पिता के साथ अकेले समय बिताने के लिए आपने आप को जरूरतमंद भीड़ से अलग कर लेता था (लूका 5:16)।

परमेश्वर आज्ञा देता है, सुझाव नहीं, एक दिन शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से ताजगी और आराम करने के लिए अलग रखा गया है। यदि आप अवज्ञाकारी हैं और यदि आप इस सिद्धांत और आज्ञा को नहीं मानती हैं तो आपको कष्ट होगा।

अंत में, **"अपने पड़ोसी से प्यार करो।"** आपका पड़ोसी कौन है? यीशु नेक सामरी (लूका 10:25-37) के दृष्टांत में उत्तर को चित्रित करता है । आपका पड़ोसी वह है जिसे परमेश्वर आपके रास्ते में रखता है, विश्वासी या अविश्वासी। हमें "लोमड़ी की नाईं बुद्धिमान और कबूतर की नाईं निर्दोष" होना है (मत्ती 10:16)। हमें पवित्र आत्मा को सुनना है जो लोगों की सेवा करने में हमारा मार्गदर्शन करता है। हम हर किसी की मदद नहीं कर सकते हैं, इसलिए प्रार्थना करें और संवेदनशील रहें कि परमेश्वर आपको कब, किसे और कितनी मदद करने को कहता है।

दूसरों की मदद करने में उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करें जिनमें आपको विशेष रूप से उपहारित कीया गया है या जिस तरह से कोई और मदद नहीं कर सकता है। आपको उनकी सभी ज़रूरतों को पूरा करने या सब कुछ स्वयं करने की ज़रूरत नहीं है। काम में शामिल होने के लिए दुरसों को साथ मिलाएं और दूसरों को भी काम सौंपे । काम को दूसरों के साथ बाँटें ताकि वे सीख सकें कि संतुलित तरीके से कैसे सेवा की जाती है। यीशु ने कहा, "गरीब तुम्हारे पास सदा रहेंगे" (मत्ती 26:11)। हमारी मदद और संसाधनों को प्राथमिकता दें।

आप एकमात्र पत्नी हैं जो आपके पति के लिए होगी। प्रभु के बाद, वह आपकी प्राथमिकता है। फिर आते है आपके बच्चे और परिवार और इसके बाद विश्वासी और अविश्वासी। उनकी सेवा करने से प्रभु के साथ आपका रिश्ता परिपक्व होता है और आपकी अपनी भलाई में इजाफा होता है। दूसरों की संतुलित तरीके से सेवा करने के लिए खुद को आध्यात्मिक और शारीरिक रूप से मजबूत रखें।

विशेषाधिकार

एक पति का पादरी होना सम्मान की बात है। आप प्रत्यक्ष रूप से जीवनो को रूपांतरित होते हुए देखती हैं और परमेश्वर के हाथों को काम करते हुए उस तरह से जैसे दूसरे नहीं देख सकते। उसके लिए प्रतिदिन प्रार्थना करें। प्रेम (कोमल आत्मा) में और बिना किसी भय (शांतिपूर्ण आंतरिक आत्मा) से उसका साथ दें (1 पतरस 3:4)। जब समस्याएँ आती हैं, तो एक अच्छी सुनने वाली बनें, आलोचनात्मक नहीं और ना तो

उसे ना ही विश्वासियों को दोष दें। समाधान का हिस्सा बनें, फालतू बाते करने, चुगली करने, आलोचना करने या शिकायत करने से समस्या को बढ़ाएं नहीं । इसे अकेले में प्रभु के पास ले जाओ।

अपने पादरी पति से संबंधित गोपनीय पारिवारिक मामलों पर, अपनी सह्भायता में शामिल लोगों से, चर्चा ना करें। यदि आवश्यक हो, तो किसी विश्वसनीय, गोपनीय, वृद्ध बुद्धिमान महिलाविश्वासी से बात करें। यदि गहरी चिंताओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है जैसे कि शारीरिक या मौखिक दुर्व्यवहार, तो अपनी समस्याओं को किसी विश्वसनीय प्राचीन के पास भेज दें।

अपने पादरी पति से हमेशा सही होने या ईश्वरीय तरीके से जवाब देने की उम्मीद में ना रहें । वह भी "प्रक्रिया में" है। उस पर कृपा करें। उसे भी आपकी ही तरह इसकी जरूरत है। कड़वाहट की जड़ को रोकने के लिए जल्दी से क्षमा करें। उसकी सराहना करें; उससे पूछें कि उसे क्या चिंता है और उसे क्या प्रोत्साहित करता है। उसकी प्रतिक्रिया सुनने में सक्रिय रूप से लगी रहें। एक सुरक्षित सुनने वाली बनें।

एक ऑर्केस्ट्रा में, पहली वायलिन में माधुर्यता होती है और सभी का ध्यान आकर्षित होता है। लेकिन दूसरा वायलिन वादक सामंजस्य बनाता है और संगीतमय सौंदर्य का निर्माण करता है। पादरियों की पत्नियाँ दूसरी वायलिन वादक होती हैं। हमें ज्यादा ध्यान नहीं मिलता है लेकिन हम सुंदर सामंजस्य बनाते हैं।आनंद लो। अशिषत रहो। अनन्त पुरस्कार प्राप्त करें। सबसे अच्छी मसीही महिला बनें जो आप बन सकती हैं और आप आपने आप ही एक पादरी की एक अच्छी पत्नी बन जाएंगी।

नैन्सी श्मोयर

VIII. पादरियों के प्रति भेड़ों के कर्तव्य

भेड़ें चरवाहे के काम को आसान या कठिन बना सकती हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे उसके नेतृत्व के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करती हैं। परमेश्वर की भेड़ों की भी यही सचाई है। मसीहियों को आज्ञा दी गई है कि वह अपने अगुवों का सम्मान करें (1 तीमुथियुस 5:17-25)। वे उनकी विश्वासयोग्य सेवा को मान्यता देते हुए और उनका आदर दिखा कर ऐसा कर सकते हैं (1 थिस्सलुनीकिया 5:12)। उन्हें प्रेम दिखाना महत्वपूर्ण है, क्योंकि अगुवों को इसकी उतनी ही आवश्यकता है जितनी किसी और को (1 थिस्सलुनीकियों 5:13)। लोगों को अपने पादरियों की हर तरह से मदद करनी चाहिए। उन्हें प्रतिदिन उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

कभी भी किसी अगुवे की चुगली या आलोचना ना करें (1 कुरिन्थियों 4:3-4)। अगर बाइबल संबंधी चिंताएं हैं तो उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें। यदि यह जारी रहता है तो इस व्यक्ति के बारे में अपनी चिंताओं को व्यक्त करने के लिए किसी उपयुक्त अगुवा के पास जाएं और उनको इन बातों को आपने हाथों में लेने दें। यदि यह हल नहीं होता है और परमेश्वर आपको कलीसिया छोड़ने के लिए प्रेरित करता है तो बिना चुगली या आलोचना के चुपचाप ऐसा करें (नीतिवचन 16:28; 11:9,13; 10:18; भजन संहिता 15:2-3; इफिसियों 4:29)।

मसीहियों को चाहिए कि वे अपने अगुवों को उनकी सेवा के लिए धन्यवाद दें, कठिनाइयों का सामना करने पर उन्हें प्रोत्साहित करें और उनकी हर संभव मदद करें। कलिसिआई सभाओं में नियमित उपस्थिति भी एक पादरी को प्रोत्साहित करती है।

विश्वासियों को अपने अगुओं के लिए नियमित रूप से, विशेष रूप से और प्रेमपूर्वक प्रार्थना करनी चाहिए। जिस कलीसिया की मैंने 35 वर्षों तक सेवा की, वह मेरा सहारा बनने और मेरे लिए प्रार्थना करने में अतिउत्तम थी। मैं नहीं जान सकता कि उनकी प्रार्थनाओं से क्या फर्क पड़ा, लेकिन मैं उनके बिना नहीं रहना चाहता था ।

वित्तीय सहायता - मेरा मानना है कि यह कलीसिया के लिए शर्म की बात है कि इतने सारे लोग अपने पादरियों को इस तरह से आर्थिक रूप से सहारा नहीं देते हैं जिससे वे अपनी कलीसिया में एक औसत व्यक्ति के समानय स्तर पर रह सकें। पादरियों को कलीसिया में सबसे धनी लोगों में से एक जैसा नहीं होना चाहिए, लेकिन उन्हें सबसे गरीब लोगों में से भी एक के जैसा नहीं होना चाहिए।

पौलुस ने तीमुथियुस को, जिसे वह सेवकाई में सलाह दे रहा था, चेतावनी देता है कि वह पैसे से प्यार करने के खतरों से होशियार रहे (1 तीमुथियुस 6:10-11)। वह उससे आग्रह करता है कि जो कुछ परमेश्वर प्रदान करता है उसमें संतुष्ट रहें (1 तीमुथियुस 6:8-9; फिलिप्पियों 4:11-13)। लालच पादरियों के लिए एक प्रलोभन हो सकता है। गर्व उचित उमीदों/मांगों से अधिक उम्मीदों को जन्म दे सकता है। हमें परमेश्वर की सेवा करने के लिए बुलाया गया है, पैसे के लिए नहीं। फिर भी, एक पादरी का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार की वित्तीय जरूरतों को पूरा करे। यह सुनिश्चित करना कलीसिया की जिम्मेदारी है कि ऐसा कीया जा रहा है ।

पौलुस ने आरम्भिक कलीसियाओं को नियमित रूप से भेंट चढ़ाने की आज्ञा दी थी (1 कुरिन्थियों 16:2)। परमेश्वर ने पुराने नियम में यहूदियों से कहा कि वे अपनी संपत्ति का 10% परमेश्वर के काम में दें (उत्पत्ति 14:20; 28:22) और यीशु ने दशमांश देने की मंजूरी दी (लूका 11:42)। हम अब परमेश्वर के पुराने नियम की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, इसलिए वे आज्ञाएँ हम पर लागू नहीं होती हैं। फिर भी, यह हमारे लिए एक दिशानिर्देशन हो सकता है कि हमें कितना देना है। पौलूस ने कहा, जैसा परमेश्वर ने हमें समृद्ध किया है हमें वैसे ही देना है (1 कुरिन्थियों 16:2), जो हम में से अधिकांश के लिए 10% से अधिक होगा। पौलुस दो अध्याय, 2 कुरिन्थियों के 8 और 9 को वित्तीय दान के महत्व के बारे में लिखने के लिए समर्पित करता है।

यदि लोगों के पास देने के लिए पैसे नहीं हैं, तो वे पादरी के परिवार के लिए भोजन या कुछ और उपयोगी वस्तुएं प्रादान कर सकते हैं। जिस कलीसिया में मैंने पासबानी करता था, उसके पास मुझे भुगतान करने के लिए पैसे नहीं होते थे, चर्च के लोग हमें भोजन देते थे । इसकी बहुत आवश्यकता थी और इसकी बहुत सराहना की जाती थी ।

कलीसिया को दिया गया कुछ पैसा एक पास्टर को पर्याप्त वेतन देने के लिए जाना चाहिए, क्योंकि काम करने वाला अपने वेतन का हक़दार है (व्यवस्थाविवरण 24:15)। व्यवस्थाविवरण 24:15 में चित्र एक बैल का है जो अनाज गाहने के लिए जुआ खींचकर मालिक के लिए भोजन का उत्पादन करने के लिए काम कर रहा है। यह सही है कि उसे अपने काम से लाभ उठाने दिया जाए ताकि उसके पास काम करते रहने की ऊर्जा हो। एक पादरी को भुगतान करने से उसे अध्ययन करने और पासबानी करना जारी रखने के लिए समय मिलता है।

पौलूस कहता है कि एक पादरी "दोहरे सम्मान" का हक़दार होता है (1 तीमुथियुस 5:17-18)। उसे ना केवल परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में सम्मान और इज्ज़त मिलनी चाहिए, बल्कि उसे सेवकाई के लिए समय देने में मदद करने के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त होनी चाहिए।

पादरियों को चाहिए कि वह लोगों को यह सच्चाइयें सिखाए ताकि वे स्थानीय कलीसिया में प्रभु के कार्य के प्रति देने के महत्व को समझ सकें। यदि वे वह नहीं देते जो परमेश्वर चाहता है कि वह दें, तो वे परमेश्वर को लूट रहे हैं (मलाकी 3:8)। देना आराधना का हिस्सा है और आराधना सभा के दौरान इसे इसी तरह ही समझा जाना चाहिए। हम अपना समय, प्यार, आवाज (गायन) देते हैं और कुछ आर्थिक आशीषें लौटाते हैं जो वह हमें देता है। यह सब उसकी स्तुति करने का एक हिस्सा है।

पादरियों को लोगों से अलग-अलग पैसे के लिए नहीं कहना चाहिए बल्कि कलीसिया की भेटों के माध्यम से प्रदान किये जाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। अगर कोई उपहार देता है तो उसे लेने के लिए स्वतंत्र महसूस करें। अगर आपको लगता है कि यह आपको किसी तरह से प्रभावित करने के लिए रिश्वत है तो इसे ना लें। जो मसीही नहीं हैं उनसे पैसे मत लो। यह उन्हें परमेश्वर के साथ सही होने, या अच्छे कार्यों के द्वारा उद्धार पाने के बारे में गलत विचार दे सकता है (इफिसियों 2:8-90। हमारे पास उन्हें मुफ्त में देने के लिए कुछ है - उद्धार। हमें उनसे नहीं लेना चाहिए। परमेश्वर के काम को मदद करने के लिए परमेश्वर के लोग हैं ।

एक कलीसिया को इस बात का लिखती हिसाब रखना चाहिए कि इसको कितना पैसा दिया जाता है और इसका उपयोग किस के लिए किया जाता है। यह डीक्नो का काम है, पादरी का नहीं। जब तक कलीसिया में योग्य व्यक्ति ना हो, पादरी को ना धन एकत्र करना चाहिए और ना इसे ले जाना चाहिए। किसी के लिए भी यह सोचना बहुत आसान है कि पादरी अमीर बनने की कोशिश कर रहा है।

यदि आपकी कलीसिया इस बात का रिकॉर्ड रखती है कि कौन कितना पैसा देता है, तो यह कलीसिया में परिपक्व, इमानदार लोगों द्वारा किया जाना चाहिए, ना कि पादरी द्वारा । हमेशा दो जन ऐसे होने चाहिए जो पैसे गिनते हैं और इसके उपयोग की निगरानी करते हैं। इस प्रकार कोई भी एक व्यक्ति बेईमान होने के प्रलोभन में नहीं आएगा, ना ही उस पर दुराचार का आरोप लगाया जाएगा। इन लोगों पर भरोसा किया जाना चाहिए कि वे किसी को यह नहीं बताते कि कौन कितना पैसा देता है। पादरी को भी यह पता नहीं चलना चाहिए। मुझे कभी नहीं पता था कि मेरी कलीसिया में किसने कितना पैसा दिया है । मैं नहीं चाहता था कि यह प्रभावित करे कि मैं उस व्यक्ति के बारे में कैसा महसूस करता हूं अगर उसने बहुत कुछ दिया हो या बहुत कम दिया है तो ।

एक कलीसिया जो पैसा इकट्ठा करती है उसके पास हर साल की एक बजट योजना होनी चाहिए। इससे इसका अंदाजा इसी से लगाया जाता है,कितना पैसा मिलेगा और इसका इस्तेमाल किस लिए किया जाएगा। सुनिश्चित करें कि बिलों का भुगतान पूर्ण और समय पर किया जाता है। एक कलीसिया की दूसरों के साथ अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए। कलीसिया को कितना पैसा दिया जाता है और इसका इस्तेमाल किस लिए किया जाता है, इसकी जानकारी कलीसिया के लोगों को देते रहें। जैसे लोग अपने पैसे का एक हिस्सा कलीसिया को देते हैं, वैसे ही एक कलीसिया को अपनी कलीसिया के बाहर मिशन के प्रयासों के लिए जो कुछ मिला है उसका एक हिस्सा देना चाहिए। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया को किसी भी तरह से स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय मिशनों की मदद करना चाहिए (प्रेरितों के काम 1:8)।

बाइबल मसीहीयों को कर्ज में जाने से मना करती है और एक कलीसिया को किसी भी तरह के कर्ज से बाहर रहने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए (रोमियों 13:8; नीतिवचन 22:7; भजन संहिता 37:21; लूका 14:28; इब्रानियों 13:5) । भवन खरीदना आवश्यक हो सकता है, लेकिन लागत जितनी संभव हो सके कम होनी चाहिए और जितनी जल्दी हो सके इसका भुगतान किया जाना चाहिए।

परमेश्वर को उसके वित्तीय प्रावधान के लिए धन्यवाद दें और हमेशा उसकी महिमा के लिए उसका उपयोग करें। यह उसका पैसा है जिसे आप कलीसिया में और अपने परिवार में खर्च कर रहे हैं।

इसे लागु करने में प्रशन : *क्या आप अपने लोगों को बाइबल आधारित पैसे का उपयोग करने में प्रशिक्षित करते हैं? क्या आप कलीसिया और उसके पादरी की सहायता में आर्थिक रूप से योगदान देने के महत्व के बारे में सिखाते या प्रचार करते हैं? क्या आप दूसरों के साथ आदर और दयालुता से पेश आते हैं, इस बात का उदाहरण देते हुए कि उन्हें आपके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?*

निष्कर्ष

याद रखें, परमेश्वर एक पादरी को चर्च-इमारत को भरने के लिए नहीं बुलाता है; वह उसे अपनी भेड़ों को चराने और उनकी अगुवाई करने के लिए बुलाता है। यीशु प्रतिज्ञा करता है, "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल ना होंगे" (मत्ती 16:18)। हमारा लक्ष्य यह सुनना है, "धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास" (मत्ती 25:23)। अगर हम ईमानदारी से इन कर्तव्यों का पालन अपनी क्षमता के अनुसार करते हैं और इसे यीशु के प्रेम और भक्ति से करते हैं, तो हमें उसकी स्वीकृति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त, वह हमें हमारी सेवा के लिए प्रतिफल भी देगा (2 तीमुथियुस 4:7-8)।

लाभ - हर कोई जो किसी दुसरे के लिए काम करता है वह जानना चाहता है कि नौकरी से क्या लाभ मिलते हैं। कुछ नौकरियों में कई लाभ हैं, अन्य में केवल कुछ ही होते हैं। पादरियों और कलीसिया के अगुवों के रूप में हम परमेश्वर के लिए कार्य करते हैं और उसके लाभ जबरदस्त हैं। हमारे पास इस जीवन में और अनंत काल में उद्धार के सभी आशीर्वाद और विशेषाधिकार हैं जो सभी मसीहीयों के पास हैं। इसके अलावा, खास विशेषाधिकार हैं जो केवल पादरियों के पास हैं।

मेरे पसंदीदा विशेषाधिकारों में से एक है, परमेश्वर को मेरे द्वारा और दूसरों के जीवन में, कार्य करते हुए देखना। लोगों को उद्धार के लिए प्रभु के पास आते और उसमें बढ़ते हुए देखना मेरे लिए आनंद की बात है। मैं खुशी के साथ-साथ दुख के विशेष समय में भी उनके करीब होता हूं। मैं उनके साथ प्रार्थना करता हूं, उन्हें सलाह देता हूं, और उन्हें सिखाता हूं। मैं देखता हूँ कि परमेश्वर उनकी जरूरतों को पूरा करता है और उनका विश्वास बढ़ता है। यह एक खुशी और विशेषाधिकार है जिसे मैं बहुत मानता हूं।

दूसरों के सामने यीशु का प्रतिनिधित्व करना रोमांचक और नम्रता है। हम जन्म, मृत्यु, विवाह और स्नातक के साथ-साथ जीवन के अन्य विशेष समयों में उसकी ओर से बोलते हैं। हम जो कुछ भी कहते और करते हैं उसमें हम सर्वशक्तिमान के साथ भागीदार होते हैं। हमें उसका प्रतापी सुसमाचार सौंपा गया है (1 तीमुथियुस 1:11; 1 थिस्सलुनीकियों 2:4)। परमेश्वर अपनी विशेष सच्चाइयों को हम पर प्रकट करता है (1 कुरिन्थियों 4:1) और हमें उसके वचन का प्रचार करने का विशेषाधिकार देता है (तीतुस 1:3; 2 तीमुथियुस 4:2)। हम वस्तुतः परमेश्वर के साथ सह-कार्यकर्ता हैं क्योंकि वह अपनी भेड़ों की चरवाही करने के लिए हमारे द्वारा कार्य करता है (तीतुस 1:7; 1 कुरिन्थियों 3:9; 2 कुरिन्थियों 6:1)। वह अपने बहुमूल्य बच्चों की देखभाल हमें सौंपता है (1 पतरस 5:2-3)।

एक और लाभ यह है कि हम जिन लोगों की पासबानी करते हैं, वे मित्र बन जाते हैं, यहाँ तक कि विस्तारित परिवार भी। वे हमारी मदद करने, हमें प्रोत्साहित करने और हमारे लिए प्रार्थना करने के लिए होते हैं। वे हमारे बच्चों को प्यार करते हैं और सिखाते हैं। मेरे बच्चों को कलीसिया के लोगों से मिला समर्थन और प्यार उनके विकास के लिए बहुत आवश्यक महसूस हुआ। बनी हुई दोस्ती अभी भी जारी है। इनमें से कई लोग अभी भी मेरे बच्चों के लिए, और मेरी पत्नी और मेरे लिए भी प्रार्थना करते हैं। यह एक विशेषाधिकार है जिसका शब्दों में वर्णन नहीं कीया जा सकता है।

कलीसिया ने मेरे बच्चों को दूसरों के साथ मिलना और लोगों की सेवा करना सीखने के कई अवसर भी प्रदान किए। वो आराधना में अगुवाई करते , बच्चों को पढ़ाते और कई तरह से मेरी मदद करते । उन्होंने चर्च की सफाई करने और जो भी सेवा की आवश्यकता थी उसे करने में भी सहायता की।

एक नियोक्ता के बजाय यीशु के लिए कार्य करना हमारे समय में पादरियों को अधिक स्वतंत्रता देता है। हम अपना कार्यक्रम खुद बना सकते हैं। हम प्रार्थना करने और बाइबल का अध्ययन करने के लिए समय निकाल सकते हैं और इसलिए हम अपने विश्वास में बढ़ सकते हैं।

जब हम इस जीवन को छोड़कर अगले जीवन में जाते हैं, तो हमारे लिए अतिरिक्त प्रतिफल होगा यदि हम अपने हृदय की ईमानदारी से सेवा करते हैं (1 कुरिन्थियों 3:14-15)। परमेश्वर हमें हमारी सेवकाई के आकार, लोगों के बीच हमारी लोकप्रियता, या हमारे द्वारा हासिल की गई चीजों के लिए प्रतिफल नहीं देता है। वह हमारे प्रति विश्वासयोग्यता के लिए हमारी सेवा करता है, भले ही हम अपने बाहरी कार्यों में अन्य पादरियों की तुलना कैसे भी हों (1 कुरिन्थियों 4:2)। वह हमारे हृदय को देखता है, हमारे परिश्रम के परिणाम को नहीं। आखिरकार, परिणाम उस के ऊपर निर्भर करते हैं, हम पर नहीं।

मुझे यकीन है कि आप सेवकाई से मिलने वाले कई और विशेषाधिकारों और आशीषों को सूचीबद्ध कर सकते हैं। उनके लिए परमेश्वर का शुक्र करें । उन्हें याद रखें, खासकर जब सेवकाई कठिन हो जाती है और लोग हमें चोट पहुँचाते हैं। इस जीवन में वफादारी की सेवा के लाभ महान हैं। अगले जीवन के लिए लाभ इस दुनिया से अलग हैं!

इसे लागु करने में प्रशन : *जब आप इस पुस्तक से सीखी गई बातों के बारे में सोचते हैं, तो आपके दिमाग में क्या खास आता है? परमेश्वर क्या चाहता है कि आप याद रखें और अपने जीवन और सेवकाई में लागू करें? ऐसा करने के लिए आपको क्या कदम उठाने होंगे (उन्हें अभी लिख लें)? आप इस पुस्तक को और जो बातें आपने सीखी हैं, किसके साथ साझा कर सकते हैं ?*

परिशिष्ट 1: लक्ष्य निर्धारित करना

क्या आपके जीवन-लक्ष्य ईश्वरीय हैं?

जब उसने आगे देखा, तो फ्लोरेंस चाडविक को कोहरे की एक ठोस दीवार के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता था । उसका शरीर सुन्न था। वह लगभग सोलह घंटे से तैर रही थी। पहले से ही वह दोनों दिशाओं में इंग्लिश चैनल तैरने वाली पहली महिला बन चुकी थीं। अब, 34 साल की उम्र में, उसका लक्ष्य था कैटालिना द्वीप से कैलिफ़ोर्निया तट तक तैरने वाली पहली महिला बनना । 1952 की उस 4 जुलाई की सुबह, समुद्र बर्फ से नहाया नज़र आता था और कोहरा इतना घना था कि वह शायद ही अपनी रक्षक नावों को देख सके। शार्क उसे अकेली देख उसकी ओर दौड़ पड़ीं, पर केवल बंदूक की गोली से खदेड़ दिए जाने के लिए। समुद्र की ठंडी पकड़ के खिलाफ, वह घंटे दर घंटे संघर्ष करती रही, जबकि लाखों लोग राष्ट्रीय टेलीविजन पर देखते रहे। फ्लोरेंस के साथ, एक नाव में उसकी माँ और उसके प्रशिक्षक प्रोत्साहन की पेशकश करते थे। उन्होंने उससे कहा कि यह ज्यादा दूर नहीं रहा । लेकिन वह केवल कोहरा ही देख सकती थी। उन्होंने उसे हिमत ना हारने का आग्रह किया। तब तक वह नहीं कर पाई थी। तह करने के लिए केवल आधा मील ही रह गया था , उसने बाहर निकले जाने लिए कह दीया। कई घंटे बाद अपने ठंडे शरीर को गर्म करते हुए, उसने एक रिपोर्टर से कहा, "देखो, मैं अपने आप को माफ़ नहीं कर रही हूँ, लेकिन अगर मैं जमीन देख सकी होती, तो शायद मैंने इसे पूरा कर लिया होता ।" यह थकान

या ठंडा पानी नहीं था जिसने उसे हरा दिया। यह कोहरा था। वह अपना लक्ष्य नहीं देख पा रही थी। दो महीने बाद, उसने फिर कोशिश की। इस बार, घने कोहरे के बावजूद, वह अपने विश्वास के साथ तैरती रही और उसका लक्ष्य उसके दिमाग में स्पष्ट रूप से चित्रित हो गया। वह जानती थी कि उस कोहरे के पीछे कहीं जमीन थी और इस बार उसने इसे पूरा कीया ! फ्लोरेंस चैडविक कैटालिना चैनल तैरने वाली पहली महिला बनीं, उसने पुरुषों के रिकॉर्ड को दो घंटे के समय से पीछे छोड़ होने के रूप में तोड़ दिया! अपने लक्ष्य को ध्यान में रखने से बहुत फर्क पड़ता है!

एक लक्ष्य क्या है? खेलों में यह जानना आसान है कि आपका लक्ष्य क्या है - अधिक से अधिक अंक प्राप्त करके जीतना। अक्सर इन अंकों को 'गोल' भी कहा जाता है क्योंकि यही खेल का लक्ष्य होता है। जीवन में, हालांकि, यह जानना इतना आसान नहीं है कि हमारा लक्ष्य क्या है, और ना ही इसे पूरा करना आसान है। लक्ष्य किसी आवश्यकता के प्रति एक क्रिया है। यह कुछ ऐसा है जिसे पूरा किया जा सकता है। यह आपके लिए परमेश्वर की इच्छा का विवरण है। यह भविष्य का उद्देश्य है। लक्ष्य दूरी पर खड़े खम्भे की तरह होते हैं जिन पर किसान जुताई करते समय नज़र रखता है ताकि वह एक सीधी रेखा जोत सके।

लक्ष्य क्यों रखें? यदि आपका कोई लक्ष्य नहीं है तो आप भटक जाएंगे। एक दिन एलिस (एलिस इन वंडरलैंड - लुईस कैरोल की पुस्तक) सड़क पर एक तिराहे पे आई और उसने वहां एक पेड़ में एक चेशायर बिल्ली को देखा। मैं कौन सा रास्ता अपनाऊं? उसने पूछा। आप कहाँ जाना चाहते हैं? उस बिल्ली की प्रतिक्रिया थी। मुझे नहीं पता, ऐलिस ने उत्तर दिया। फिर, बिल्ली ने कहा, कोई बात नहीं। कोई भी सड़क ले लो चलेगा । हमें लक्ष्य प्राप्त करने के लिए लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। यदि हमारे पास कोई लक्ष्य नहीं है, तो हमें कैसे पता चलेगा कि हमने उसपे निशाना मारा है या नहीं? लक्ष्य हमें प्रेरिना देतें हैं। लक्ष्य हमें उद्देश्य और दिशा देते हैं। लक्ष्य हमें ध्यान केंद्रित करने में मदद करते हैं। लक्ष्य हमें यह जानने में मदद करते हैं कि हमारी प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिए। लक्ष्य इसका माप तोल करते हैं कि हम कितना अच्छा कर रहे हैं। जब हम परमेश्वर की प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम अपनी प्राथमिकताओं को उनसे मेल खाने के लिए समायोजित करेंगे।

यीशु के मन में उसकी पृथ्वी पर सारी सेवकाई के दौरान एक लक्ष्य था (लूका 13:32; 2 कुरिन्थियों 5:9; फिलिप्पियों 3:14)।

एक रात, चोरों के एक समूह ने एक गहने की दुकान में सेंध लगाई। लेकिन कुछ भी चोरी करने के बजाय, उन्होंने बस सभी कीमत टैग बदल दिए। अगले दिन कोई नहीं बता सका कि क्या कीमती है और क्या सस्ता। महंगे गहने अचानक सस्ते हो गए थे, और पोशाक के गहने, जो पहले लगभग बेकार थे, अचानक बड़े मूल्य के हो गए थे। जिन ग्राहकों को लगा कि वे मूल्यवान रत्न खरीद रहे हैं, वे नकली हो रहे थे। जो लोग अधिक कीमत का सामान नहीं खरीद सकते थे वे बड़े खजाने के साथ दुकानदरी करके जा रहे थे।

इसे लागु करना : हमारी दुनिया में कोई आया और सभी कीमत टैग बदल गया। क्या मूल्यवान है और क्या नहीं, यह बताना कठिन है। भौतिक धन के जमा किये जाने को और उसके साथ जाने वाली शक्ति को बहुत महत्व दिया जाता है। दुनिया लोकप्रियता, प्रतिष्ठा, सुंदरता और प्रसिद्धि पर एक उच्च कीमत लगाती है। लेकिन यीशु ने सिखाया कि केवल "गहने की दुकान" में ऐसी चीजें लगभग बेकार हैं जो मायने रखती हैं: परमेश्वर का राज्य। "पृथ्वी पर अपने लिये धन इकट्ठा ना करो, जहां कीड़ा और जंग इसे नष्ट करते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां कीड़ा और जंग इसे नष्ट नहीं करते , और जहां चोर सेंध नहीं लगाते और ना चोरी करते हैं " (मत्ती 6:19, 20)।

यीशु हमें ईश्वरीय लक्ष्य निर्धारित करने के लिए दिशा निर्देश देता है: लूका 12:29-31 , आयत 29- और अपना मन इस पर ना लगाना कि तुम क्या खाओगे या पीओगे; इसके बारे में चिंता मत करो। 30- क्योंकि आधर्मी जगत ऐसी सब वस्तुओं के पीछे भागता है, और तेरा पिता जानता है, कि तुझे उनकी आवश्यकता है। 31- परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुएं भी तुम्हें दी जाएंगी।

हर किसी के पास लक्ष्य होते हैं, चाहे उन्हें इसका एहसास हो या ना हो। हर किसी के पास जीवन में कुछ ऐसा होता है जो वह हासिल करना चाहता है। सभी के लक्ष्य होते हैं, लेकिन हर कोई उन पर कार्य नहीं करता है। हम सभी लक्ष्य निर्धारित करते हैं, शायद इसे बिना जाने भी। हम यह जाने बिना कि हम कहाँ जा रहे हैं, छुट्टी पर जाना शुरू नहीं करते हैं, हम क्या उगाना चाहते हैं, यह जाने बिना एक बगीचा नहीं लगाते हैं, या बिल्डर को कोई निर्देश दिए बिना घर नहीं बनाते हैं। हम अपने लक्ष्यों को निर्धारित करने में जितने अधिक इरादतन होंगे, उतनी ही अधिक संभावना है कि हम उन्हें प्राप्त करेंगे। और मसीहिओं के लिए, जब हम इस प्रक्रिया में परमेश्वर को शामिल करते हैं, तो हमें सफलता का आश्वासन दिया जाता है।

जब आप मर जाएँ , तो आप को लोगों द्वारा कैसे याद किया जाना चाहिए ? आप क्या चाहते हैं कि लोग आपके बारे में क्या सोचें, जब वो आप के बारे में सोचते हो ? आप कैसे चाहते हैं कि वे आपकी बात करते करते इसे कैसे समाप्त करें, "वह ________ऐसा था?" जीवन भर के 3 लक्ष्यों को लिखने के लिए कुछ समय निकालें, जिन चीजों को आप जीवन में पूरा करना चाहते हैं और जिन के लिए आप लोगों द्वारा याद किया जाना चाहते हैं ।

ऐसे लक्ष्य निर्धारित करना जो हासिल करने लायक हों

ताजमहल अब तक के बने सबसे खूबसूरत और महंगे मकबरों में से एक है, लेकिन इसकी शुरुआत के बारे में कुछ दिलचस्प है। 1629 में, जब भारतीय शासक शाहजहाँ की पसंदीदा पत्नी की मृत्यु हो गई, तो उसने आदेश दिया कि उसके याद के रूप में एक शानदार मकबरा बनाया जाए। शाहजहाँ ने अपनी पत्नी के ताबूत को जमीन के एक टुकड़े के बीच में रख दिया, और शाब्दिक तौर पर उसके चारों ओर मंदिर का निर्माण शुरू हो गया। लेकिन कई वर्षों के काम में, अपनी पत्नी के लिए शाहजहाँ के दुःख ने परियोजना के लिए एक जुनून को जन्म दिया। एक दिन जब वह उस जगह का सर्वेक्षण कर रहा था, तो उसे कथित तौर पर लकड़ी के एक बक्से से ठोकर लगी , और उसने कुछ मजदूरों द्वारा इसे बाहर फेंकवा दिया। महीनों पहले उसे एहसास हुआ था कि उनकी पत्नी का ताबूत नष्ट कर दिया गया है। स्मारक का मूल उद्देश्य निर्माण के विवरण में खो गया। यह कहानी सच हो या ना हो, पर इसका विषय लोगों के जीवन में एक जानी-मानी बात है। हम में से कितने लोग सपनों के महल बनाने के लिए निकल पड़ते हैं लेकिन रास्ते में अपना ध्यान खो देते हैं? हमें बहुत देर से एहसास होता है कि यह वास्तव में प्रियजन और हमारे बच्चे हैं जो मायने रखते हैं ।

गलत मूल्यों का एक और उत्कृष्ट उदाहरण इस सदी के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक, जे. पॉल गेट्टी के जीवन में घटित हुआ। उसने लिखा: "मुझे कभी ईर्ष्या नहीं हुई; उन लोगों के अलावा जो शादी करने और इसे खुशी से सहने/निभाने की क्षमता रखते हैं। यह एक ऐसी कला है जिसमें मैं कभी महारत हासिल नहीं कर पाया।" जब हम अपने ताजमहल का निर्माण कर रहे होते हैं, तो उस उद्देश्य को ना भूलें जिसके साथ हमने निर्माण शुरू किया था।

हम सही लक्ष्य कैसे निर्धारित कर सकते हैं? परमेश्वर के लक्ष्य परमेश्वर की ओर से आते हैं; इसलिए, हमें उसके साथ समय बिताना चाहिए। यह केवल उसके लक्ष्य हैं जो अंतः सफल होंगे (नीतिवचन 19:21)।

हमारे लिए परमेश्वर के लक्ष्य हमारी मानवीय क्षमता से परे होते हैं और हमें केवल उसकी शक्ति पर निर्भर रहने की आवश्यकता होती है।

अपने लक्ष्यों को कागज पर शब्दों में लिखें। इस तरह आप ठीक-ठीक बता सकते हैं कि आपको क्या लगता है कि परमेश्वर चाहता है कि आप अपने जीवन में पूरा करें। 'अधिक आध्यात्मिक बनने ' 'बेहतर पति बनने,' या 'बाइबल को अधिक पढ़ने' जैसी अस्पष्ट सामान्यताओं का उपयोग ना करें। अधिक आध्यात्मिक बनना या बेहतर पति बनना एक लक्ष्य नहीं है बल्कि उद्देश्य का एक बयान है। एक लक्ष्य यह हो सकता है कि हर सुबह सबसे पहले 15 मिनट प्रार्थना और बाइबल पढ़ने में बिताएँ। एक लक्ष्य यह हो सकता है कि मैं अपनी पत्नी को हर हफ्ते घुमने ले जाऊं और इस बारे में बातचीत शुरू करूं कि मैं उसकी बेहतर सेवा कैसे कर सकता हूं।

एक अच्छा लक्ष्य बनाते हुए याद रखें कि यह मापने योग्य होना चाहिए। इसमें एक समय कारक होना चाहिए और उस समय में क्या पूरा होने की उम्मीद की जाती है इसका विवरण होना चाहिए। "अपनी 20 वीं वर्षगांठ के लिए कैरिबियन की यात्रा करना " और "अगले 7 वर्षों के भीतर एक मसीही स्कूल में विज्ञान का शिक्षक बनना " मापने योग्य और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य हैं। फिर आप जहां हैं वहां से लक्ष्य तक पहुंचने के लिए मध्यवर्ती कदम निर्धारित किए जा सकते हैं।

यही मध्यवर्ती कदम लक्ष्य भी होते हैं - हमारे रास्ते में लक्ष्यों की कम संख्या का होना, हमरे मुख्य लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारे लिए मददगार होते है । लंबी अवधि के लक्ष्य के रूप में कैरिबियन यात्रा करने का मतलब होगा कि हर महीने इतना पैसा बचाने के छोटी -अविधि के लक्ष्य रखना । जैसे जहाजों की लाइनों के बारे में जानकारी एकत्र करना और निर्णय लेना होगा कि किसका उपयोग नौकायन तिथि से एक वर्ष पहले (आपकी 19 वीं वर्षगांठ तक) करना है। इसका मतलब होगा कि एक निश्चित तारीख तक पासपोर्ट तैयार करना आदि।

जबकि लक्ष्य-निर्धारण महत्वपूर्ण है, पर केवल कागज पर लिखे गए शब्दों से कोई फायदा नहीं होता है। । शमूएल 17 में दाऊद और गोलियत की कहानी एक अच्छा उदाहरण है। दाऊद के पास अपने लक्ष्य की स्पष्ट तस्वीर थी - गोलियत को मारना। उसका लक्ष्य शादी के लिए राजा की बेटी को जीतना , आपना नाम कमाना या दूसरों को प्रभावित करना, नहीं था। इस लक्ष्य के लिए दाऊद का एक स्पष्ट उद्देश्य था - परमेश्वर की महिमा करना। उसने ऐसा परमेश्वर की गवाही और प्रतिष्ठा के कारण किया। उसे इस लक्ष्य तक पहुँचने की पूर्ण इच्छा थी और यहाँ तक कि उसके भाइयों की आलोचना या राजा शाऊल की शंका भी उसे इससे दूर नहीं रख सकी।

मानवीय रूप से बोलते हुए असंभव प्रतीत होने के बावजूद, दाऊद को अत्यधिक विश्वास था कि, परमेश्वर की सहायता से, वह अपने परमेश्वर-प्रदत्त लक्ष्य को प्राप्त करेगा (1 शमूएल 17:37, 45-47)। उसके बाद, यदि परमेश्वर की उससे यही इच्छा थी , और परमेश्वर उसके साथ था , तो वह असफल कैसे हो सकता था?

हालाँकि, दाऊद बस इधर-उधर नहीं बैठा। उसने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए काम किया। उसने कार्रवाई का एक तरीका विकसित किया। वह राजा के कवच का उपयोग नहीं करेगा बल्कि इसके बजाय एक गोफन का उपयोग करेगा। उसका लंबी दूरी का लक्ष्य गोलियत को मारना था, लेकिन उसके पास कम दूरी के लक्ष्य भी थे: पथर इकट्ठा करना, अपनी गोफन के साथ अभ्यास करना, आपने आप में ऐसे तैयार रहना जैसे कि हर दिन लड़ाई हो।

दाऊद के लिए यह महत्वपूर्ण था कि वह अपनी दृष्टि अपने लक्ष्य पर रखे और अन्य लोगों द्वारा आपना ध्यान उन लोगो की तरफ ना लगने दे जो उसके मन में शक्क पैदा करते , उसे हतोत्साहित करते , या हस्तक्षेप करते (जैसा कि उसके भाइयों ने करने की कोशिश की थी)। उसने भय, क्रोध, अभिमान, हतोत्साह या संदेह को अपने ध्यान को निशाने से भटकने नहीं दिया। हमें भी, अपनी आँखों को हमारे लिए परमेश्वर के लक्ष्य पर केन्द्रित रखना चाहिए (नीतिवचन 4:25-27)। पौलुस ने ऐसा ही कीया (2 कुरिन्थियों 11:22-28)। अब आप निम्न पृष्ठ पर चार्ट का उपयोग करके अपने लक्ष्यों पर काम करें। पहले प्रार्थना करो, फिर काम पर लग जाओ!

अपने जीवन-काल के लक्ष्यों को लिखें (अंतिम ब्लॉग देखें) फिर कुछ मध्यवर्ती लक्ष्य और यहां तक कि दैनिक लक्ष्य भी निर्धारित करें जो आपको पूरा करने में मदद कर सकें । याद रखें, विशिष्ट बनें। आपका लक्ष्य मापने योग्य और प्रापत होने योग्य होना चाहिए।

परिशिष्ट 2: आध्यात्मिक उपहार

तो, आप को वरदान मिले हुए हैं

तो, आप को वरदान मिले हुए हैं - कम से कम वे आपको यही तो बताते हैं। आप ने आध्यात्मिक वरदानों के बारे में कुछ पढ़ा है और ऐसा लगता है कि आप धारणा की अच्छी समझ रखते हैं , कम से कम जब इनहे दूसरों पर लागू होने की बात करते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, परमेश्वर आध्यात्मिक उपहारों के मूल्यांकन नहीं भेजता है, इसलिए आप थोड़े अनिश्चित हो जाते हैं कि आपके पास कौन से आध्यात्मिक वरदान हैं या कौन से नहीं है । उस के द्वारा दिए गए वरदानो को आप कैसे बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और इनका का अधिकतम लाभ कैसे उठा सकते हैं?

आध्यात्मिक वरदानो के बारे में सीखना एक अच्छा और पहला कदम है। कई बेहतरीन किताबें और वेब साइट हैं जो आन्तरिक और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करती हैं। यह एक अच्छी शुरुआत हो सकती है, लेकिन यह सिर्फ शुरुआत ही है। आपको अपने उपहारों का उपयोग करके अभ्यास करना चाहिए। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने आपको जो भूमिका सौंपी है, उसमें कार्य करना, वह करना जो आप पर बोझ है और उन तरीकों से यथासंभव सर्वोत्तम सेवा करना, जो आपके लिए उपलब्ध हैं। यहां तक कि कोई सबसे कुशल तैराक भी पहली बार पूल में उतरने पर विश्व स्तरीय तैराक नहीं बना ।

दूसरों की प्रतिक्रिया, यह पता लगाने का सबसे अच्छा तरीका होती है कि आपको किस क्षेत्र में वरदान दिया गया है। आपको क्या करने के लिए कहा गया है? लोग आपके पास किस कारण आते हैं? आपको अपने योगदान के बारे में सकारात्मक बलवृद्धि कहां से मिलती है? यह पता लगाने के लिए कि परमेश्वर आपके द्वारा कैसे कार्य कर रहा है, यहअच्छे तरीके हैं । एक आध्यात्मिक वरदान कुछ ऐसा है जिसका उपयोग करने में आपको आनंद आता है (करने की इच्छा / बोझ होता है) और कुछ ऐसा जो आप करने में सक्षम होते हैं - शायद उतना अच्छा नहीं जितना आप चाहते हैं लेकिन निश्चित रूप से औसत मसीही से बेहतर होता है।

परमेश्वर आप में जो कर रहा है उसे सीमित ना करें। परमेश्वर हमें कई प्रकार के आध्यात्मिक वरदान देता है, एक विशेष 'मिश्रण' जो हम में से प्रत्येक के लिए अनूठा है। 3 मूल रंग हैं लेकिन उनसे हजारों संयोजन बनाए जा सकते हैं। ऐसा ही आध्यात्मिक उपहारों के साथ होता है। हम में से प्रत्येक के पास वरदानो का एक अनूठा संयोजन है जो हमारे व्यक्तित्व और आध्यात्मिक विकास के साथ मेल खाता है। यह हम में से प्रत्येक को आपने आप में अनूठा बनाता है। फिर भी, किसी ऐसे व्यक्ति को खोजने की कोशिश करना अच्छा हो सकता है जिसके पास कम से कम कुछ वरदानों का मिश्रण हो जो आप अपने आप में देखते

हैं ताकि वह व्यक्ति आपको सलाह दे सके । अगर यह कोई स्थानीय व्यक्ति है तो आप उसके साथ समय बिता सकते हैं। यदि यह बाइबल, कलीसिया के इतिहास या राष्ट्रीय स्तर का कोई है, तो आप अभी भी उसके जीवन का अध्ययन करके देख सकते हैं कि आप अपने विकास के लिए क्या सीख सकते हैं। याद रखें कि परमेश्वर आपको वरदान देगा, लेकिन वह आपको खींचेगा भी (जैसे दनुष की तार को खींचना)। मेरा प्राथमिक आध्यात्मिक वरदान शिक्षण है, लेकिन मैं लोगों के समूहों से बात करने में हमेशा शर्मीला और असहज महसूस करता रहा हूं। परमेश्वर ने कोई गलती नहीं की, वह मुझे वैसे ही खींच रहा है जैसे वह आपको खींचता है। फिर भी, इसमें जो सबसे अच्छी सलाह मैं आपको दे सकता हूं, कि आप अपने वरदान को कैसे विकसित करें, वो है; आप इसका उपयोग करें। अपनी सेवकाई में इस पर ध्यान दें। परमेश्वर की महिमा के लिए इसका उपयोग करने के अवसरों के प्रति सचेत रहें। याद रखें कि यह उसकी महिमा के लिए उसका दीया हुआ वरदान है। हम इसका इस्तेमाल उसके लिए करते हैं, अपने लिए नहीं।

पढ़ें: 1 पतरस 4:10; इफिसियों 4:11-13; 1 कुरिन्थियों 12

यदि आप अपने वरदानों के मिश्रण का वर्णन करतें है , तो आप क्या कहेंगे कि आपके पास कौन से आध्यात्मिक वरदान हैं? उनके बीच का संतुलन क्या है (मुख्य उपहार कौन से है, अन्य उपहारों का पूरक कौन सा है, आदि)? आपके द्वारा लिखी गई सूची के बारे में आपका साथी या करीबी दोस्त क्या कहेंगे? परमेश्वर ने आपको जो वरदान दिए हैं, उन्हें और विकसित करने के लिए आप क्या कर सकते हैं? क्या कोई तरीका है जिससे आप अपने वरदानो का उपयोग करने से पीछे हट रहे हैं, क्या किसी तरह से आप उस तरीके का विरोध तो नहीं कर रहे हैं जिस तरीके से परमेश्वर आपके वरदान का उपयोग करके आपको खींच रहा है? अब परमेश्वर से क्षमा याचना करें और अपने आप को उसके लिए पूरी तरह से पेश करें ।

यदि आपको लगता है कि आपके पास शिक्षण का वरदान है...

अच्छा! कम से कम मुझे लगता है कि यह ज्यादातर अच्छा है। चरवाहे अपनी भेड़ों को चराने के लिए ज़िम्मेदार होते हैं, और परमेश्वर बहुतों को यह करने की क्षमता शिक्षण के द्वारा देता है। इसलिए शिक्षक होना अच्छा है। 'कड़वा' हिस्सा यह है कि जो कुछ हम सीखते हैं और दूसरों को देते हैं, उसके लिए परमेश्वर हमें जवाबदेह ठहराता है (याकूब 3:1)। विशेषाधिकार के साथ-साथ इसका उपयोग करने की जिम्मेदारी भी है और हमारे अपने जीवन में उसके सत्य को लागू करने की जवाबदेही भी है।

आपको कैसे पता चलेगा कि आपके पास शिक्षण का वरदान है? जब आप दूसरों को बाइबल की सच्चाई बताते हैं, तो क्या वे समझ पाते हैं कि आप क्या कह रहे हैं? क्या आपको बाइबल के विचारों को दूसरों के लिए समझने योग्य बनाने में आनंद आता है? क्या बोलते समय आप जिस बारे में बात कर रहे होते हैं उसकी कहानियाँ, दृष्टांत या उदाहरण दिमाग में आते हैं? क्या आपमें बाइबल को बेहतर तरीके से सीखने और दूसरों को भी इसे सीखने में मदद करने की इच्छा है? क्या लोगों ने कभी प्रतिक्रिया की है कि आपने उन्हें बाइबल को बेहतर ढंग से समझने में उनकी मदद की है? यदि ऐसा हुआ है तो इसका मतलब शिक्षण आपके आध्यात्मिक वरदानों के मिश्रण का हिस्सा है।

शिक्षण का वरदान वह विशेष योग्यता है जो परमेश्वर मसीह की देह के कुछ सदस्यों को देता है ताकि सुनने वालों के स्वास्थ्य और सेवकाई से संबंधित जानकारी को इस तरह से संप्रेषित करें जिस से वे सीखेंगे और आपने आप में प्रोहसित होंगे।

भेड़ों को चराना एक अद्‌भुत विशेषाधिकार है। जिस तरह एक किसान को फसलों का लाभ सबसे पहले मिलता है, उसी तरह हम जो शिक्षा देते हैं, उस जानकारी से सबसे ज्यादा फायदा प्राप्त करते है जो

परमेश्वर हमारे माध्यम से दूसरों को दे रहा होता है। परमेश्वर के वरदान का श्रेय ना लें, अभिमान को आपने रह में ना आने दें। हमेशा यीशु पर ध्यान केन्द्रित करें, ना कि स्वयं पर या अपने वरदान पर। यूहन्ना ने जैसे कहा,उसी तरह कहो "वह बड़े और मैं घटूं।" हम दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं ताकि हम अपने राज्य का निर्माण कर सकें, बाकि हम दूसरों को खिलाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि वे बढ़ सकें और परमेश्वर के राज्य को बढ़ा सकें। उन लोगों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें जिन्होंने आपको खिलाया, और उस से कहें कि वे आपको उन लोगों को खिलाने के लिए आप का उपयोग करें जिनको वह आपके जीवन में लाता है।

पढ़ें: इफिसियों 4:11; यूहन्ना 21:15-17; 1 कुरिन्थियों 12:28

क्या आपको लगता है कि परमेश्वर ने आपको आपके आध्यात्मिक वरदानों में मिश्रण के हिस्से में शिक्षण का वरदान भी दिया है? आप अपने वरदान को विकसित करने के लिए क्या कर रहे हैं? (अध्यापन के बारे में पढ़ना, शिक्षण या बोलना कक्षाएं लेना, कार्यशालाओं में भाग लेना, शिक्षण के उपहार के साथ किसी से सीखना, आदि) क्या आप अपने शिक्षण में कड़ी मेहनत करते हैं, मूल शोध करते हैं और अच्छी पाठ योजनाएं विकसित करते हैं? या क्या आप अपने सबक को रोचक बनाने के लिए इसे पंख लगाते हैं और अपने वरदान के अंतर पर टिका देते हैं? क्या आप किसी भी तरह से ध्यान आकर्षित करने या स्वयं पर ध्यान केंद्रित कराने के लिए अपने वरदान का उपयोग करके परमेश्वर की महिमा चुराते हैं? यदि ऐसा है, तो इसे स्वीकार करें और अपने आप को परमेश्वर के सामने नम्र करें।

क्या दूसरों के साथ काम करने के लिए आपके पास नेतृत्व का वरदान होना चाहिए?

कई अन्य पादरियों की तरह, मैंने सबसे पहले एक युवा पादरी के रूप में सेवकाई में अपने दांत पीसे। जबकि परमेश्वर ने मुझे आपने अनुग्रह से कई तरह के वरदान दीये थे , नेतृत्व और लोगों के कौशल उनमें से नहीं हैं। मैं एक अच्छा प्रेरक नहीं हूं, ना ही मैं आसानी से लोगों को अपनी ओर और अपने उद्देश्य की ओर आकर्षित करता हूं। इसने मेरे लिए, जहाँ मैं काम करता था उस कलीसिया में, युवाओं का नेतृत्व करना कठिन बना दिया। मैंने गंभीर लोगों को आकर्षित किया और उन्हें शिष्य बनाया, लेकिन मैं उनसे ईर्ष्या करता था जो सभी बच्चों के साथ गुल-मिल हो जाते थे और उनकी प्रशंसा और वफादारी को अपनी ओर आकर्षित कर सकते थे। शायद आप समझ गए होंगे कि मुझे कैसा लगता होगा ।

क्या नेतृत्व आपके आध्यात्मिक वरदानों के मिश्रण का हिस्सा है? क्या आप मसीह के कार्य के लिए दूसरों को प्रेरित करने और उनकी अगुवाई करने में आनंद लेते हैं? क्या आप जल्दी समझ जाते हैं जब किसी समूह को दिशा की आवश्यकता होती है और फिर वह कदम बढ़ाने और उसके बारे में कुछ करने में सक्षम होते है? क्या दूसरे लोग आपको नेतृत्व और मार्गदर्शन के लिए आप को ढूँढ़ते हैं? क्या आप दूसरों को उन लक्ष्यों के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करने में सक्षम हैं जो आपको महत्वपूर्ण लगते हैं? क्या आप भविष्य की उपलब्धियों के बारे में सोचते हैं और यह कि उन्हें कैसे प्राप्त कीया जाए? यदि हां, तो आपके पास नेतृत्व का वरदान हैं।

नेतृत्व का उपहार वह विशेष क्षमता है जो परमेश्वर मसीह की देह के कुछ सदस्यों को भविष्य में परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करने और उन लक्ष्यों को दूसरों तक पहुंचाने के लिए देता है ताकि वे स्वेच्छा से और एकजुट हो कर, परमेश्वर की महिमा के लिए, उन्हें पूरा करने के लिए काम करें। अक्सर एक प्रशासनिक /संगठन के पास यह वरदान होता है ताकि एक अगुवा अपनी योजनाओं में आगे बढ़ने में बेहतर बन सके। हालाँकि, जैसा कि परमेश्वर किसी भी विशेषाधिकार के साथ देता है, उसके लिए

इसका भी उपयोग करने की जिम्मेदारी और एक जवाबदेही बनती है। 1 तीमुथियुस 3 में उन विशेषताओं की सूची है जो एक अगुवे के पास होनी चाहिए: बिना किसी दोष के, शांत सुभावि, आत्म-नियंत्रित, व्यवस्थित, अजनबियों का स्वागत करने वाला, सौम्य और शांतिपूर्ण, लालची ना हो, अपने परिवार और बच्चों का प्रबंधन करने में सक्षम, विश्वास में परिपक्व और दूसरों द्वारा सम्मानित कीया जाने वाला हो । इस वरदान का प्रयोग हमेशा यीशु मसीह की प्रभुत्व के अधीन ही किया जाना चाहिए। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि वे उसकी भेड़ें हैं, हमारी नहीं। हम तो केवल वह चरवाहे जो उसके अधीन हैं। लेकिन क्या परमेश्वर की अगुवाई वाली टीम में होना एक बड़े सौभाग्य की बात नहीं है?

पढ़ें: रोमियों 12:8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; यूहन्ना 21:16

आपका ध्यान यीशु पर केंद्रित रखने और अपने अहंकार की ज़रूरतों को सतह पर ना आने देने की आपकी क्या योजना है? आप अपनी नेतृत्व क्षमता का उपयोग अपने स्वयं के गौरव को पोषित करने से कैसे रोक सकते हैं? एक अगुवा के रूप में आपका आदर्श कौन है? जीवन में, बाइबल में, या इतिहास में किसी ऐसे व्यक्ति को खोजें, जिसकी आप एक अगुवा के रूप में प्रशंसा करते हैं और उसके जीवन का अध्ययन करते हैं। अपनी नेतृत्व क्षमता को अधिक विकसित करने के लिए आप क्या कर रहे हैं? कई बेहतरीन किताबें, वेब साइट और सेमिनार उपलब्ध हैं। हम अपनी क्षमताओं को विकसित करने के लिए जिम्मेदार हैं, ना कि उनको सीमत करने के लिए । परमेश्वर से आपको यह दिखाने के लिए कहें कि आप उन लोगों के लिए एक बेहतर अगुवा कैसे बन सकते हैं जो आपका अनुसरण करते हैं। कुछ क्षण शांत बैठें और सुनें कि वे आपसे क्या कहते है।

फिर क्या; अगर मुझे बिली ग्राहम की तरह वरदान नहीं दिए गए है?

प्रत्येक व्यक्ति को यीशु की खुशखबरी को उन लोगों के साथ साझा करने की आवश्यकता है जिनके साथ वे संपर्क में आता हैं, लेकिन कुछ इस काम में दूसरों की तुलना में अधिक बेहतर दिखते हैं। ये कुछ ऐसे हैं जो आराम से, सकारात्मक, प्रेरित होते हैं और इसे साझा करने के प्रत्येक अवसर का आनंद लेते हैं। कौन से चीज उन्हें बाकि हम सब लोगों से अलग बनाती है? परमेश्वर ने सुसमाचार प्रचार को उनके आत्मिक वरदानों के मिश्रण का एक भाग के रूप में शामिल किया है।

क्या आप लोगों से यीशु के बारे में बात करना पसंद करते हैं, विशेष रूप से वे जो उसे नहीं जानते हैं? क्या आप सुसमाचार को इस तरह से बाँटने में सक्षम हैं जो दूसरों के लिए स्पष्ट और समझने योग्य हो? क्या आप उद्धार की योजना को साझा करने के अवसरों की तलाश करते हैं? क्या परमेश्वर ने आपका उपयोग अविश्वासियों को उद्धार की ओर लाने में मदद करने के लिए कीया है? क्या आप बड़े उत्साह और जोश के साथ सुसमाचार को साझा करने के समय के साथ आगे आते हैं? यदि आप ऐसा करते हैं, तो सुसमाचार प्रचार आपके आत्मिक उपहार मिश्रण का हिस्सा है।

सुसमाचार प्रचार का वरदान वह विशेष क्षमता है जो परमेश्वर विश्वासियों को देता है कि वह अविश्वासियों को एक स्पष्ट और सार्थक तरीके से सुसमाचार प्रस्तुत करें, जो प्रतिक्रिया की मांग करता है। याद रखें यह प्यार में कीया जाना चाहिए। यदि आप उस व्यक्ति के लिए प्यार महसूस नहीं करते हैं, बल्कि एक और 'हत्या' करने के लिए अपने आध्यात्मिक बंदूक के हथ्थे पर रख कर एक और कदम की तलाश कर रहे हैं, तो आप वास्तव में यीशु का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे हैं। गवाही देना कोई खेल या चुनौती नहीं है कि कौन 'जीतता है'। सबसे अच्छा तरीका मैंने इसे यह कहते हुए सुना है कि यह एक भिखारी है जो दूसरे भिखारी को दिखा रहा हो कि रोटी कहाँ मिलती है। कुछ इस काम में दूसरों की तुलना में बेहतर हैं क्योंकि उनको परमेश्वर द्वारा यह वरदान में दीया गया होता है।

फिर क्या, यदि आपके पास यह वरदान नहीं है? क्या आप अब भी युवाओं और अन्य लोगों के साथ सेवकाई कर सकते हैं? बेशक! यदि परमेश्वर ने आपको यह वरदान नहीं दिया था, तो इसका मतलब कि वह नहीं चाहता कि आप इसे प्राप्त करते ! कोई भी वरदान किसी अन्य वरदान से बेहतर नहीं होता है। हम उन लोगों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं जिनके पास सुसमाचार प्रचार का वरदान है क्योंकि वे आध्यात्मिक दाईए (जो एक माँ को जन्म देने में मदद करती है) हैं जो कलीसिया में नया जीवन लाते हैं। लेकिन हमें इन नए लोगों को बढ़ने में मदद करने के लिए बाल रोग विशेषज्ञ (बच्चो का डाक्टर), पारिवारिक डॉक्टर आदि की भी आवश्यकता होती है। यदि सुसमाचार प्रचार आपका वरदान नहीं है, तो अपने आप को बेकार महसूस ना करें। फिर भी, हम दूसरों के साथ सुसमाचार साझा करने के लिए जिम्मेदार हैं। मुझे लगता है कि ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि जैसा परमेश्वर हमें कहता है हम वैसा ही बने -यानि एक गवाह । कोई गवाह किसी बात पर बहस नहीं करता है, वह सिर्फ वही बताता है जो वह जानता है। वह व्यक्तिगत अनुभव साझा करता है। जब मुझे पता चलता है कि परमेश्वर मुझसे यही चाहता है तो मुझे लगता है कि लोगों को सच्चाई में बहस करने की कोशिश करने वाले वकील की तरह नाटक करने से यह कहीं ज्यादा आसान है। जो कुछ यीशु ने मेरे लिए किया है उसे मैं साझा करता हूँ और परमेश्वर उसका शक्तिशाली तरीकों से उपयोग करता है। आखिरकार, वह वादा करता है कि वह अपनी महिमा के लिए अपने वचन का उपयोग करेगा।

पढ़िए इफिसियों 4:7, 11; मत्ती 28:18-20

क्या आपके पास अपने आत्मिक वरदानों के मिश्रण के भाग के रूप में सुसमाचार प्रचार है? यदि हां, तो आप इसे विकसित करने के लिए क्या कर रहे हैं? (क्या आप सेमिनार या सम्मेलनों में भाग लेते हैं, जब भी आप कर ऐसा सकते हैं इसका उपयोग करने का अभ्यास करते हैं, अतीत के महान आत्मा विजेताओं के बारे में पढ़ते हैं, एक वर्तमान उस्ताद ढूंढते हैं जो आपकी मदद कर सकता है, आदि) यदि आपके पास सुसमाचार प्रचार का वरदान नहीं है, तो क्या आप जितनी बार भी आप कर सकते हैं सुसमाचार को साझा ना करने के लिए इसका बहाने के रूप में उपयोग करते रहना है? यदि आप इससे जूझते हैं, तो अपनी गवाही (अपना अनुभव) लिख लें ताकि आप इसे 2 से 3 मिनट में कह सकें। परमेश्वर इसे इसी रूप में ही आपने लिए कबूल कर लेगा । उन कई लोगों के नाम लिखिए जिनसे आपने पिछले वर्ष यीशु के बारे में बात की है। उनके लिए अभी प्रार्थना करें और प्रार्थना करते समय उन्हें याद करते रहें। यदि आपके पास वरदान है या नहीं, तो परमेश्वर से इस दिन आपको उसके लिए बोलने का अवसर देने के लिए कहें। फिर उस समय के प्रति सतर्क रहें।

क्या आपके पास एक चरवाहे का दिल है?

एक पादरी के लिए मेरे पसंदीदा नामों में से एक है 'चरवाहा'। यह शब्द उन लोगों के लिए कोमल, प्रेमपूर्ण देखभाल, जिम्मेदारी और निरीक्षण की बात करता है जो इसके बिना समृद्ध नहीं होंगे। एक चरवाहा एक देखभाल करने वाले दिल का व्यक्ति होता है, जिसके पास अन्य लोग होते हैं, जिनकी वह देखरेख करता है और जिनका वह आध्यात्मिक रूप से निर्माण करता है। यह एक पादरी, युवा कार्यकर्ता, बच्चों का सहायक, माता या पिता हो भी सकता है।

क्या आप अपने आसपास के लोगों की आध्यात्मिक ज़रूरतों के बारे में चिंतित हैं? क्या आप उन्हें प्रभु में बढ़ते हुए देखने की चाहत रखते हैं? क्या आपके पास उनकी मदद करने, उन्हें प्रोत्साहित करने, उनके साथ आनन्दित होने, उनसे प्यार करने और किसी भी तरह से उनकी सहायता करने का बोझ और इच्छा है? जिन लोगों की आप सेवा कर रहे हैं, क्या उनके लिए चिंतत होकर आप अपने आप का त्याग कर देते

हैं? एक चरवाहे को अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन देने की हद तक अपनी भेड़ों से प्यार करना चाहिए, और युवा पादरी हर दिन अपनी किशोर भेड़ों के लिए अपना जीवन देते हैं।

एक पादरी या चरवाहे का उपहार वह विशेष क्षमता है जो परमेश्वर मसीह की देह के कुछ सदस्यों को विश्वासियों के एक समूह के आध्यात्मिक कल्याण के लिए एक लम्बी अविधि की व्यक्तिगत जिम्मेदारी के तौर पर देता है। तो हाँ, युवा पादरी निश्चित रूप से पादरी हैं। जिस यूनानी शब्द का अनुवाद 'पादरी' किया गया है, उसका अर्थ है भेड़ों की देखभाल करना, उनकी रक्षा करना और उनकी अगुवाई करना। यीशु स्वयं को "अच्छा चरवाहा" कहता है। चूँकि वह शारीरिक रूप से पृथ्वी पर नहीं है, इसलिए वह हम में से कुछ को अपनी भेड़ों की देखभाल में मदद करने के लिए सहायक चरवाहों के रूप में बुलाता है। यह एक बहुत बड़ा विशेषाधिकार और एक अद्‍भुत बुलाहट है। इस से बड़ कर ओर कुछ भी नहीं है। लेकिन इसमें जिम्मेदारी और जवाबदेही भी शामिल है। आखिर वे उसकी भेड़ें हैं, हमारी नहीं। वह उनका मालिक है, हम नहीं। वही विकास लाता है, हम केवल एक माध्यम हैं जिसका वह कभी-कभी उपयोग करता है। जब वे आनन्दित होते हैं, तो हम आनन्दित होते हैं। लेकिन जब वे भटक जाते हैं या दर्द में होते हैं, तो हम उनके साथ और उनके लिए दर्द सहते हैं। इस तरह हम मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं और बहुत ही वास्तविक तरीके से यह दिखाते हैं कि यीशु कैसा है। जिनकी हम चरवाही करते हैं, उन्हें हमारे अंदर उस महान चरवाहे की एक झलक दिखाई देनी चाहिए। यह क्या ही अद्‍भुत विशेषाधिकार और बड़ी चुनौती भी है !

पढ़ें: इफिसियों 4:11; 1 पतरस 5:2-3; 1 तीमुथियुस 4:12-15

अपने जीवन में पादरी (चरवाहा) के वरदान की पहचान करने के लिए कुछ समय निकालें। अपने आसपास के लोगों के लिए अपने विचार और बोझ लिखें। आप एक बेहतर चरवाहा बनने के लिए क्या कर सकते हैं, प्रभु यीशु मसीह की तरह बनने के लिए आप अपनी भेड़ों की देखभाल कैसे करते हैं? हर भेड़ को एक चरवाहा चाहिए। आपका चरवाहा कौन है? आप किसकी ओर अपनी नज़रें लगते हैं और किसके पास जाते हैं? यदि आप अपने स्वयं के चरवाहे के बिना काम करने की कोशिश कर रहे हैं, तो आप उस भेड़ की तरह हैं जो अपने बल पर जीने की कोशिश कर रही है। यह जयादा लंबे समय तक नहीं चलता। परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए कुछ समय बिताएं कि उसने आपको अपनी कुछ भेड़ों का चरवाहा होने का अद्‍भुत विशेषाधिकार दिया है!

हम अपने वरदानों के उपयोग से अपना मूल्यांकन नहीं कर सकते हैं

मैं सेवकाई के जीवन में सीखे गए कुछ पाठों को साझा कर रहा हूं: परमेश्वर को मेरी आवश्यकता नहीं , लेकिन मुझे उसकी आवश्यकता है, जितना अधिक मैं आगे बढ़ता हूं मैं महसूस करता हूँ कि उतना ही दूर हूं और परमेश्वर के साथ घनिष्ठता अभी भी मेरा नंबर एक लक्ष्य बना हुआ है। एक और महत्वपूर्ण सच्चाई जो मैंने सीखी है वह यह है कि एक व्यक्ति के रूप में मुझे अपनी योग्यता या विकास का मूल्यांकन, परमेश्वर द्वारा मुझे दिए गए वरदानों का उपयोग करने की सिर्फ मेरी क्षमता के द्वारा ही नहीं करना है। मेरे आध्यात्मिक वरदान खासकर शिक्षण/प्रचार और परामर्श हैं। जैसा कि मैंने चार दशकों तक उनका अभ्यास किया है, मैं देख सकता हूं कि इन क्षेत्रों में विकास और सुधार हुआ है। मेरी पत्नी कहती है कि मैं अब सेवकाई की दौड़ में ऊँचे स्तर पर हूं। मुझे होना चाहिए, क्योंकि मैंने इन कौशलों का सम्मान करते हुए वर्षों भर में हजारों घंटे बिताए हैं। पीछे मुड़कर देखना और इन क्षेत्रों में किए गए सुधार और प्राप्त योग्यता को देखना अच्छा लगता है।

मैं इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, क्योंकि यह उसका अनुग्रह और उसकी आत्मा है जिसने ये सब कीया है। हालाँकि मुझे इस बात का कोई भ्रम नहीं है कि मैं इसे अपने दम पर कर सकता था। मुझे पता है कि, अगर वह अपनी आत्मा और अपनी मदद को मुझसे हटा लेता तो यह 'कौशल' किस रूप में दिखते। अपने दम पर मैं इन क्षेत्रों में वास्तविक रूप से एक असफल व्यक्ति होता। इसका श्रेय उसी को जाता है।

मेरे लिए उस सच्चाई को महसूस करना महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर मैं ऐसा नहीं करता तो मैं यह सोचना शुरू कर देता हूं कि मैं जो करता हूं उसके कारण मैं एक व्यक्ति के रूप में बहुत ही अच्छा हूं। हमारे लिए, विशेष रूप से पुरुषों के लिए, हम कौन हैं, इसके बजाय हम जो करते हैं, उसके आधार पर खुद का मूल्यांकन करना आसान है। हालांकि, एक व्यक्ति के रूप में मैं जो हूं, वह परमेश्वर द्वारा मुझे दिए गए वरदानों का उपयोग करने में मैंने जो सीखा है, उससे पूरी तरह अलग है। मैं जो कुछ भी पैदा करता हूं उससे मुझे परिभाषित नहीं किया जाता है, लेकिन उस से जो मैं अंदर से हूं, इससे अलग होकर कि मैं अपनी सेवकाई के कर्तव्यों को कैसे पूरा करता हूं । क्या इसका कोई मतलब बनता है? क्या तुम यहाँ मेरा पीछा कर रहे हो? मुझे आशा है कि आप कर रहे हैं क्योंकि मेरा मानना है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है।

जब परमेश्वर मेरी ओर देखता है तो वह मेरे अंतिम उपदेश या परामर्श सत्र से प्रभावित नहीं होता है। वह मेरे दिल को देखता है, मेरी हकीकत को। यहूदा सेवकाई में इतना कुशल था कि उस पर पैसों की थैली का भरोसा कीया गया था। किसी को यहूदा पर शक नहीं हुआ जब यीशु ने कहा कि कोई उसे धोखा देगा। यहूदा शायद सबसे प्रतिभाशाली और मिलनसार शिष्यों में से एक था। वह बहुत अच्छा काम कर सकता था। लेकिन इनमें से कोई भी मायने नहीं रखता था, कि रखता था?

मुझे सिखाना, उपदेश देना और परामर्श देना अच्छा लगता है। मुझे इन कामों को करने और उन्हें अच्छी तरह से करने की बड़ी इच्छा है। जब भी ऐसा होता है तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। हालाँकि शायद ही कोई रविवार ऐसा होता है, जब प्राथना सभा के बाद दरवाजे पर खड़े होकर लोगों को संदेश पर टिप्पणी देते सुनता हूँ , मुझे हॉवर्ड हेंड्रिक के उस घटना के वर्णन को "कीड़े की महिमा" के रूप में याद आती है। इससे मुझे यह याद रखने में मदद मिलती है कि श्रेय वास्तव में किसे मिलना चाहिए है। मैं उसका श्रेय नहीं लेना चाहता जो वह करता है, नहीं तो यह उसकी महिमा की चोरी करना सा होगा।

मैं आपने आप को या परमेश्वर को या दूसरों को प्रभावित करने के लिए परमेश्वर के उपहारों का उपयोग नहीं करना चाहता। उसने जो मुझे दिया है और जो वह मेरे माध्यम से करता है मैं उसका आनंद ले सकता हूं लेकिन मैं इसका श्रेय नहीं ले सकता और मैं खुद को एक इंसान के रूप में मूल्यांकन नहीं कर सकता कि मैं कितना अच्छा प्रदर्शन कर सकता हूं।

और आप भी नहीं कर सकते। इसलिए यदि आप, परमेश्वर द्वारा आपको दिए गए वरदानों और प्रतिभाओं का उपयोग करने में, अधिक प्रभावी और कुशल हो रहे हैं - बहुत बढ़िया! लेकिन इसका श्रेय मत लें। अपने मूल्य या अपने आध्यात्मिक विकास का मूल्यांकन करने के लिए इसका उपयोग ना करें। परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह आपका उपयोग करता है और उन चीजों को आपके माध्यम से करता है, लेकिन इनका श्रेय मत लें। यह वो काम हैं जो आप करते हैं (पर परमेश्वर की कृपा से), अब आप कौन हैं!

पढ़ें: 1 कुरिन्थियों 15:10; रोमियों 15:17

आप अपने आत्मिक वरदानों के सफल प्रयोग पर कितना जोर देते हैं? क्या आप उन पर गर्व करने के प्रलोबन में पड़ते हैं? यदि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह और शक्ति को आपके जीवन से हटा दिया होता, तो क्या आलम होता ? आप अपने आध्यात्मिक विकास को कैसे मापते हैं? परमेश्वर इसे कैसे मापता हैं?

SP-15.02.2022